

परन्तु आदर है कि वा हर के
कर्म से हृदय पवित्र
ही होने का ।

कि तने आदमी यह समझते हैं कि
करने से पवित्र हो सकते हैं । कि
है कि गास जी न्नाज न करे
आदमी यह समझते
कि तने आदमी यह सम
न आधर्म्य हरण करे
यह समझते हैं कि

३२० आदमी यह समझते हैं कि अ
परन्तु असली पवित्रता
। यद्यपि इन सब विषय
परन्तु हृदय की स
। सर्वप्रथम कि मानने
से उसका

करणा प

इसके सिव

लया लया धन का मोह ध

३२१ दती जाती है और मान

वाद आगे जाकर उन के अ

दय हरिजन बाहरी आ

रस्व यं से सा को हों ग न ह

व क मे में न ही आते। मान

हीं करते। से से शुद्ध हृदय

ना पडता। अपने हृदय से ही

इस से सेवा हरि जी को ब हुत

य हरि जनो में से सा बल होने का

म में जीते हैं। इस से ने से जीती म दालि

इन हीं जाती वें से वें साधारण लोग की विचार

न ही जाते। क्यों कि उन में प्रभु प्रेम का नया

३०

इसके बिना जो बिना शुद्ध हृदय के मनुष्य हैं वे

के होते हैं। इस से ने मरी म दालि जो के समान हैं

इसके बिना जो विना शुद्ध हृदय के मनुष्य हैं वे विना प्रभु जन्म
के होते हैं। इससे वे नरी मद्यति जो के समान हैं। वे दूसरे अज्ञा
नियों के बिना ऐसी वाठ में बज जाते हैं। कहने को भक्त और
विभक्त में यह फर्क है। इसलिये याद रखना कि जिन भक्तों का
अन्तःकरण पवित्र होगया है वे व्यवहारियों के बीच में रह
कर भी उनसे अलग हैं और उनसे भेद है।

हृदय की पवित्रता की पहचान।

जिन भक्तों का हृदय पवित्र है वे सदा आ
सुखः दुःख आदि अच्छे बुरे प्रसङ्गों को
पवित्रता छोड़ना नहीं चाहते। मतलब यह
को मरना चाहता है परन्तु पापन ही नहीं
सी स्थिति होती है और सी स्थिति
हृदय से पवित्र कहते हैं।

करधम

लेना चाहिये। वा

ही है सही विचारा

२२३ तुम ही हो। सही विचारा

सकती है और अपनी स्थिति

निकट रह सकते हैं। स्थिति के वा

ने से उल्टे प्रभु से विमुख हो जाते हैं।

जिस वाक्की प्राप्ति सनदी में बहुत से

में कोट आदमी बैठे तो वह सेवारत बनेगा। सनदी में

ही शाब्दिक रहिलाना है उन्मा ही उस में से सता जाता है।

मी वे से ही पवित्रता लेने के लिये जो आदमि उल्टा बल्य उपा

य करता है और सुगम पुरुषार्थ दिखता है वह पवित्रता

पाने के बदले अपने पास की पवित्रता भी खो देता है।



ASHA ARCHIVES

पति ने कहा कि इस में मेरी क्या जरूरत थी १ तुझे पसन्द है इस
मे क्या तू किसी का गहना जवरदस्ती रख लेगी १ ने रे स जान चतुर
और गुणा गरीबों इतना भी नहीं समझती १ तूने वडी भारी शूल
की है और व्यर्थ झगडा किया है। तूझे तो तुरंत गहना लो देना चा
हता था। जवरदस्ती रख लेने का तूझे कुछ हक नहीं है।

३६४ यह सुन कर उस स्त्री ने अपने पति से कहा कि जिसकी मिल-कि
यत हो उसे वापस देना चाहिये और उस के लिये अफसोस न कर
ना चाहिये। यह सच बात है १ पति ने कहा इस मे क्या शक १ आज
तूसे सावित्री नाम वाल क्यो पूछती है १ जिस बात को एक छोटा
सा बच्चा भी समझता है उसमे तूझे शक क्यो होता है १ स्त्री ने कहा
कि प्यारे। तूमजे सा कहते हो वैसा ही करना देखो। प्रभु ने हमे जो था
नी दी थी वह वापस ले लो है। इस लिये मैं मर मानना। यह कह
कर उसने लडके की लाश पर से कपडा उठा लिया और पति को मुर्दा
दिराया। देख कर पति को बडा अफसोस हुआ परन्तु स्त्री की प
हले से समझा हुआ बात से उसने बहुत कुछ समझ ही मचाया। अग
र पहले से न समझा मचाया होता तो वह आदमी बहुत गडबड मचा
वा और हाय हाय किया करता।

बहुत और धर्मवती स्त्रियो अपने पति तथा मां बाप और भा
इयो को इसी तरह मोहमाया से बचालेती है।
जिसमे धर्म का बल आजाता है वह आदमी इस समझ जाता
है कि जीव प्रभु का भ्रम हुआ है और प्रभु न बचा है तब उसे वापस ल
ला ले सकता है। इसमे हमारा कुछ जोर नहीं चल सकता। इसके सि
वा हरिजननों को यह भी विश्वास होता है कि आत्मा अमर है व हुनहीं
मरती। इस लिये देह बदलने से कुछ बहुत नुकसान नहीं होता
बल्कि और उंची दशा में जा सकते हैं। पुराने कपडे के बदले नया
कपडा पहनेन को मिलता है या पुराने घर के बदले नया घर रहने
को मिलता है। इसके सिवा हरिजन यह भी मानते हैं कि इस दुनि
या में अच्छा काम किया हो तो स्वर्ग लोक में अधिक सुख मिलता

३६५ ता है। ऐसी समझ होने से हरिजनो को मोत का बहुत भय न ही होता। इससे वे मरने के समये भी कहें त रह से शांति रखते हैं, माया में फंसे हुए संसारी जीवों की तरह हाय हाय न ही करते। परन्तु याद रखना कि जब हृदय में भगवान का प्रेम आता है और जब धर्म का तथा ज्ञान का बल जम जाता है तभी ऐसी मो के पर दु ठता र खी जा सकती है। इसलिये प्रभु प्रेम तथा सत्य धर्म का ज्ञान पाने की कोशिश की जिय तब ऐसे दुःख के मो के पर भी धीर जर ख सकेंगे। इस किस्म का धीर जर खने की बहुत जरूरत है। क्योंकि अपनी ईच्छा न होने पर भी समय समय पर सगे सम्बन्धियों में मृत्यु हुआ करती है। हम धर्म का बल प्राप्त कर माति से रहना सीखना चाहिये।

११५ - हम सबको कैसे धर्म गुरु की जरूरत है ?

एक बड़ा राजा था। वह जब गद्दी पर बैठा तो उसने पहला काम यह किया कि अपने गुरु को बुलाया और उस की गुरुआ ई दी गली। उसे जो वस्त्रासन मिलता था वह बदकर दिया, उसे छतरी मशाल, पालकी आदि की जो है न तभी वह दी गली और उसे अपमानित करके निकाल दिया, इससे गुरु गरीब हो गया। इसके कुछ दिन बाद वह गुरु राजा के दरबार में गया। राजा ने उस से कहा कि तेरा यह हां कुछ काम नहीं है तू अपना मुँह मत दिखवा। यह सुनकर प्रधान मंत्री ने बड़े अदब और भ्रम तब से कहा कि गरीब परवर। इस आदमी के उपर दया होनी चाहिए। इसने ऐसा क्या कसूर किया है कि श्रीमान को इसके उपर इतना क्रोध हुआ है ?

३६६ राजा ने कहा कि यह जब मेरा गुरु था तब इसने मुझे गंगा बजाया सिखाया, बहुत तरह की कसरत सिखायी, शिकार खेलने का शौक दिलाया, पठना सिखाया, छुडो डों में जाना सिखाया, घोड़े पर चढ़ना सिखाया, मौज शौक के वाजार दिखाये और जगत के मोह में फंसाने और ललचाने वाले बहुत से विषये मुझे सिखाये परन्तु वे राज्य और ईश्वर सम्बन्धी को दवा त मुझे नहीं सिखायी। इसलिये ऐसे गुरु से मुझे कुछ काम नहीं है।

जो गुरु प्रभु की महिमान ही समझता और जगत का मिथ्यापन ही बताता उस गुरु से मुझे कुछ गरजन ही है। दूसरे लोगो की भी ऐसे गुरु को गुरु ही मानना चाहिये। क्योंकि गुरु का दरजा बहुत बड़ा है। गुरु शब्द का अर्थ ही होता है अंधकार दूर करने वाला और प्रकाश में ले जाने वाला। गुरु माने खरग की दिशा देने वाला भा का दादी या; गुरु माने अपने विश्वास का

उसी गुरु को नहीं सिखायी। इसलिये ऐसे गुरु से मुझे कुछ काम नहीं है।

३३६

जो गुरु प्रभु की महिमा नहीं समझता और जगत का मिथ्यापन नहीं बताता उस गुरु से मुझे कुछ गरजन नहीं है। दूसरे लोगो की भी ऐसे गुरु को गुरु नहीं मानना चाहिये। क्योंकि गुरु का दर्जा बहुत बड़ा है। गुरु शाब्द का अर्थ ही होता है अंधकार दूर करने वाला और प्रकाश में ले जाने वाला। गुरु माने खराबी दिकाने वाला आकाश दीया; गुरु माने अपने विश्वास का स्थान; गुरु माने अपनी ईच्छा की लगाम सोंपने की जगह; गुरु माने ऐसी जगह जिसके आधार से निर्भय रह सकें; गुरु माने असली वस्तु पहचानने वाला महात्मा; गुरु माने चोरा सीता खके फेरे से छुड़ाने वाली दिव्य शक्ति; गुरु माने सत्य ज्ञान का अंदार; गुरु माने हमें अपने बुराई में रूख सकने वाला और सीधे रास्ते ले जाने वाला बल; गुरु माने जिन्दगी सोंप देने की जगह और गुरु माने ईश्वर के समक्ष ले जाने वाला देवता। गुरु का ईतना बड़ा दर्जा है और ऐसी शो की गुरु के ऊपर है। वे गुरु जब आ पही मौज शौक में पड़े रहे और मौज शौक की बातें सिखाया करे और वैराग्य की, जगत के मिथ्यापन की तथा सर्व शक्तिमान महापुरुषात्मा के ज्ञान की बातें न समझा सकें तो फिर गुरु के से १ से गुरुओं को गुरु को न माने १ विना हो दिके वैराग्य के गुरु तो आधार गमो हवा दी सन्यासियों के से हैं। ऐसे को मानने से क्या फल है १ इसलिये तुम इस गुरु की व्यर्थ बकाल मत मत करो, इसे मेरे सामने से दूर करो। मैं वैराग्य और प्रभु से ही न गुरु नहीं चाहता। यह कह कर राजा ने अपने गुरु को अपने दरबार से निकलवा दिया।

३६७

बन्धुओ। यह दृष्टान्त देकर एक महात्मा अपने सत्संगियों को यह समझाने के जो गुरु होकर अपने शिष्यों से नहीं कहता कि पाप बहुत खराब है; जो गुरु अपने मानने वाले आदमियों को यह नहीं समझाता कि इस जगत को छोड़ने के बाद अपने अन्धकार का हिसाब देना पड़ेगा; जो गुरु अपने पास आने वाले लोगो को यह नहीं समझाता कि यह सारा सारा भंगुर है और अचानक धी भर में मर जाता है; जो गुरु अपने शिष्यों से तथा दूसरे लोगों से साफ साफ यह नहीं कहता कि तुम्हें परमार्थ का काम करना चाहिये व

हं गुरु गुरु आहु के योग्य नहीं हैं। क्यों कि गुरुओं का सबसे पहला और अन्तिम तथा प्रधान कर्तव्य यह है कि वे अपने सम्प्रदाय वाले मनुष्यों को पाप के काम करने से रोके और उन्हें विश्वास दिलायें कि प्रभु का भजन करने में ही मनुष्य जन्म की सार्थकता है। यह सब सार शरण गुरु है; मरने पर पापी जीवों को नरक का भय कर के भोग ना पड़ता है; ऐसा होने देने के लिये जैसे बने वैसे शुभ काम करना चाहिये और पाप से बचने की कोशिश करना चाहिये। इस तरह पाप की बुराई गुरु अपने शिष्यों को समझाये जो गुरु ऐसा ही करते वे बहुत बड़ी भूल करते हैं और गुरु के बहुत बड़े कर्तव्य से चूक जाते हैं, ऐसा होने देने के लिये हर एक गुरु को चाहिये कि जैसे बने वैसे अपने शिष्यों को पाप की भयंकरता समझाने की कोशिश करें तथा ऐसा उपाय बतावे कि वे पाप से बच सकें। इस विषय पर बार बार जोर दे। क्यों कि पाप से सीख राव व मरु है और ऐसी सुइमे व मरु है कि जहाँ का इस काल सन ही करते वहाँ जीव ह धुस जाता है। इस लिये इस विषय में बहुत सफ़ाल रखने की जरूरत है। जिसको इस विषय की सावधानी रखना आवे तथा जो दूसरे मनुष्यों में प्रभु प्रेम जगा सके वही मनुष्य गुरु होने के योग्य है। भाईयो! पाप से बचना हो और प्रभु का पारा होना हो तो जो गुरु पाप से बचाने का उपाय जानता हो तथा जो आप के चित्त के प्रभु प्रेम को जग सकता हो उसे गुरु बनाने का ख्याल रखना। जो स्वयं पाप से दूर गया हो गा वह आपको भी पाप से दूर करेगा और जिसमें प्रभु प्रेम हो गा वह आपको प्रभु प्रेम दे सकेगा। सिर्फ़ वाद से बात बनाने वाले गुरु से सन्तोष मत करना वरन् अपने गुरु को पसन्द करना जो आत्मा को सुरक्षित करे। यही हमारी मलाह है।

३६८

११६- अवश्य इसमें श्रमा सीखना चाहिये कि जिन अच्छे कामों से बहुत आदमियों की भलाई होती है वे सब धर्म के ही काम हैं।

अथ

बहुतेरे भक्तों को भक्ति बहुत रुचती है और बहुतरे मनुष्यों को धर्म बहुत रुचता है परन्तु बहुतरे भक्तों के पार में बहुत ही तंग विचार रखते हैं और अपने मन में रखे हुए छोटे से विषय को ही भक्तिसमझाते हैं। वे भक्ति के विषय में तंग मन से विषय भक्ति के होते हैं वरन्

अभक्त

बहुतेरे भक्तों को भक्ति बहुत रुचती है और बहुतरे मनुष्यों को धर्म बहुत रुचता है परन्तु बहुतरे भक्तों के पार में बहुत ही तंग विचार रखते हैं और अपने मन में रखे हुए छोटे से विषय को ही भक्तिसमझा करते हैं। इस के सिवा और जो बहुत से विषय भक्तिके होते हैं उन को वे भक्ति नहीं मानते। जैसे -

३५९

कितने भक्त यह समझते हैं कि तीर्थों में जाने, नहाने धोने, पूजा पाठ करने, देवता का दर्शन करने, व्रत उपवास करने और अपनी सम्प्रदाय की रीति पर चलने का नाम ही भक्ति है। इसके सिवा दूसरे विषयों पर उनका ध्यान नहीं जाता और उन को वे भक्तिसमझते हैं। परन्तु वन्द्यु जी। बाद रखना कि अब ऐसे तंग विचारों में रह जाने का समझ नहीं है। अब हमें अधिक उदार मन से और अधिक उदार बुद्धि से भक्तिका विचार करना चाहिये और भक्तिका उद्देश्य समझना चाहिये तथा भक्तिका कारण जानना चाहिये। हम सब विषयों को गौर से सोचें तो तुरन्त ही समझ में आ जाय कि प्रभु का प्रेम प्रकटना भक्तिका उद्देश्य है, यही भक्तिका फल है। प्रभु का प्रेम कब मिलता है? जब प्रभु के जीवों की सेवा करें और उन को कुछ भी लाभ पहुँचा सकें तभी प्रभु का प्रेम मिलता है। इस लिये जिन कामों में बहत आदमियों का कृपा होता है उन कामों को करना भी एक प्रकार की बहुत अच्छी भक्ति है जैसे - अच्छे अच्छे ग्रंथ लिखने या लिख की बहुत अच्छी भक्ति है जैसे - अच्छे अच्छे ग्रंथ लिखने या लिखवाने या मले मूल्य पर अज्ञान लोगों में उनका प्रचार करने का नाम भक्ति है। ज्ञान परमात्मा का प्रकाश है और ज्ञान से ही जगत का व्यवहार चलता है तथा ज्ञान फैलाने का काम करना भी एक प्रकार की भक्ति है। खेतों का सुधार करना भी एक प्रकार की भक्ति है। कितने ही भक्त कहेंगे कि खेती से भक्तिका क्या सम्बन्ध है? भाईयो! अब को उपरी विगाह से ही देखना ठीक नहीं है। अब हमें जरा गहरे में जा डालना सीखना चाहिये। अगर खेती वाली में सुधार हो और आजकल जिस आम के पेड़ से दस मनु आम मिलता है उससे बीस मनु फल पैदा किया जाये तो कितने लोगों को कितना बड़ा लाभ होगा? आजकल जिस ठूक बीघा जमीन में बीस मनु धान होता है उसमें साठ मनु धान हो तो लोगों को खुराक कितनी सस्ती मिलेगी और कितने

लोगों का आशीर्वाद प्राप्त होगा १ य इसोचना चाहिये । ज इसोचने से नुरत समझ में आ सकता है कि खेती बारी में सुधार करना भी एक प्रकार की भक्ति है । भक्ति का अर्थ ही है अपने अनन्य करने का जो पवित्र बनाना सेवा करने वाला बनाना और ऐसा करना कि अपना तथा अपने बन्धुओं का दुःख घटे । इसलिये जो जो काम करने से ऐसा हो सकता है उनका मोका नाम भक्ति है ।

नवीन विधातुओं की खोजें बोदना और गोमाल धरती के पेर में दवा पडा है उसे का हर निकाल कर उसका मूल्य बढ़ाना और जगत को उससे लाभ पहुँचाना तथा अनेक मनुष्यों को उससे रोजी देना भक्ति है ।

विदेशों से सन्बन्ध जो उना और अपने भाईयों के लिये नये नये देशों का द्वार खोलना तथा वहा रोजगार धंधा करण और शिल्प कला सीखने के लिये अपने भाईयों को सुवीता कर देना भक्ति है नये नये आविष्कार करना और उनसे लोगों का सुख बढ़ाना तथा जीविका का उपाय कर देने के लिये नये नये काम जारी करना और जगत का सौन्दर्य बढ़ाना तथा प्रभु की महिमा समझाना बहुत बड़ी बात है और यह भी भक्ति का ही काम है । इस तरह जो जो काम करने से मनुष्य का सुख बढ़ता है, देश की और दुनिया की सशुद्धि बढ़ती है, लोगों का मन खिलता है और उन्हें आगे बढ़ने में सहारा मिलता है वे सब भक्तिके काम हैं । महात्मा गेवखने में सहारा मिलता है वे सब भक्तिके काम हैं । महात्मा लोग ऐसा समझते हैं और कहते हैं । यह सब भी प्रभु के लिये हो तो उत्तम प्रकार की भक्ति ही है । इसमें कुछ भी संशय नहीं है । इसलिये बन्धुओं । अवन हाने धोने की कोरी और छोटी बाहरी की तंग भक्ति में ही मतरह नाना वरं प्रभु के अर्थ से उपयोगी काम और प्रभु के बालकों की सेवा करने को उत्तम प्रकार की भक्तिसमझना सीखिये; तब आपकी भक्ति की सीमा विशाल हो

सकेगी और ज्यों ज्यों भक्ति की सीमा बढ़ेगी त्यो त्यो आप का आनन्द बढ़ता जायगा । इन विषयों का भी भक्ति के भीतर समझ कर ध्यान से प्रभु के प्रीत्यर्थ कीजिये ।

स केगी और ज्यों ज्यों भक्ति की सीमा बढ़ेगी त्यो त्यो आप का आनन्द बढ़ता जायगा। इन विषयों को भी भक्ति के भीतर समझकर ध्यान से प्रभु के प्रीत्यर्थ कीजिये।

४०९

११७ - भगवान की महिमा।

कोई धर्म ब्राला विश्व देखकर भगवान को भजता है। वह यह सोचता है कि इतनी बड़ी पृथ्वी बिना किसी के बन पाये के सेवन सकती है १ इतना बड़ा समुद्र बिना किसी के हुक्म के सीमा मे के से रह सकता है १ बिना किसी प्रधान शक्ति की मदद के हो ये सीखाली व रावर दिखने वाला सूर्य ला खो क हो डों वर्ष से इतना प्रकाश के से दे सकता है १ चन्द्र और तारे कि सी की शक्ति बिना नियमित रूप से के से चल सकते हैं १ वायु में क्या आपसे आप इतना बड़ा बल आ सकता है १ पानी की बूंद में क्या बिना किसी की सहायता के गर्भ रह सकता है १ एक बीज से अनेक फूल क्या बिना किसी के कि ये हो सकते हैं १ और बिजली, वर्षा, सकेर सांझ, रात, प्रकाश, अंधकार आदि आपसे आप हो ते हैं १ नहीं, नहीं। यह सब बड़ी बड़ी वस्तुएं आपसे आप नहीं होतीं। इतना बनाने वाला और इतनी नियम में रखने वाला को इहो ना ही चाहिये। बिना किसी शक्ति की मदद के ये सी अशुभ होना ही चाहिये। इस लिये जरूर इन त और प्रधान वस्तु सेवन ही नहीं सकतीं। इस लिये जरूर इन का कोई बनाने वाला होगा। इस तरह कितने ही आदमी जगत देखकर ईश्वर को मानते हैं।

कितने ही भले मानस उदकार कृति से भगवान को मानते हैं। वे अपनी भला इसे यह समझते हैं कि हमारी सत्ता क्या है। हमारी विसात क्या है। हमारी योग्यता क्या है। हमारा हक क्या है। और अनन्तता के आगे हम किस गिनती में हैं तथा बिना उस की मरजी के हम क्या कर सकते हैं। हमसे कुछ नहीं हो सकना। हम तो बात की बात में मिट्टी में मिज जाने वाले हैं, पर प्रभु हमें निवाहता है और हमारे सुख का सामान पूरा कर

स

रता है। इससे हमें प्रभु को मानना चाहिए। यों अपनी दुर्बलता देखकर उपकार के कारण ईश्वर को मानते हैं।

२६

४०२

इसके सिवा आज के जमाने में नये नये आ विचार होते जाते हैं; उन आ विचारों की मदद से किसी तरह धर्म को न मानने वाले नास्ति को के मन में भी विचित्र भाव उत्पन्न होता है। दूरवीन, खुदवीन, विजली का आच्छिद्रूप, रिग यो के शरीर की रचना, हर एक वस्तु के आरपा रजाने वाली एक सरेज कि रणो तथा अखंड प्रकाश देने वाले रेडियम आदिवस्तुओं की विचित्रता तथा खुबी देखकर नास्तिकों का मन भी पिघल जाता है। वे सोचते हैं कि यह सब क्या है? ज्यो ज्योग हरे उतरते जाते हैं ज्यो ज्यो वि होयता आती जाती है। परन्तु अन्त का कुछ पता ही नहीं लगता। यह सोचकर ईश्वर की विभूति यों की खुबियों में मग्न हो जाते हैं और ईश्वर को मानने का मन न होने पर भी आश्चर्य भाव से मन बूरन उठे मानना पड़ता है। सर्वशक्तिमान महा ईश्वर की ऐसी अगाध महिमा है।

११८- वेराग्य दिखाकर या उरकर भक्तिक रात्रे की अपेक्षा प्रभु का प्रेम व ता कर तथा प्रभु की महिमा सप्रज्ञा कर भक्ति करनी अच्छा है।

४०३

वन्धुओं। सर्वशक्तिमान महा ईश्वर को अनेक प्रकार से भज सकते हैं। परन्तु प्रेम भाव से ईश्वर को भजना सबसे बढिया है। इसके बारे में दो महात्माओं की कथा है—

एक त्यागी भक्त जंगल में रहता था। वह उमर से बड़ा गढ़ा खुदवा रहा था। वह उसको देखता और देख देखकर भजन करना। उसे गठे की तरफ नजर रखते देखकर किसी दूर से भक्त ने एक दिन उससे पूछा कि महाराज। आप इस गठे के सामने क्या देखकर रहते हैं? इस गठे में क्या रहस्य है?

३४२

४०३

उस भक्त ने कहा कि मैं मिट्टी से पैदा हुआ हूँ और अन्त को से ही एक गठे में दबकर मिट्टी में मिल जाने वाला हूँ। इस बात का ख्याल रखने के लिये मैंने यह गढ़ा खुदवाया है। और इस के सामने देखता हूँ तो भजन करने का मन करता है। क्योंकि

सह भक्तों को दान उससे प्रार्थना कि मैं हाथ में लूँ और अन्त को
के सामने क्या देखा करते हैं १ इस गठ में क्या रहस्य है १

३४२

४०३

उस भक्त ने कहा कि मैं मिट्टी से पैदा हुआ हूँ और अन्त को
हैं से ही एक गठ में दब कर मिट्टी में मिल जाने वाला हूँ। इस वा
त का ख्याल रखने के लिये मैंने यह गठ रख दिया है। और इस
के सामने देखता हूँ तो भजन करने का मन करता है। क्योंकि
मौत नजर के सामने नाचने लगती है। इससे मन में बेचैन आ जा
ता है। तब इससे खूब भजन होता है। बिना भय के भजन कैसे हो १
क्या आप ऐसा ही करते १

दूसरे भक्त ने कहा कि नहीं हम भय से भजन नहीं करते, हम
तो प्रेम भाव से भजन करते हैं। क्योंकि प्रभु प्रेम सर्व व्यापी मय
तत्त्व है; प्रभु का प्रेम कल्प वृक्ष है; प्रभु का प्रेम पारसमणि है;
प्रभु का प्रेम स्वर्ग का अमृत है और प्रभु का प्रेम देवताओं को
भी दुर्लभ है। ऐसा अमूल्य प्रेम जिसके हृदय में आ जाता है उ
सके हृदय में शान्ति का झरना बहा करता है। जिस भक्त के हृ
दय में भगवान का प्रेम आ जाता है उसके पुराने पाप जल जा
ते हैं। जिसके हृदय में प्रेम आ जाता है उसके दुःख भाग जाते हैं।
जिसके हृदय में प्रेम आ जाता है उसके मुख रेकी ज्योति बदन
जाती है। जिसमें प्रेम आता है वह दीप्त को कहा जाता है तो
भी प्रहात्मा बन जाता है। जिसमें प्रेम आता है उसमें कितनी
ही सिद्धियाँ आ जाती हैं। जिसके चित्त में प्रभु का प्रेम आ जाता
है उसके पास प्रभु स्वयं हाजिर रहता है इससे वह ललित रूप
हो जाता है। कभी कभी खराब संयोगों के कारण कितने ही भ
क्तों का भजन छूट जाता है परन्तु जिसके हृदय में प्रभु का प्रेम
आ जाता है और प्रभु की महिमा जिसकी समझ में आ जाती
है उसका भजन किसी दिन नहीं छूट सकता। इस लिये हम
तो प्रेम से ही भजन करना तथा भजन करना चाहते हैं। हमारी
ही प्रार्थना है कि आप भी ऐसा कीजिये।

के सामने विषय की बातें कहकर उसका धृति प्राप्ति को उकसाना भी बहुत बड़ा पाप है। जो आदमी जुआ खेलता हो उसे सा

३४४

ल में दो चार दिन जुआ खेलने से जुआ डी थोड़े हो जायेंगी
यह तो चक्रवर्त्य का खेल वाड है; दीवाली में तो जरा
खेल वाड करना ही चाहिये; हमारे बाप दादे क्या मूर्ख थे
कि खेलते थे आदि कहकर दाव पर बिठाना भी बहुत बड़ा पा
प है। जिस आदमी को उधम मचाना नखता हो उस जान पह
चान वाले के पास जाकर यह कहना कि आज होली है आज तु
म्हें नही छोड़ेंगे हमारे साथ चलोगे ही तो तुम्हारे घर हो लिह
ये जंगे तब फिर मजा देखोगे और दवाव डाल कर उस से म्यो
धुलवाना और उधम मचाने के लिये जान पहचान वालों को प
कडले जाना तथा उस के मन में हल्के से स्कार डालना भी चक्रव
र्त्य का बहुत बड़ा पाप है। जो आदमी सुरती में पैसा लगाना
चाहता हो उससे यों कहना भी बहुत बड़ा पाप है कि एक रुपया
को न. व डी वात है १ पड़ेगा तो हजारों रुपये मिल जायेंगे वा
द है १ पाच वर्ष इस हमारे ही गाव के एक आदमी को दो हजार
रुपये मिले थे कि नहीं १ भाग्य थोड़े बेच दिया है १ हमको
सोचे कि हमारा मन पड़ेगा १ तुम्हारे पास रुपये आते तो
तो मैं देता हमने एक दिरहन् तो खरीद ही लो। क्या मैं खाली हाथ लौ
ट जाऊं १ अजीब सिर्फ एक रुपय के लिये दैवती कंगू सी करते हो
१ झहक झहक उसे लाठी में पैसा लगाने का हौक दिलाना भी ब
ड़ा भारी पाप है। -

जो आदमी छुड डों ड, पानी, अफीम या मूई के छुछे में न जा
ता हो उसे बहोले जाना और उसका तुकसान नवता कर सिर्फ का
यदावताना और वह जुआ खेलने के लिये उसे ललचाना भी एक
अपराध है। याद रहे कि ये सब बातें अभी बहुत दूरी लगती हैं प
४०६ रतु आगे जाकर कितनी ही बार कितनी ही जगह पर रिणाम बहुत
कुरा होता है। इस लिये अपनी जान पहचान के किसी आदमी

६०७
मा

१२० - प्रभु के अर्पण हो जाने के साने क्या १ (१)

जैसे कि सीतले मा लिक से उसका नमक हलाल नौ कर
वहुत धन पावे और फिर वही धन अपने मा लिक को अपनी खु
शी से सोप कर अपने को कृतार्थ माने वैसे जो भक्त ईश्वर से मि
ली हुई सब वस्तुएं - जैसे देह, प्राण, इंद्रियां, मन तथा उस
के सम्बन्ध का सर्वस्व - प्रभु को सोप दे उस भक्त को अर्पण हु
आ समझना ।

श. अर्पण हो जाने के की रीति -

समुद्र में पत्र का ठका कुन्दा जिधर लहलहा रही है ईश्वर
हो जाता है, अपनी ओर से कि सी तरफ जाने की जोर नहीं लगा
ता । वैसे प्रभु सुख या दुःख जैसी स्थिति में रखे वैसे स्थिति
में प्रसन्न हो कर रहने का नाम अर्पण हो जाता है । मतलब यह
है कि अर्पण हुआ भक्त दुःख से दिल गीर नहीं होता और न
सुख से फूल उठता, वरन् प्रभु जैसे रखे वैसे खुश की ईच्छा के
अधीन हो कर रहता है ।

जैसे अंधा आदमी अपने रास्ता दिखाने वाले के भरोसे र
हता है वैसे जो भक्त हर विषय में ईश्वर के ही भरोसे रहें और
अपनी सब निन्ताएं दूर कर दे तथा चाहे जैसा खराब मौका
आवे पर भी मन में कि सी बात की शंका न रखे, सत्स्थिति के अ
धीन रहें तथा सदा से ही प्रार्थना करें कि हे प्रभु । मैं तेरे अधी
न हूँ, तेरी जैसी जरूरी हो वैसे कर - हे सीतावनारखे और कह
रो ग, अकालतत्वाल जे ईश्वर मृत्यु जैसे महा कठिन प्रसंग में
भी न घबराय उसे अर्पण हुआ समझना ।

जैसे मुकदमेबाज लगेगा अपना मुकदमा वकील को सोप
कर आप निर्भय रहते हैं और वीमार आदमी अपनी नाडी बंधे

४०८ हाथ में सौ पदेते हैं तथा उसी की सलाह पर चलते और उसी के भरोसे रहते हैं वे ऐसे जो भक्त भगवान के भरोसे अपना जीवन बिताता हो उसे ईश्वर के अर्पण हुआ समझना।

हम जब रेलगाड़ी या अगिन कोट में बैठते हैं तब निश्चित स्थान पर पहुँचने में कुछ भी शंका नहीं रखते। वे हमें अपना हमारा क्या हाल होगा इसकी शंका न रखकर भगवान की ईश्वरनुसार दिन बिताता और प्रभु जैसे रहते वे ऐसा निपूर्व कर रहना तथा यह समझना कि हमारा प्रभु हमारी भलाई ही करेगा क्यों कि वह अपने जनको कभी छोड़ने वाला नहीं है। यह अर्पण विधि है।

जो लड़के अपने बाप के अधीन होकर रहते हैं उन पर उनका बाप रूपी रहता है और उनका भरण पोषण किया करता है वे ऐसे ही जो हरिजन प्रभु के अर्पण हो जाते हैं और जो उनके हो गये हैं उनकी घरगृहस्थी की तथा उनके कल्याण की फिर प्रभु रखता है। इससे ऐसे अर्पण हुए भक्त भक्ति मार्ग में वही तेजी से आगे बढ़ जाते हैं। ईश्वर सब बातों को धर्म में प्रेरित करे बिना प्रभु व्यर्थली भोंति नहीं समझ सकेंगे। जो भक्त अर्पण हो गये हैं वे अनुभव कर सकते हैं कि जैसे छोटे बच्चे की हर तरह से खबर देती उसकी माता करती है वे प्रभु के अर्पण हुए भक्त की हर एक बात का ख्याल रखें प्रभु रखता है। फिर भी सोचा हुआ काम न हो तो समझना कि हमारे अर्पण में कुछ कछाई है।

कितने भक्त अपने मन में यह समझते हैं कि हम प्रभु के अर्पण हो गये हैं तो भी हमारे कितने ही काम सिद्ध नहीं होते। इससे उनके चित्त में झगड़ाने लगती है कि प्रभु हमारा ख्याल नहीं रखता। ऐसी शंका कितनी हो जाए किसी किसी भक्त को होती है। और ऐसी शंका होने का कारण यह है कि उनके कितने ही काम उनके सोने हुए ढंग पर पूरे नहीं होते। परन्तु ऐसा होने का

४०९ रण यह है कि वे असल में अर्पण हुए नहीं रहते उनके अर्पण में कुछ कछाई रहती है। ऐसी से उनके कामों में फर्क पड़ता है। भक्त अर्पण का जो रजितना हो वह ता है भगवान को इसकी फिर ईश्वर की अधिक रखनी पड़ती है। अर्पण का जो रजितना कम हो

४०६ एरा यह है कि वे असल में अर्पण हूँ ग ही रहते उन के अर्पण में कुछ कचाई रहती है। इसी से उन के कामों में लक्ष्य पड़ता है। भक्त में अर्पण का जो रजित ना हो बछता है भगवान को इस की फिकर नहीं ही अधिक रखनी पड़ती है। अर्पण का जो रजित ना कम हो भगवान को इस भक्त के लिये इतनी ही कम फिकर करनी पड़ती है। इस लिये किसी भक्त के अर्पण हो जाने पर भी प्रभु उस की ओर लापरवाही दिखाना होता यह समझ लेना चाहिये कि अर्पण में कुछ छिनाई है या कही पर कुछ भूल होती है। ऐसा न हो तो अर्पण हुआ भक्त उदास, दुखी या फिकर में द हो ही नहीं।

व हुत आदमी अपने सिर पर कंधे पर कुछ गठरी या बोझ ले कर रास्ता चलते हैं। रास्ते में उन्हें बने के लिये गाड़ी पर मिल जाय तो वे उस में बैठ जाते हैं परन्तु अपनी गठरी या बोझ को अपनी गोद में छेड़ा सिर पर रखे रहते हैं। उसे अलग हटाने की इच्छा उन्हें नहीं होती। वैसे ही भगवान हरतरह का बोझ अपने ऊपर लेना चाहता है, परन्तु कितने भक्त ऐसे होते हैं जो अपना बोझ अपने सिर से उतारना नहीं चाहते। इससे गाड़ी में बैठने पर भी अपने सिर पर गठरी रख देते हैं। जिन्हें बोझ पसन्द नहीं है वे आदमी अपनी गठरी को एक बगल रख देते हैं। वैसे जो अर्पण हूँ ग भी करते वे बोझ अलग रख देते हैं। जो अर्पण नहीं हूँ ग वे भक्त की गाड़ी में बैठने पर भी अपनी फिकर की गठरी अपने सिर पर लिये फिरते हैं और ना हक दुखी होते हैं। वन्धुओ। इस दुष्टा न से आप समझ सकेंगे कि प्रभु के अर्पण हो जाने से हमारे ऊपर का सब भार हल्का हो जाता है। इससे बड़े ही आनन्द में रह सकते हैं। हे हरीजनो। भगवान के अर्पण हो जाना सीखिये। भगवान के अर्पण हो जाना सीखिये।

रि

४१०

१२१ - प्रभु के अर्पण हो जाने के मान क्या (२)
अर्पण में महा आनन्द है तो भी बहुत लोग प्रभु के अर्पण नहीं होते। इसका कारण क्या है १

प्रभु के अर्पण हो जाने में इतना वडा आनन्द है, तो भी बहुत आदमी भगवान के अर्पण नहीं होते। इसका कारण यह है कि बहुत आदमी यह बात नहीं जानते कि भगवान माने क्या और भगवान के साथ सर्म है, भगवान के साथ दयालु है भगवान के साथ सर्व व्यापक है, भगवान के साथ अविनाशी है और भगवान के साथ सर्व शक्तिमान है। इसके सिवा बहुत है भक्त भगवान के विषय में जितना जानना चाहिये उतना भली भाँति नहीं जानते। किसी को इस विषय का बोझ बहुत जान हो भी तो उसमें से अपने का काँटा निकलाने ही रहना और भक्ता का जोर नहीं होता। इससे वह अपने ऊपर का बोझ दूर नहीं कर सकता। भगवान के अर्पण हो जाने के लिये भगवान की माहिमा जानना चाहिये और जीव की काम जोरी समझ लेना चाहिये। इन दोनों बातों के जानने से अर्पण विधि समझने में बहुत मदद मिलती है और आगे जाकर प्रभु के अर्पण होकर जीवन विनायास करता है। ऐसा होने पर ही निन्दगी सार्थक होती है, इस लिये हम प्रभु के अर्पण होकर रहने की श्रुति को जाननी चाहिये।

भक्ति करने पर भी जैसा चाहिये वैसा लाभ होने का कारण।

किसी रोगी आदमी पर बहुत दया करके कोहूँ भला वैद्य अच्छी से अच्छी दवा दे परन्तु वह रोगी उस दवा को विधिपूर्वक न खाए और वैद्य के बताये विधि पर न चले तो उस दवा से कुछ बहुत लाभ नहीं होता। ऐसी दवा में लाभ हो तो उसमें औषध का या वैद्य का दोष नहीं देख सकते। वैसे याद रखना कि हम प्रभु के अर्पण हो जायें तो प्रभु हमारा सब दुःख मिटाने का तय्यार है। परन्तु होकर है कि हम प्रभु के नियमों को तोड़कर नहीं पालते और अर्पण विधि का रहस्य नहीं समझते। इस

से भक्ति करने पर भी हम चिन्तित, उदास और शोकातुर रहते हैं। अगर हमें ठीक तो ऐसे प्रभु के अर्पण हो जाना आवे तो यमकवाते तुरंत ठीक हो जायें इस लिये अपनी जिन्दगी प्रभु के नियमों और प्रभु को जिस तरह खने के लिये तथा अनन्त का

धि. न ही पालते और अर्पण विधी का रहस्य नहीं समझते। इस

३५०

से भक्तिकरने पर भी हम चिन्तित, उदास और डोकाहुर रहते हैं। अगर हमें ही कहें तो ऐसे प्रभु के अर्पण हो जाना आवे तो यमकवाते तुरंत ही कहें हो जायें इसलिये अपनी जिन्दगी प्रधारने के लिये और प्रभु को प्रसन्न रखने के लिये तथा अनन्त का लका, हरि के हृदय का मोक्ष का सुख पाने के लिये प्रभु के अर्पण हो कर जिन्दगी बिताना सीखना चाहिये।

अर्पण विधी का आनन्द समझने के लिये एक न-हे से बालक के सामने देखिये। वह हमें पतन ही रखता। हर बात में मावाप का अनुसरण करता है और उनके कहने के अनुसार करता है। इस से वह केलावे फिकर रहता है। केला आनन्दी रहता है। केला गंधता कूदता रहता है और केला मस्सर रहता है। जहाँ यह सब देखिये। इस तरह हमें अर्पण हो जाना आवे तो हमारे सुख को सिमान रहे। भाई प्रो। याद रखना कि यह सब, कुछ वाचने से, सुनने से या सीखने से नहीं आता बरंच जब धीरे धीरे वह हुत दिनों तक इसका अभ्यास होत व प्रहवात प्रथम रूप में पकड़ी जा सकती है। इस लिये हर एक हरिजन को अर्पण विधी के अनुसार रहने की चेष्टा करनी चाहिये और अपना व्यवहार चलाने के लिये जो जो काम करना पड़े वह सब अर्पण विधि से करने की कोशिश करनी चाहिये।

४९२

गुरु की तथा ईश्वर की शरण जाके पर किसी हरिजन को अपने अर्पण के विषय में सन्देह न रखना चाहिये। प्रभु के अर्पण होने के बाद जो मनुष्य अपने मन में ईश्वर का रहता है कि प्रभु मेरे सन्तरेगा या नहीं वह आदमी बहुत बड़ा जाप करता है। भक्ति मार्ग का मुख्य सिद्धान्त यह है कि धर्म सम्बन्धी किसी विषय की मन में ईश्वर का न रखे और अश्रु का न रखे। फिर भी जो जो अश्रु का रखे उसका नाश होता है। इस के लिये श्री कृष्ण भगवान ने कहा है कि

संशयात्मा विनश्यति।

अर्थात् जो सहाय रखता है वह गिर जाता है और उसका नाश होता है। इस लिये एक बार प्रभु के अर्पण हो जाने के बाद अपने अर्पण के विषय में किसी प्रकार की शंका मत रखना। शीघ्र ने से वह दिन दिन बढ़ती जाती है और उससे आगे जाकर बहुत खराबी होती है। सो अपने अर्पण में शंका मत रखना।

जो उत्तम प्रकार के भक्त हैं वे तो यही समझते हैं कि हमारे उपर परम कृपालु परमात्मा की अपार दया है इसी से हमसे जुस्म मिलता है और इसी से हम प्रभु के अर्पण हुए हैं; इस लिये हमारा धन्य भाग्य है। क्योंकि जिसके अन्तर चक्षु न ही खुले हैं उसको ऐसा दृष्टि योग नहीं मिलता और ऐसा आत्मिक आनन्द नहीं मिलता, परन्तु हमारा पूर्वका कोटि पुण्य उदय हुआ है इससे हमें ऐसा बड़ा लाभ हुआ है। यह समझकर अर्पण हुए भक्त सदा आनन्द में रहते हैं और अपने अर्पण होने का भाव और ठूठ करते जाते हैं। ऐसे भक्त धन्य हैं। भाई जो ऐसे अर्पित तथा आनन्दी भक्त होने की कोशिश कीजिए।

४९३

१२२ - प्रभु के अर्पण हो जाने के माने क्या (३)

अर्पण हुए भक्तों में भी कभी कभी छोटे छोटे पाप होते हैं पर इससे उनके अर्पण में बाधा नहीं पड़ती।

कितनी बार ऐसा होता है कि अर्पण हुए हरिजनों को भी अपने अन्दर कितने ही त रह के पाप दिखाई देते हैं और जैसी पवित्रता भक्तों में होनी चाहिये वैसी उनमें नहीं दिखाई देती। इससे उन्हें अपने अर्पण होने के बारे में शंका होती है। वे सोचते हैं कि हममें तो अभी पाप है तब प्रभु हमें क्यों कर अंगीकार करेगा? इसके समाधान में महात्मा कहते हैं कि जब अपने अन्दर कयाई दिखाई दे तब पाप के लिये पश्चात्ताप करना अधिकतम है। परन्तु

सकारण से अपने अर्पण के विषय में कुछ शंका न रखे। क्योंकि हम जब तक मनुष्य के रूप में हैं, जब तक हमारा जीव इस देह के अन्दर है और जब तक हम इस दुनिया में हैं तब तक हममें कुछ न कुछ कयाई रहेगी ही। परन्तु साहस रखना कि ऐसी छोटी छोटी

सकारण से अपने अपराध के विषय में कुछ शंका न रखे। क्योंकि हम जब तक मनुष्य के रूप में हैं, जब तक हमारा जीव हल दे हके अन्दर है और जब तक हम हल दुनिया में हैं तब तक हम में कुछ न कुछ कचोहर है ही। परन्तु साहू रखना कि ऐसी दौ दी दौ दी कचोहर से सर्व हाकिमान महान ईश्वर को कुछ मतलब न ही है। यद्यपि हमारी रवायी हमें बाधा देगी परन्तु ऐसी दौ दी दौ दी भूलों के कारण प्रभु हमें दौ डन ही देगा और उस से हमारे शरण जाने या अर्पण होने में विघ्न न हो पड़ेगा। दयालु प्रभु का यह सिद्धान्त है कि चाहे जेसा चापी मनुष्य हो वह सच्चे भाव से शरण जाय तो प्रभु उसे अपना लेता है।

गये शरण प्रभु रखि है सब अपराध विमारी।

वह मनुष्यो के पाप देखने में ही नही लगार हता वरें च वह तो अपनी प्रभुता का ध्यान रख कर शरण गये चापी जीवों को भी अंगीकार कर लेता है। फिर अंगीकार हुआ जीवों का पाप कटता जाता है। इस लिये अर्पण के विषय में तनिक शंका मत रखना।

अर्पण का विषय अच्छी तरह समझाने के लिये एक भक्त राजमहा राज कहते कि किसी मनुष्य ने किसी ब्राह्मण को अपना घर दान किया हो और उस ब्राह्मण ने वह दान लिया हो और पीछे से वह ब्राह्मण अपने मन में शंका करे की भला अस ह घर मे रहा आ कि न हीं क्योंकि घर जहा कात हा है - तो हल शंका से वह दान देने वाले मनुष्य का अपमान करता है। वैसे ही बाद रखना कि हम ईश्वर के अर्पण हो जाने के बाद अर्पण के विषय में कुछ वह मत रखे तो उस से ईश्वर का अपमान करते हैं। ऐसी भूल से बचना।

अगर घर दान लेने वाला ब्राह्मण यह समझे कि इस घर को गिरा पड़ा कर कहीं दूसरी जगह ले जाने से ही वह मेरा कहलायगा तो यह उस की भूल है। क्योंकि दान लेने के बाद

मे व ही समझना चाहिये कि यह चरन या हो या है पुराना 5
सीका है। उसे सुधारना या बिगाडना उसके अधिकारकी बात
है। घरदान करनेवाले मनुष्य को भी यह समझना चाहिये कि
अब इस घरसे मेरा कुछ सहे कारन ही है। वाहराण अब चाहे
तो इसको और उचा बनाने चाहे ठ हा दे। मुझसे कुछ मतलब
नहीं है। वैसे ही अर्पण हो जाने के बाद हम अच्छे हो जायुरे हो
इससे प्रभुको कुछ मतलब नही है, इससे तो हमें मतलब है प
रन्तु प्रभु ही समझना है कि हम उसके अर्पण हो चुके हैं। इस
लिये अर्पण के विषयमें किसी हरिजन को अपने मनमें शंका न
रखना चाहिये।

पापीभी प्रभुके अर्पण हो सकते हैं।

४९५

अर्पण के विषयमें यह बात भी समझ लेने योग्य है कि यह
कुछ निश्चय नही है कि बहुत पवित्र मनुष्य ही अर्पण हो सकते हैं
पापी मनुष्य नही। अग्निमें जो कुछ जाता है सब भस्म हो जाता
है। परमरूपालु परमात्मा भी ऐसा पूर्ण पवित्र है कि उसके पा
स चाहे जैसा पापी जाय वह पवित्र हो जाता है पापियों को शर
ण लेने से प्रभुको पवित्रता या बहुप्यनमें कुछ भी कमी नही हो
ती वरंच इससे उसका बहुप्यन और बढ़ता है। क्यों कि पापी यो को
शरणमें लेने से जगत के दूसरे लोगो को विश्वास होता है कि प्र
भु अधमो द्वार करे। इसलिये जब मनुष्य सच्चे भावसे प्रभुकी
शरण जाता है तो वह तुरत ही अंगीकार कर लेता है। इसमें जो
तथा तथा पाप पुण्य कुछ भी नही देखता। सो अर्पण इस प्रकार
को अर्पण के विषयमें कभी कुछ भी शंका न करनी चाहिये।
वरंच ऐसा करना चाहिये कि अर्पण की भावना दूढ होती जाये।

शरण जाने के बाद पापियों को भी प्रभु स्वीकार कर लेता
है तथा स्वीकार करने के बाद भी किसी भक्तसे कुछ झूल हो जा
य तो उसके अर्पणमें भी कुछ अडचल नही पडती। इन दो नोवा

तों को समझ लेने के बाद अब हमें यह जानना चाहिये कि अ
र्पण हूँ भक्त अपनी जिन्दगी कैसे बिताते हैं। इसको समझा
ने के लिये एकमेव हात्मा अपने सत्संगियों को बताते थे कि -
अर्पण हूँ भक्त अपनी जिन्दगी कैसे बिताते हैं १

होगा या स्वामी को रक्षक के रूप में वादना चाहिए। इन दोनों बातों पर तो इस के अर्थ में भी कुछ अडचल नहीं पड़ती। इन दोनों बातों

३५४

तों को समझ लेने के बाद अब हमें यह जानना चाहिये कि अर्पण हुआ प्रभु को अपनी जिन्दगी कैसे विताते हैं। इसको समझाने के लिये एक महात्मा अपने ससंगियों को बताते थे कि -

अर्पण हुआ प्रभु को अपनी जिन्दगी कैसे विताते हैं ?

दो पलटने आपस में लड़ती हो और उनमें एक हारकर दूसरी के सेनापति की शरण जाय तो अपना हथियार जल देती है और उस के अधीन होकर रहती है तथा उसका हुक्म मानती है। वैसे ही हम जब प्रभु की शरण जायें और उस के अर्पण हो जायें तो हमें भी अपना हथियार रख देना चाहिये। उस की ईच्छा नुसार चलना चाहिये और उसका हुक्म मानना चाहिये। जब ऐसा करना आवे तभी सच्चा अर्पण हो सकता है। सारांश, इस अर्पण विधि का मुख्य सिद्धान्त यह है कि अपना मैपन छोड़कर प्रभु की ईच्छा नुसार चलना चाहिये। और उसका हुक्म मानना चाहिये। यही सौ बात की सफलता है।

अर्पण विधि सीखने तथा पालने के लिये

अर्पण हुआ प्रभु को संग्रह करना चाहिये।

अर्पण विधि की बातें सुनने या समझने से वैसा करना नहीं आता बल्कि जब से किसी शरणगत सिद्ध भक्त के सागम में जुटते रहते हैं तब उस की रहन सहन तथा आचार विचार देख कर वह विषय सीख सकते हैं। इस लिये अगर अर्पण विधि का रहस्य हृदय में बिठाया हो तो अर्पण हुआ प्रभु को संग्रह करना चाहिये। इतना ही नहीं बल्कि जैसे लम्बा समय जुट कर के आना चाहिये। इतना ही नहीं बल्कि जो दी के करकारी पायल पहना अगि न बोटा किता ऐप हुं न कर गो दी के करकारी पायल के हाथ में अपने को सोप देता है वैसे ही हमें अर्पण हुआ प्रभु के हाथ में अपनी जिन्दगी को लगाकर सोप देना चाहिये और वह जो रस्ता बतावे उस पर चलना चाहिये। ऐसा करने की

सच्ची अर्पणा विधि पा ली जा सकती है। सो अर्पणा विधिको ठू
ठ करने के लिये प्रभु प्रेमी भक्तों का संग धरिये।

४९७

१२३ - प्रभु के अर्पणा हो जाने के माने क्या १ (४)

प्र

अर्पणा कुरु भक्तों को कैसा वर्ता व करना चाहिये १

जबसे हम प्रभु की सरणा पकड़ कर उस के अर्पणा होते हैं और
अर्पणा होने की कंठी बांधते हैं, व इस सम्बन्ध करते हैं, दीक्षा ले
ते हैं, वैसे ही को दूसरी किया करते हैं तबसे हम अपने न
हीं रहते वरंच प्रभु के हो जाते हैं। इस लिये अर्पणा हो जाने के बा
द हमें प्रभु का कुरु ब्रह्म मानना चाहिये और प्रभु जिस में रखे उस
में राजी रहना चाहिये, अपने सब काम प्रभु के अर्पणा करना
चाहिये और प्रभु के नखने योग्य पाप कर्म से जे से वने वे से दू
र रहने की कोशिश करना चाहिये। मारें शत्रु ह कि गा प्रजे
से अपने गोपाल के पीछे पीछे ली जाती हैं वे से हमें भी शा
स्त्र में कहे प्रभु के कुरु ब्रह्म के अनुसार चलना चाहिये। अब हमारा
धर्म मगज में रख दोउने का नहीं है बल्कि प्रभु के अर्पणा हो जाने
के बाद अपने धर्म को अपने राज मर के काम में लाना चाहिये। ज
ब हम सारे हर रोज के काम काम में हमारा धर्म काम आवे तभी अ
सली अर्पणा कहलाता है। इस लिये असली अर्पणा वाते व निवे।
व निवे।

अच्छे बाप का लायक बेटे से अपने बाप की इच्छा का
खाल रख कर चलना है वे से हमें भी अपने पिता परमात्मा की
इच्छा अनुसार चलना चाहिये। हमारा धर्म, हमारा बल, और ह
मारी बुद्धि कुदृष्टी अर्पणा हो जाने के बाद, अपना नहीं है। यह
सब प्रभु का है। इस लिये प्रभु का रूपा करके दिया हुआ व ह

सब इनाम हमें प्रभु के अर्प ही खर्चना चाहिये और प्रभु के अर्प व
र्चने के लिये ऐसा करना चाहिये कि यह सब प्रभु के जनों की सेवा
में लगे।

४९८

जबतक हम भगवान के अर्पणा नहीं होते तबतक हम दुनिया
के काम करते हैं, हम से द्रविया दागें की गति पर द निमा से वर्ता व

सब प्रभु का है। इसलिये प्रभु का रूपा करके दिया हुआ है

३५६

सब दंगल हम प्रभु के अर्पण ही खर्चना चाहिये और प्रभु के अर्पण
न करने के लिये ऐसा करना चाहिये कि यह सब प्रभु के जनों की सेवा
में लगे।

४९८

जब तक हम मजबूत नहीं होते तब तक हम दुनिया
के दास रहते हैं उससे दुनिया दारी की रीति पर दुनिया से बर्ताव
करते हैं। परन्तु जब प्रभु के अर्पण हो जाते हैं तब प्रभु के वन जाते
हैं। अर्थात् जनसे अर्पण होते हैं तब से सरकारी नोकरी में दाखिल
होते हैं। सरकारी नोकरी में दाखिल होने के बाद सरकार के हुक्म
मुताबिक चलना चाहिये। जब हम प्रभु के अर्पण हो जाते हैं
तब से हमारी रीति भांति बदल जाती है और उसमें कुछ ठोके दरजे
के नये तत्व आ जाते हैं। इस विषय को अच्छी तरह समझाने के
लिये एक मकान का मालिक कहते थे कि दूध से मखन होना है
परन्तु मखन हो जाने के बाद वह फिर दूध में नहीं मिलता वरन्
अलग ही अलग रहता है। वैसे हम भी जब प्रभु की शरण लेते हैं
और उसके अर्पण हो जाते हैं तब दुनिया से अलग रहना पड़ता
है। अर्पण हुआ मकान के व्यवहार से ही लोगों से नहीं मिल सक
ते। क्योंकि व्यवहार से लोगों का चाल चलन धाल मिल जाता होता
है, वे भ्रष्टाकार होता है, अधूरी समझ वाला होता है और मतलबी हो
ता है। परन्तु अर्पण हुआ मकान का चाल चलन इससे उल्टा ही होता
है। इससे दुनिया के अन्दर रहने पर भी तब अपनी घर गृह स्थिति
का समझलाते हुए भी वे व्यवहार से ही लोगों से भिन्न रीति पर चलते हैं, उन
से एक मिल नहीं हो जाते।

जैसे अगिनि बोट सदा पानी में रहता है परन्तु उसके अन्दर उस
के बीच में समुद्र का पानी नहीं भर जाता वैसे ही प्रभु के अर्पण हुआ
मकान भी इसी दुनिया में रहते हैं परन्तु दुनिया की वासनाओं से अ
पना हुद छान ही जाते। इससे उनके दुनिया का दास होना नहीं पड़

ता। अर्पण हुस भक्तों में प्रहृत मता है।

४१८

वहुते रे भक्त भगवान के मन्दिर में थोड़ी देर भक्त बन जाते हैं पर
नु अपने घर में आगांव में से जगार थं धाकर ते समय भक्त न होर
हसकते। जो अर्पण हुस भक्त है वे मन्दिर में, गुरु के पास, सत्गुरु के
पास, गरीबों के पास, मित्रों के पास, कुटुम्ब के पास और शत्रु के सा
थ भी भक्त के भक्त ही रहते हैं। उनमें कुछ फेर बदल नहीं होता। ई
त नावडा बल अर्पण हुस भक्तों में आ जाता है। इससे जैसे दूसरे
कितने ही माशूली भक्त साधु ब्राह्मणों से रह रहते हैं और घर
के आदमियों को हैरत किया करते हैं तथा गाय पर दया रखते
हैं और मधु पर कोष करते हैं वे सावे नहीं करते। वे तो सब को
अपने प्रभु का जीव समझ कर सब के साथ भलाई करते हैं और ह
र भगवत् तथा हर वात में अपनी अर्पणता दिखा देते हैं।

अर्पण हुस भक्तों को अपने अन्दर के दुर्गुणों का लज्जल
की कोशिश करना चाहिये।

बन्धुओ। कितनी ही मराडलियों में, कितनी ही सम्प्रदायों
में, कितने ही सत्संगों में और कितने ही मन्दिरों में कितने ही मनु
ष्य भक्त के नाम से पुकारे जाते हैं और भगवान में प्रेम रखते हुस
जान पड़ते हैं तथा अपने समय का अधिक अंश भक्ति करने में बिता
ते हैं परन्तु अक्सर उनमें कोई भक्त को भी होता है कोई भक्त लो
भी होता है, कोई भक्त कामी होता है, कोई भक्त बहमी होता है, कोई
भक्त निराशावादी होता है, कोई भक्त अन्धकारी होता है, कोई
भक्त बकवादी होता है, कोई भक्त अहंकारी होता है, कोई भक्त वि
लासी होता है, कोई भक्त कठिन कलेजे का होता है और कोई भक्त
सगडलू होता है। इस तरह की भूल में न पड़ने का ख्याल सब हरि
भक्तों को रखना चाहिये। क्योंकि जब वे भक्तों में लगें और ईश्वर
के अर्पण हुस तब ईश्वर के हो गये हैं। इस लिये हे सी से सी भूल

४२०

न भास्वर विद्या उनमें न रहनी चाहिये वरंच जैसे हो वे सेपवि
त्र और स्वच्छ रहना चाहिये मर ले स्वभाव रखना चाहिये औ
र शुद्ध अन्तःकरण से सब के साथ प्रेम पूर्ण वर्तन करना चाहि
ये। किंतु मित्रों या दूसरे भक्तों के साथ ही नहीं, वरंच अपने से
हम दुष्टियों के हर एक आदमी से तथा अपने

४२०

तथा स्वरा विद्यां उनमें न रहनी चाहिये वरंच जैसे हो वे से पवि
 त्र और स्वच्छ रहना चाहिये। मर ले स्वभाव रखना चाहिये औ
 र दुष्ट अन्तःकरण से सब के साथ प्रेम पूर्ण वर्तव्य करना चाहि
 ये। किंतु मित्रों या दूसरे भक्तों के साथ ही नहीं, वरंच अपने
 कामपड़ने वाले इस दुनिया के हर एक आदमी से तथा अपने
 हाथ से भी भलाई का वर्तव्य करना चाहिये। क्योंकि हम प्रभु के हैं
 इस लिये प्रभु जिसमें राजीर है वेसा वर्तव्य हमें करना चाहिये।
 व-धुओं। अर्पण विधि के बारे में और भी बहुत कुछ कहा जा
 सकता है। पर-तु सारे ही हैं कि हमें इस रीति से वर्तव्य करना
 चाहिये कि देखकर दूसरों को भी वेसा ही करने की इच्छा हो। मत
 ल व स ह कि अर्पण हो जाने के बाद हम अपने नहीं हैं; प्रभु के
 हैं। इस लिये प्रभु की योग्यता अनुसार, प्रभु की वंश के अनुसार
 और प्रभु के गुरों के अनुसार हमें वर्तव्य करना चाहिये। और इस
 प्रकार उस की इच्छा अनुसार चलने के लिये सदा परम रूपानुपर
 मात्मा से ऐसी प्रार्थना करना चाहिये कि हे प्रभु। हे साकर कि
 मारी जिन्दगी के बाकी दिन तेरे सेवा स्मरण में जायें और हम तेरे
 अर्पण हो कर रहे। सारे शय ह कि हे प्रभु तू हमें अपना बना ले
 और हमारा हो जा। यही हमारी प्रार्थना है।

१२४ - बूढ़े को सलाह। (१)

घोड़े या बैल बहुत थक जाने पर भी जब अपने घर की तरफ
 मुड़ते हैं तब वही तेजी से चलने लगते हैं। वेसे ही हे बूढ़े जनो। अब
 आपको धर्म के रास्ते में बहुत तेजी से चलना चाहिये। क्योंकि मोक्ष
 धाम हमारा असली घर है। यह संसार तो सिर्फ थोड़े समय के
 लिये है। जहाँ अन्त काल तक रहना है वह हीरे के हमूर का मो

४२१ क्षाधा मही है और उस घर की तरफ जाने का अब आप का समय हो गया है। आप की गाड़ी अब उस दिशा को मुड़ी है इस लिये अब आप को धर्म के रास्ते में बहुत जोर से चलना चाहिये। थोड़े बेलों से जानवर जब थक गये होते वही अपने घर की तरफ जाने के लिये उतावली करते हैं। तब आप जो समझदार हैं, जानी हैं और अनुभवी हैं। इस लिये आपको तो बड़े ही जोर से वाप के घर की तरफ चलना चाहिये।

जिस मनुष्य को बड़ी लम्बी यात्रा करना होता है वह अपनी जरूरत की चीजों की बहुत बड़ी तय्यारी पहले से कर रखता है। ऐसा न करने से लम्बी मुसाफिरी में अनेक प्रकार का दुःख भोगना पड़ता है। इससे बहुत आदमी लम्बी मुसाफिरी के लिये बहुत अच्छी तय्यारी कर रखते हैं। वैसे ही हे वृद्ध सज्जनो। आपको भी अब थोड़े दिनों में बहुत लम्बी यात्रा करना है। क्योंकि मृत्यु के समान लम्बी यात्रा इस जगत में दूसरी नहीं है। इसी से मृत्यु को महा यात्रा भी कहते हैं। अन्तिम से अन्तिम ओर लम्बी से लम्बी यात्रा मृत्यु है। इस महा यात्रा में निकलने के लिये आप का समय आप हुआ है। इस लिये यात्रा में विधान पड़े इस किस्म का सरोसा मान लेने और उसे साभर रखने की तय्यारी आपको अभी से कर रखना चाहिये। हम देखते हैं कि सिर्फ काय में जिल की यात्रा करना हो तो भी पानी पीने के सामान, छाता, कपड़ा, आदि चीजों का बंदोबस्त पहले से कर रखना पड़ता है। अब वारें पखवाए की यात्रा में तो बहुत राह की चीजें लेनी पड़ती हैं और बहुत बड़ी गहरी मोटरी बांधनी पड़ती है। तब विचार कीजिए कि जो लम्बी से लम्बी यात्रा है और जहां से अपनी दृष्टा दुसार लौटना

४२२ नहीं है वह ब्रज हां अनन्त काल तक रहना है वहां जाने के लिये कितनी बड़ी तय्यारी करनी चाहिये। यह बात आप की अकल से बाहर नहीं है। इस लिये हे बाबालोगो। अब जफ़लत में मतरहना वरंच इस लम्बी यात्रा के लिये उचित तय्यारी रखने की ह्द जाकर नो। यही हमारी सलाह है।

४२२ न हीं हैं वरुं च जहाँ अनन्त काल तक रहना है वहाँ जाने के लिये
कितनी बड़ी तय्यारी करनी चाहिये। यह बात आपकी अकल
से बाहर नहीं है। इस लिये देवावालों गो। अवगच्छलत में मतर
हना वरुं च इस लम्बी यात्रा के लिये उचित तय्यारी रखने की क
पा करनी। यही हमारी सलाह है।

वम्बु वन्दर से काठियावाड, कच्छ, गोवा आदि स्थानों के
लिये अगिन बोटा धूटने है। कितने ही अगिन बोटा के धूटने
का या हम नियत रहता है और कितने अगिन बोटा के धूटने का
या हम नियत नहीं रहता। उनमें जिनको चढ़ना होता है वे आद
मी अपना सारे सामान लिये कि नारे बँट कर अगिन बोटा खुल
ने की बाट देखते रहते हैं। वे पहले से ही तय्यारी कर रखें तो
अगिन बोटा खुल जाय और वे पड़े रह जायें, नियत समय पर अ
पने मुकाम पर न पहुँच सकें। वरुं से न पहुँचने में अगिन बोटा
वाले का कुछुकसान नहीं होता वरुं च जिनको उसमें जाना है उ
न्हीं का कुछुकसान होता है। ऐसे कुछुकसान से बचने के लिये चतुर मनु
ष्य पहले से ही वन्दरगाह में जाकर बँटते हैं। जैसे ही कुछुक
सम्पन्न हो। हम आपसे कहते हैं कि आपकी देह कब गिर जायगी
इस का कुछुकपता नहीं है। यह अगिन बोटा कब खुल जायगा इस
का भी कुछुकपता नहीं जानते परन्तु अब थोड़े दिनों में जाना है यह तो
जरूर जानते हैं। उस अगिन बोटा में बँट कर सब देहापहुँचने के लि
ये पहले से उचित तय्यारी कर रखना चाहिये। क्योंकि ऐसा
तय्यारी करने का समय अब आ गया है। इस लिये खबरदार रह
ना कि जिसमें गच्छलत से अगिन बोटा धूटन जाय। मतलब यह है
कि धर्म, ध्यान, परमार्थ, धरम हरे स्त्री के कामकाज का प्रवन्ध
न था ऐसा ही और कुछ करना होता उसे बिना किये ही

चल व ले इस कारवा ल रखना ।

४२३ वावा लो गो। आप को मालुम है कि जिस देश में जाता होता है उस देश का सिक्का अपने पास न हो तो वहां वडी कठिनाई पडती है। क्यों कि भिन्न भिन्न देशों में भिन्न भिन्न सिक्के चलते हैं। इसी तरह इस दुनिया का व्यवहार चलाने में जो धन काम आता है वह कुछ और है तथा ईश्वर के हुजूर जो धन काम आता है वह नुं जो अध्यास में धर्म का धन ही काम आता है। वहां कुछ धन ही काम काम न ही आता और उस न के देस में आप की जाने की न व्याही हो चुकी है। इस लिये अब आप को ऐसा धन प्राप्त करना चाहिये जो उस देश में चल सके। वहां जैसे आने, रूपय, गिनी, नेट, दस्लावेज, पड़े और ईस्ट इंडिया का धन ही आवेगा; वहां तो दला का धन चाहिये, वहां तो चित्त की शान्ति का धन चाहिये, वहां तो प्रभु के नाम स्मरण का धन चाहिये, वहां तो प्रभु प्रेय का धन चाहिये, वहां तो परमार्थ का धन चाहिये, वहां तो अन्तः करण की कोमल वृत्ति का धन चाहिये, वहां तो आनन्द भाव का धन चाहिये, वहां तो शुभेच्छा का धन चाहिये, वहां तो मानसिक वैराग्य का धन चाहिये, वहां तो प्रभु के सब जीवों से थलाई करने का धन चाहिये, वहां तो ईश्वर को कोत भा मन को वहां में रखने का धन चाहिये, वहां तो सत्तों की सेवा करने का धन चाहिये, वहां तो सत्संग का धन चाहिये, वहां तो ईश्वरी ज्ञान का धन चाहिये, वहां तो श्रद्धा का धन चाहिये, और वहां तो आत्मिक धन चाहिये। वहां कुछ चांदी सोने का धन, कम्पनी का गज का धन पाहुंडी पुर्जे का धन काम न ही आवेगा। इस लिये आप को थोड़े दिन में जिस देश में जाना है वहां का धन लेने का उपाय कीजिये। याहि हमारी विनती है।

१२५ - बूढे भोसलाह (२)

पाप कर कर के जो मनुष्य नरक में पड़े है और नरक का दुःख भोग रहे है वही यह चाहते है कि अगर थोडे दिन के लिये हमें जगत में फिर जाने को मिले तो हम वहां जाकर सब मन ध्यान कर

१२५ - बूढ़े भोसलाह (२)

पाप कर कर के जो मनुष्य नरक में पड़े है और नरक का दुःख भोग रहे है वे यहुना होते है कि अगर थोड़े दिन के लिये हमें जगत में फिर जाने को मिले तो हम वहां जाकर खूब भजन ध्यान कर ले और ऐसा कर आये कि जिससे हमारी आत्मा का कल्याण हो। हमें सके लिये वे दुपराते है और वारंवार प्रभु से प्रार्थना करते है कि हे प्रभु। हमें थोड़ी देर के लिये भी पृथ्वी पर फिर भेजे कि जिससे हम मनुष्य के ज्ञान सके और तेरा प्रेम पा सकें। परन्तु अफसोस। उनके पास पढ़ने वाली होती है कि वे नरक से नहीं छूट सकते। इस प्रकार नरक में पड़े भक्त केवल दण्डिताना, हाथ से मौका निकल जाने पर होता और खो देने के बाद चतुर बनना। किस काम का? हमें लिये है बूढ़े बाबा ओ.। अब भी आप के हाथ में जो थोड़ा बहुत समय है उसमें कुछ कर लीजिये और जो सेवने वाले थोड़े बहुत समय से भली भांति लाभ उठा लीजिये। नरक में पड़ने के बाद दण्डिताने को अपेक्षा अभी, जब तक हाथ में समय है तब तक चेतना और उस समय से लाभ उठाना बहुत अच्छी बात है। सो आप के हाथ में जो थोड़ा सा समय बाकी है उससे लाभ उठा लीजिये। लाभ उठा लीजिये।

एक धनी गृहस्थ था। उसकी आंखें कमजोर होने लगीं तो उसने एक चतुर डाकू से अपनी आंखें दिखा दीं। डाकू ने देख कर कहा कि कि थोड़े दिन में आपकी आंखें चली जायेंगी। अबको कुछ देर ही हो सकता। एक दिन जब आप सूरदास बन जायेंगे। यह सुनकर वह अनुभवी गृहस्थ चेतना और अपने भविष्य के सब काम जल्दी जल्दी करने लगा। जैसे दे सावर के अठति बों से हि साव किताब उठा कि सा। कागज पत्र जो रखता चाहिये उसे

रवा। तीर्थ आदि गो करना था वह कर लिया। जो जो चीज देख
ने को थी सब अच्छी तरह देख लीं और ऐसी हर एक प्रकार की त
य्यारी कर रखी जिसे से आंखें जाने पर अकसो ल न हो। इससे कुछ
दिन बाद उसकी आंखों की ज्योति मारी गयी और वह अंधा
होगया। परन्तु इससे लिये प हले से खबरदार होने और सब त
रह को तय्यारी कि घर रहने से अंधा पेड़े कारण उससे दूसरे को
इतना दुखी न ही होता पडा। हे वृद्ध सज्जनो। हम आपसे कह
ते हैं कि जो बुढा पा है वह आप सब को चेताने वाला डोकट्ट र
हे क्यों कि वह आकर कहता है कि अब आप को लम्बी यात्रा क
रनी होगी। बुढापा गुरु है क्यों कि यह आकर उपदेश देता है कि
अब समय निकट आता जाना है। इस लिये चेता। बुढापा देवता
का पुत्र है। वह आकर प हले से खबर देता है कि अब चलने की त
य्यात घाटी होनी जाती है इस लिये जो कुछ सार्थ करता करनी हो
कर लो। क्यों कि समय बहुत थोडा है और करने का बहुत है। ऐसी
चेतावनी से जो आदिमि समझ जाते हैं उनका काम बन जाता है।
जो थोडे दिन को भी याद जान कर भी प्रभु के न्याय की परवान
ही करते, नरक के कष्ट की परवान ही करते और अपनी आत्मा के
कल्याण को परवान ही करने के बहुत दुःखी होते हैं। इस लिये
बुढापा रूपी डोकट्ट र के चेताने पर भी न ही चेते गे और प हले से
ज रूरी तय्यारी न ही कर रखें गे तो बहुत बड़ी खराबी होगी। हे
सो भयंकर भूल से बचना।

हे बुढे चाचा ओ। आपके चेतेने को अवसन्मुख समझ
आगया है। गागर बंधी डोर का अधिक भाग कुल में नीचे जा
पुका है अब सिर्फ अन्त की गो रहा ध में रह गयी है। अगर व

ह गाठ भी हाथ से सरकना मगी तो गागर और डोर दोनों कुल
की नल हरी में बली जायेंगी। वे से ही हे वृद्ध बाबा ओ। याद रख
ना कि आपकी ज्ञानी च ली गयी है, अभी ड अवरुणा भी चली गयी
है अब तो सिर्फ बुढा पे की गाठ हाथ में रह गयी है। वह भी बिस
रुजा मगी तो नरक के कुराड में गिरने में कुछ भी देर न ही लगेगी।

हंगा ठही हाथ से सरकना मगी तो गागर और डोर दोनों कुछ
 की नल दृष्टि में चली जायेंगी। वे से ही हे वृद्ध बाबा ओ। याद रख
 ना कि आपकी ज्ञानी चली गयी है, अबे डोर व रन्पा भी चली गयी
 है अब तो सिर्फ चुड़ा पे की गाठ हाथ में रह गयी है। वह भी जिस
 कसना मगी तो नरक के कुराड में गिरे में कुछ भी देर न हीं लगेगी।
 इस लिये अभी जब तक जिन्दगी की डोर की आखिरी गाठ या बुढ़ापे
 के जो थोड़े वर्ष बाकी हैं उन में आपसे जो कुछ धर्म, दान, ध्यान, जप,
 तप आदि करने बने करली जिये। अगर इस अन्तिम समय में भी
 इस विषय में लाचार रहेंगे तो अन्तकाल की बड़ा ही अकूतोस
 होगा।

अन्तकाल पड़ता वगे जब तब जेहे दुखि।

आप सोचेंगे कि हमने साधन रहते हुए भी कुछ न हीं किया। स
 क ओर इस प्रकार का पड़ता था, दूसरी ओर नरक का कस, तीसरी
 ओर स्वर्ग का सुख, चौथी ओर प्रभु का कोप और पाप की ओर इन
 सब विषयों को अच्छी तरह देखते तथा समझने के लिये आपको
 दिया हुआ ज्ञान - यह सब देख कर बहुत दहपटी होगी और उससे
 भयंकर वेदना उपजेगी। आपको लिये वह समय बहुत दूर नहीं है।
 इस लिये हे वृद्ध बाबा ओ। ये लिये और जे सेवनने से धर्म के रास्ते में, प्र
 भु की तरफ झुकने की रूपा की जिये। यह हो हमारे विनती है।

हे वृद्ध बाबा ओ। दिया सलाह को डि विज्ञान में से जब बहुत कांड़ी
 खर्च हो जाती है और दोषा का को रहती है तब उसे बहुत समझाल
 कर खर्च करना पड़ता है। क्योंकि अगर दूसरी डि विज्ञान पास में
 हो और अन्त की थोड़ी सी कांड़ी भी न गलेगा गल कर दोषा का ल
 ने से पकले ही बुझ जाय तो सारी एत अंधेरे में और जंगल में बाध भा
 लुके भय में विनती पड़ती है। इससे जो आदमी जंगल में रहते हैं ओ

४३) रजि न के पास की दि मास लाई मे से व हुत सी कां डी खर्च हुं र हुती
 है वे वा की व ची थो गो सी कां डी को व हुत स म्हा ल कर खर्च करते हैं
 और उसमें भी रुक ही ल कड़ी हो तो बहुत ही ख्या ल रखते हैं। हे मा
 ननी म बुढे वा का लो गो। हम आप से कहते हैं कि आप की जिन्दगी
 को दि विजा में से व हुत सी कां डी खर्च म हो चुकी है सिर्फ दो चार वा की
 है। अर्थात् आप की जिन्दगी के व हुत व च वी त गये, अब अन्त के कु
 द व र्ष वा की है। इस लिये। जें से व ते वे से ५५ का स दु प योग कर
 ली जिये। उस वा की व ची। दि मा स लाई की कां डी से धर्म का दो पा
 ज ला ली जिये। प्रभु प्रेम का दो पा ज ला ली जिये, जिन्दगी साधन
 कर ले ने का दो पा ज ला ली जिये। और ईश्वर रूपा का दो प ज ला
 ली जिये। न ही तो मरने पर नरक के महा भय कर अंधकार में रह
 जाय गा। इस मूल से व च ना और वे कार सा गा सी ला पर जो ही
 से से सा भय कर दुः ख न भोग गा पड़े इस का ख्या ल रखना। यह ही
 मारी विचारनी है।

१२६ - बूढे को सलाह (३)

४२८
 ए
 से हमारे बूढे वा वा ओ। अब आप बुढापे में जो कुछ ध्यान दा
 न आदि करेंगे व ह आप का र स चूस कर दिल का गुठली दात क
 रने के समान है। जिस समय चढती ज वा तो होती है जब शरीर में
 बल होता है, जब मज में जोश होता है, जब बुद्धि खिलती रहती है
 और जब अने क प्र कार का प्रकृति क सुवी गा होता है उसी समय
 य परम रूपा लु परमात्मा का ज्ञान प्राप कर ले ना चाहिये तथा
 उसी समय इस का भजन कीर्तन करना चाहिये। परन्तु अपने से
 स है कि अपने बह बूढे प्राप्ति का खो दिया है, व ह अन्त मोल अब स
 रंग वा दिया है और जिन्दगी की मिठास का वह व क आप ने खो
 दिया है। अब र स चूसने के बाद वा की व च हुं आप के दिल में

और गुठली के समान आप के बुढापे का समय है जगत के व्यं व
 हारी नियम के अनुसार इस दिल के गुठली के दात से कुछ व ह
 त लाज न ही होता। परन्तु सर्व शक्ति मान परम रूपा लु दया
 के मागर निराधार के आधार, अन्तर्गत ना भ, म क व स ल पि
 ने न म को दया दे ख कर से साल

और मुठली के समान आप के मुठली के का समय है जगत के व्यव
 हारी नियम के अनुसार इस दिल के मुठली के दात से कुछ वरु
 त लाभ नहीं होता। पर-तु सर्व शक्तिमान परम रूपालु दया
 के सागर निराधार के आधार, अनाथ के नाथ, भक्त वत्सल पि
 ता प्रभु की प्रभुता देख कर और इस को दया देख कर हे साल
 गता है कि मुठली के अन्तिम वर्ष की अगर प्रभु की सेवा में अर्पि
 शा किये हो, अगर एक दम आरिखी समय की प्रभु की शरण
 पकड़ी हो तो दयालु प्रभु कल्याण कर देता है और मोक्ष दे दे
 ता है। इस लिये अगर इस विषय में मत लगता हो तो अवगी
 कुद्वन ही विगडा है, अवगी आप के हाथ में थोड़ी काजी है। नेत
 ना हो तो चे तिये और जे से बने बने प्रभु के रस्ते में जागेत बाप
 रम रूपालु परमात्मा का ध्यान करने और शान्ति से जिन्दगी
 विताने का काम कीजिये। वही हमारी अर्ज है। आप जे से वा
 दा वावा लोगो से हम और क्या कह सकते हैं? अन्त में यह ही कि
 जे से चि डी में लिख गे है - थोड़ा लिखता बहुत समय झना
 वे से ही है दा दा ओ। मजत करने के विषय में आप भी थोड़ा
 लिखता बहुत समय झना। यह हमारी विनती है।

हे प्यारे वावा ओ। आज तक आप से सारे प्रयत्नो में ही लगे हुए
 हैं; आज तक आप से सारे की माया में ही पड़े हैं, आज तक पाप दोषों
 के जंजाल में ही लगे हैं और आज तक आप सब प्रकार के अन्धकार में
 ही रह गये हैं। इस से आपने अपनी जिन्दगी प्रभु से दूर दूर रहने में
 ही बिताई है पर-तु अब आप को अपनी इस हालत में देर बदल कर
 ना चाहिए। क्यों कि जो जो जहाज समुद्र में तेजी से चलता है उस
 से भी, जब बन्दर आता है तब केराप डता है और उस को दिक्कत

यी।

४२६ व दलनी पड़ती है। इससे कल घुमा कर ज हाज को दु रो दि शा
 मेलें जाते हैं। हम आपसे कहते हैं कि वे से ही आप का जो हाजगी
 नि किनारे प डू चने को है जिस पर भी वह अभी सला रसा गर की
 ओर ही चला जा रहा है। इसलिये अब उसे कल घुमा कर प्रभु की
 ओर फेरिये। इससे नमो के परहे सा न की जिप्र गा तो आप की जि
 न्दगी कज हाज च हाज पर चढ जाय गा और उससे भारी खराबी
 होगी। इसलिये हे वावा लोगो। जल्दी से ये लिये, जल्दी से ये लिये
 ये, क्योंकि जिन्दगी की नाव फेरने का समय बहुत नजदो क आग
 या है किनारे पास है और लंगर डालने की नया ही हो चुकी है पर
 तु हवा का खुरदूसरी ओर को है। इससे आप की नाव उल्टे ही रा
 स्ते चली जाती है और स हज में आपसे आप सीधे रास्ते आने वा
 ली न ही। इसलिये आपको अपनी नाव को पाल उतार डालना चा
 हिये। और जरा जोर लगा कर उसकी दि शा बदल डालना चाहि
 ये अर्थात् अतीत कसे सार की ओर चले जाते हैं उसके बदले परम ह
 पालु परमात्मा की तरफ झुकना चाहिये। इसलिये हे दादा ओ।
 अब प्रभु की ओर ठलने की रूपा की लिये। प्रभु की ओर ठलने की
 रूपा की लिये।

हे हमारे बूढ़े काका ओ। बहुत तेरे न कय कहते हैं कि वचन में
 कुछ अनुभव नहीं होता इससे सच्चा ज्ञान नहीं हो सकता। नवा नी
 में भी ईन्द्रियां बड़ी जरूर दल होती हैं और मन न ठकता फिरता है
 इससे उस समय भी ठो क तो ए पर मन न ध्यान नहीं हो सकता। फि
 र भी जब न आदमी अपना मन ह्मर में लगाने जाय तो उन्हे बड़ी
 कठिनाई पड़ती है। जबानी एक प्रकार की दीवानी होती है। इ
 से उस समय मन को धर्म के रास्ते में लगाना बहुत कठिन होता
 है। परन्तु हे काका ओ। इस प्रकार की कठिनाई आप को न होई। क्योंकि

कि आप उसे पार कर चुके हैं और अन्धा बुरा बहुत कुछ अनुभवले
 चुके हैं। यह हमी देख चुके हैं कि माया के मिथ्या प्रदे हा में भटकने से
 कितनी खराबी होती है और अब आप के शरीर की सारी ईन्द्रियां
 निर्वल होगयी हैं। इससे जबानो को प्रभु की ओर अपना मन झुका
 ने में जैसी कठिनाई पड़ती है वैसी कठिनाई आप के रास्ते में नहीं है।

४३०

कि आप उसे पार कर चुके हैं और अच्छा बुरा बहुत कुछ अनुभव ले चुके हैं। यह हमारी देख चुके हैं कि माया के पिच्छा प्रदेहा में भटकने से कितनी खराबी होती है और अब आप के हाथों की सारी इन्द्रियां निर्वल होगयी हैं। इससे जबानों को प्रभु की ओर अपना मन झुका देने में जैसी कठिनाई पड़ती है वैसी कठिनाई आप के रास्ते में नहीं है। आप के लिये सीधी और सुन्दर सड़क बनी पड़ी है। अब आप को धर्म के सुगम मार्ग में तथा प्रभु के आनन्दी रास्ते में चलना सीखना चाहिये। आप के लिये सही शांति का उत्तम रास्ता है। अब आप जैसे बने बैठे और सब निष्कम्भी उपाधियों को छोड़कर प्रभु के रास्ते में चाले वे और ऐसा कीजिये कि उस महामंगलकारी पवित्र पिता के नाम का स्मरण हो, उसका ध्यान करा जाय तथा उसके लिये उसके वाज्य के दाता दिया जाय। यही हमारी अर्दाह है।

हे बूढ़े का का ओ। आप अभी अपने मन में सही विचार किया करते हैं कि हमारा फलों का म हो जायगा तो हम भजनभाव में लगेंगे। यह हम बहुत बड़ी भूल है। क्यो कि इस जगत् में जो सांसारिक काम हैं वे कुछ मन सोचे ठग परत ही होते हैं। इसके सिवा एक काम पूरा होने पर दूसरे काम की इच्छा होती है और दूसरा काम पूरा होने पर तीसरे काम की इच्छा होती है। इस तरह जो ज्यो ज्यो वहारी काम पूरे होते जाते हैं त्यों त्यों आशा ठगणा बढती जाती है। और इस बीच में जो ई. हे सावडा धावल ग जाता है कि जरब भरने में बहुत समय खला जाता है। अच्छी बुरी छटा ओका होता इससे सारका प्रवाह ही है। अगर ऐसे बहाने में पड़े रहें तो धर्म के काम में लगने की फुर्सत ही नहीं मिलती। ऐसा करते करते मृत्यु आ जाती है और धर्म के काम पड़े रह जाते हैं। ऐसी भारी भूलत होने देने के लिये हे दादा ओ। आप चे लिये, ऐसे बहाने में मत पड़े रहिये कि फलों का म हो जाये के वा

४३१

द हम मग वत मजन मे लगेंगे । मत को छोड़ लार खेंगे तो हे सेव हा
नो की कमी न ही है । इसका नतीजा यह हो गा कि हे सेव हा ने में
रह जायेगा और धूँध हा भ ध डी भर में चल बसियेगा । इस समय
वडा पछतावा हो गा । हे सो भूल से बचिये ।

हे बूढ़ बाबाओ । थोड़े वर्ष पहले आप स्वयं बहुत छोटे बालक थे
और दूसरों को का का बाबा कहकर पुकारते थे । इस के बाद, कुछ दि
न पहले, आप सुन्दर और लगडेकवान थे और इतने ही समय में बूढ़ हो
गये । यह देखते हैं न ? इसी तरह समय जाते देर ही लगती औ
र शरीर को लभकते भी देर ही लगती तथा मौत आते भी कुछ देर
न ही लगती । इस लिये हे बूढ़ बाबाओ । अब आप जल्द चेति के
और जैसे वने वैसे धर्म के रास्ते में आ जाइये । कुछ समय पहले जब
आप बालक थे अब आप जिन को चाचा, मामा, बाबा, और दादा, कह
ते थे उन में से कोई आज जीता है ? वे सब चाचा बाबा जैसे चले ग
ये वे से अब आप सब के चाचा बाबा हो गये हैं इस से अब आप का
भी बहुत कुछ करने का समय निकट आता जा रहा है । इस के लि
ये दूर क्यों भायें ? आप अपने शरीर को देखिये तो मालूम हो जा
यगा कि आप की पाचन शक्ति छट गयी है, आपके दांत गिरते
जाते हैं, आप की आरबो की ज्योति छट गयी है, आप की चलने की
शक्ति छट गयी है और आप के हाथ का जोर छट गया है । इस तरह
आप के शरीर की सब शक्तियां छटती जाती हैं । यह क्या आप
को धर्म के रास्ते में जाने की चेतावनी न ही है ?

हे बूढ़ बाबाओ । आपके शरीर की शक्तियां बुढ़ापे के कारण
छटने लगी हैं परन्तु आप की जीवात्मा की शक्ति ही बची है ।
आप की जीवात्मा बूढ़ी न ही हुई है । वह तो और चतुर हुई है अधिक
काम अभी हुई है और अधिक जोर से अधिक समय इस से तथा अ

धिक प्रयास प्रयुक्त कर सकने वाली हुई है । इस लिये अब
आप के हाथ में थोड़ा सा समय है । इनके समय में परम रूपालुप
रमात्मा की शरण पकड़ लेनी चाहिये और जैसे वने वैसे धर्म के
राम में लगाना चाहिये ।

हे बड़े चाचाओ । आपके शरीर की शक्ति बची है परन्तु सर्व

धिक्रम ब्राह्म प्रभु को पकड़ सकने वाली हुई है। इस लिये अब
आपके हाथ में थोड़ा सा समय है। इनके समय में परम रूपा लुप
रमात्मा की शरण पकड़ लेनी चाहिये और जे सेवने बैसे धर्म के
काम में लगा जाना चाहिये।

ख

है बुढ़े चाचा ओ। आपके शरीर की शक्ति बची है परन्तु सर्व
शक्तिमान अनन्त ब्रह्मा राड के नाथ की दया न हीं घयी है। उसकी
दया ओर रूपा तो सब के उपर अब राड नाव से सर ही है और
उसमें भी अच्छे, समझदार, नेक ओर धर्मात्मा बूढ़े जनों पर तो उ
सकी विशेष कर अनिष्टाय दया होती है। इस लिये हे नावाओ।
आपको उसकी दया से लाभ उठाना चाहिये और जे सेवने बैसे
म अन्तिम अवस्था में खूब भजन भाव करना चाहिये। यही जिद
गी की मार्ग कता का उपाय है।

१२७ - बूढ़े की सलाह। (४)

इतने व डे जगत में मरते समय जो खाली हाथ चला जाय व
ह सब से भारी भूख है।

श

४३३

एक बडा धनी से ठा। उसके एक देहाती मित्र था। वह दे
हाती बडा हाजिर जवाब ओर कुछ कुछ निदोष दिहागी करो
वाला था। परन्तु वे चार बडा सीधा था। व्यवहार कुसल मनुष्यों
में जे सी चालाकी होती है वैसे सी चालाकी ओर वैसे कुशलता उ
समें न थी। इससे वह धनवान सप्रज्ञता कि यह भूख आदमी है
। यह समय कर से ठने एक दिन दिहागी में अपनी छडी उ से देदी,
उस भोले हंस मुख दे हातीने पूछा कि यह छडी लेकर में क्या करूं
१ से ठने कहा कि अगर तुम से बढ कर को ह मुख तुम्हें मिले तो
उसे यह छडी दे देना; जब तक से लो को ह मुख मिले तब तक उ
पने ही पा सर खना। वह भोला आदमी छडी लगा कर धूमने
लगा। धूमने धूमने उसे बहुत दिन की तग ये पर छडी देने लाया

क कोई आदमी उसने हीं मिला । इससे वह दूरी आप ही ला
गाता और उससे देख देख कर वह उसे ठ उस की दि ली गी उ दाता
और कहता कि क्यो १ तुमसे बढ कर कोई मूर्ख हीं मिलता
क्यो । तब तो मैंने तुम्हे बजु मूर्ख की कही समझा है न १ इ
स तरह से ठ उस की दि ली गी उ दाता; इसके बाद से ठ बहुत
वीमारप डा और मरने के किनारे आगया । दे हातीने उसके पास जा
कर पूछा कि क्यो से ठ जी । क्या करते हो १ से ठने कहा कि अब तो
चलने की तया री में हूं । दे हातीने पूछा - लो ले जे क व १ से ठने
कहा - व हां से कोई न हीं लो ट ता, दे हातीने पूछा - व हा जाने के
लिये कु द सी धा कले वा साथ लिया है कि न हीं १ से ठने कहा
कि य हां का सी धा कले वा वा हा काम न हीं आता । यह मुन क
र दे हातीने कहा कि अब तुम जाने हो तो यह दूरी किस जो दूं १
से ठने कहा - तुमसे कह चुका हूं कि तुमसे बढ कर मूर्ख जो हो
उसी को दे ना । अब फिर क्या पुछते हो १ दे हातीने कहा कि तो
तुम्ही यह दूरी लो । से ठने पूछा - कारण १ दे हातीने कहा कि
जिस स्थान पर अनन्त काल तक रहना है व हां साधन रहने ह
ए भी वे सी धा कले वा जाने से बढ कर मूर्खता और क्या है १ से ठ
जी । मुझे तो य ही जंचता है कि सदा के घर में दू दे हाथ जाने वा
ले तुम्ही सब से बढ कर मूर्ख हो ईस लिये अपनी दूरी अपने पा
सर लो । यह मुन कर उस मरने से जपर पड़े हुए से ठने जित पर
वडा असर प डा और उसने अपनी शक्ति पर बहुत कु द दान पुराव
किया ।

हे बूढे वा वा ओ । यह बात कह कर हम आपको यह मुझता बा हते
है कि आपकी भी अब लम्बे र स्ने की न व्या री हो चुकी है ईस लिये कु

र द सी धा कले वाले राखिस । य ही हमारी विनती है । याद रहता
कि व हां चावल दाल सी धा या, पे डा, ब फी, हलवा पूरी आदिका
कले वा काम न हीं आवे गा व हां प्रभु के पवित्र नाम के जप का सी धा
काम आवे गा; व हां तो ईश्वर के गुण गा न को कले वा काम आवे गा;
व हां तो प्रभु के ध्यान का ना हता काम आवे गा; व हां तो पवित्रता

२ इसी धाकले वाले राखि म । यही हमारी विनती है । याद रहता
 कि वहां चावल दाल सीधे मा, पेडा, बर्फी, इलना पूरी आदिका
 कले वा काम ही आवेगा वहां प्रभु के पवित्र नाम के जप का सीधा
 काम आवेगा; वहां तो ईश्वर के गुण गान को कले वा काम आवेगा;
 वहां तो प्रभु के ध्यान का ना इता काम आवेगा; वहां तो पवित्र नाम
 का कले वा काम आवेगा; वहां भ्रातृ भाव का कले वा काम आवे
 गा वहां प्रभु के अर्थ दिख दुख दान का कले वा काम आवेगा; वहां
 दीनता का कले वा काम आवेगा; वहां भगवत् ईश्वर का कले वा
 काम आवेगा; वहां प्रभु का उपकार मानने का कले वा काम आवे
 वेगा; वहां हरिजन की सेवा करने का कले वा काम आवेगा; वहां
 सत्संग का कले वा काम आवेगा; वहां मनो निग्रह का कले वा काम
 आवेगा; वहां सत्य का कले वा काम आवेगा; वहां दया का कले
 वा काम आवेगा; वहां प्रभु प्रेम का कले वा काम आवेगा और वहां
 ईश्वरी ज्ञान का कले वा काम आवेगा । ऐसा सीधा कले वाले का उ
 पाय करना । यही हमारी विनती है ।

४३५ सबरे के समय जितने लोग गाडी में जोतते हैं उनको संध्या स
 मय छोड़ देते हैं । अगर हठ पकड़ कर रात को भी गाडी चलाया करे
 तो वे लज्जा के विना नहीं रहेंगे । इससे सिवा रात को गाडी चलाने से
 जुठ जाने का भय भी रहता है । हे वूठ बाबा ओ । अब आप को भी अ
 पनी संसारी गाडी खोज देनी चाहिये । क्योंकि आप बहुत गाडी च
 ला चुके हैं और अब आप की संध्या होगी है । इस लिये अब विश्र
 म का समय है । ऐसा करने से आप थक जायेंगे और रास्ते में जुठ
 जायेंगे । ऐसी भयंकर भूल से बचना ।

शा हे बाबा ओ । बुढापे के लिये हमारे साख्य में क्या कहा है आप तो
 नते हैं १ दादाजी । अब आप के सन्यास लेने का समय आगया है
 शा । परन्तु जमाना दूसरा है । इससे शरीर से सन्यास लेने से तो कुछ

हर्जन हीं परन्तु मानसिक सन्ध्या सलो जसूर लेना चाहिये और अपने
 चकीव हुत बातों से दूर रहना चाहिये। अब आप का चौथा पत्र है,
 अब आप की उत्तर अवस्था है और अब आप की अनिम अवस्था
 है। अब सब छोड़ कर छोड़े समय में जाना है और ऐसी जगह जा
 ना है जहाँ से इसरी निले लौटना न ही है कि आपको मालुम हो। इस
 लिये अब चेतने का समय है और सन्ध्या सलने का समय है। परन्तु
 आजकल के जमाने में शास्त्र विधि से सन्ध्या सपालना बड़ा कठिन है।
 इसलिये सन्ध्या सकेवा हरी निल मो को छोड़ दें तो भी तरी निल मो
 को अपने कल्याण के लिये पालना ही चाहिये। ऐसे भीतर के सन्ध्या
 सको ही मानसिक सन्ध्या सकहते हैं। जैसे -

ल
 मानसिक सन्ध्या स माने दुनिया दारी के सब प्रपंच मत से निकाल
 लजलना; मानसिक सन्ध्या स माने घर गृह स्थी का जंजाल मत से
 निकाल लजलना; मानसिक सन्ध्या स माने कुदृष्ट कष्ट इमिया कर
 सबसे मिल जुल कर माफी माग लेना; मानसिक सन्ध्या स माने अप
 ने डपर का जो झअपने वे ठपो तों को, भाई को को या दूसरे सगे सम्ब
 धियों को सोप देना; मानसिक सन्ध्या स माने मत में अन्धी तरफ
 ४३६ य इसम झलेना कि जगत की जो ये सब चीजे दिखाई देती है उन में
 कोई मेरी आत्मा के काम न ही आने की; इसलिये इन सब वस्तुओं
 का मोह मुझे छूटना चाहिये। य इसम झकर ऐसा करने का ना
 म मानसिक सन्ध्या स है। संसार की रचना ही ऐसी है और प्रपुष्टों
 की प्रकृति ही ऐसी है कि जब तक शरीर में प्राण रहें तब तक कुदृष्ट
 कुदृष्ट सुख या दुःख होता ही है। ऐसे सुख दुःख की परवाना करके
 सुख में सदा भाव रखने तथा दुःख में भी सदा भाव रखने का नाम
 मानसिक सन्ध्या स है। मत में जो जो संकल्प विकल्प उठाकरते हैं
 उन सब को छोड़ने और उन के बदले मत ही मत परमात्मा का स्मरण

दो
 रा कि या करने का नाम मानसिक सन्ध्या स है। वचन से छोटे व
 डे प्रपंच करने तथा जिस बात से अपना कुदृष्ट भी मत लव न हो उसमें
 भी मत की हों जाने की आदत पड़ गयी है। इस आदत को छोड़ कर
 मन को एकाग्र करने का परमात्मा में लय करने का नाम मानसिक

हो
 रा कि या करने का नाम मानसिक संन्यास है। वचनसे छोटे व
 डे प्रपंच करने तथा जिस बात से अपना कुछ भी मतलब न हो उसमें
 भी मन की हँसने की आदत पड़ गयी है। इस आदत को छुड़ा कर
 मन को एकत्र करने का परमात्मा में लय करने का नाम मानसिक
 संन्यास है। कुछ में अन्धी कुशिल बनाए हो या धनसम्बन्धी
 कुछ तंगी सतावे तथा आदर मान की बातों में कुछ विद्युत् आवे तो
 भी उन बातों से अलग रहने और उनका धक्का अपने चित परतल
 गते देने का नाम मानसिक संन्यास है। सारांश यह कि स्वार्थ त्या
 ग करना और हठ धरने लिये जीना सीखना तथा उसके अर्पण हो
 कर जिन्दगी बिना नामानसिक संन्यास कहलाता है और ऐसा
 संन्यास लेने का अब आप का समय है। इस लिये देवूठ कावाओ।
 ये सामानसिक संन्यास ले कर हृदय में शान्ति रखना सीखिये ओ
 र जैसे बने वैसे प्रभु से अपने जीव को जोड़े रहिये। यही हमारी विन
 ती है। बुढ़ापा प्रभु को भज लेने का आखिरी मौका है। यह आखि
 री मौका ग्रीहाथ से गप्राप्तो फिर प्रभु दूत हाथ में दंडा लिये तय्या
 रहें और नरक का द्वार खुला पड़ा है। इस लिये यह आखिरी मौका
 खोने की भयंकर झूल मत करना।

१२८ - बूढ़ों की सलाह। (५)

बूढ़ापे की भूलें।

१ - बड़ते रे बूढ़े - आदमियों के घर उनके लडके वाले व डी
 उमर के दुसर इते हैं और वे सब काम सभ्हालने लायक होते हैं
 तो भी बड़ते रे बूढ़े व डत चीनो कामाले का व न ही देते और अ
 र्थ का सब वो झ अपने ही उपर रख कर हैरान हुआ करते हैं। अ
 गरल डके का लायक हो और घर मृदु स्त्री सभ्हालन सकते हैं

५ तब वह न को उन की जिम्मे वारी न सोचना दूसरी बात है पर-उन्होंने
 रे वूठ के लडके व डेला एक होते हैं और अपना काम सम्हाल सकते
 हैं तो भी वे उ-हें सौंपने योग्य चीजें न ही सौंपते त हांत बचाना है
 रा आप धसी बाहरते हैं और व्यर्थ का जंजा ल बेस हा करते हैं तथा सब
 से बिना कारण रस्य चासा करते हैं। वूठ बाबाओ। हे सी भूल से
 बचना। एक तो व्यर्थ दूसरे का बोझ लादना और दूसरे रा र-से साधं
 धा कौन करे १ हे सी मूर्खता कौन करे १ हे सी भूल से बचना।

२- व हुते रे वूठ से ले क अ होते हैं कि अपने छोटी उमर के और
 कभी बुद्धि के लडकों को अपना सब अधिकार सौंप देने हैं पीछे से प
 रिताना मय ह होता है कि कभी बुद्धि न था कम उमर के लडकों से ब हुवे
 झन हीं सम्हालता इससे वे बुरा रास्सा पक डले ते हैं या पैसा खर्च
 करते हैं। बाप कुछ कहने जाय तो बुरा जना कहते हैं और उल्टे उस का
 अपमान करते हैं। इससे बूढा पे में व हुते रे वूठों को ब हुत दुःख होता
 है। उस समय अपना कुछ अधिकार न हीं होता और न अपने पास कु
 ४३८ द चीज होती। इससे सब अत्याचार सहना और मन ही मन मीरव
 ना पड़ता है। ऐसा न होने देने के लिये नाला य क ल डकों को घर का
 सब कारों का सौंप देने से पहले ब हुत सोच विचार लेना चाहिये औ
 र ल डकों में जैसी योग्यता होवे सावर्ता व उन से करना चाहिये। अग
 रवा र इस बात का ख्याल न रहना या तो पीछे से ब हुत है रा न होता प ड
 ता है। हे सी भूल से बचना।

३- व हुते रे वूठ से ले होते हैं जो अपने रस्म रिवाज और खुराक
 पोशाक के नियमों में ही जकड़े रहते हैं। उस में जरा भी फर्क पडे तो
 वे बरदा इत न हीं कर सकते। दूसरी ओर देखिये तो दिन प रा दे
 न न बनाता ब दलता जाता है। इससे जो गों में आचार विचार ब द

ल ते जा ते हैं; अथवा न का ठ ग व दलता जाता है, शिक्षा देने की
 रीति ब दलती जाती है, स्त्रियो न भा पुरुषों की पोशाक में फेर ब
 दल होता जाता है, खुराक में भी व हुते ही नयी नयी चीजें दाखिल
 होती जाती हैं; जेवर का फैलन भी ब दलता जाता है। वूठ य ह हठ
 शा १००० के दे दे सा करते थे इस लिये तूज भी

हा

४३६

लने जाते हैं; अथवा नका ठगव दलता जाता है, शिक्षा देने की
 रीति व दलती जाती है, स्त्रियो तथा पुरुषो की जो शाक में फेरव
 दल होता जाता है, पुराण में भी बहुत रीत वीन की चीजें दाखिल
 होती जाती हैं; जेवर का फैलन भी बदलता जाता है। वूठे यह कह
 करते हैं कि हम अपने जमाने में ऐसा करते थे इस लिये तुम भी
 ऐसा ही करो। परन्तु आज कल के जमाने में बहुत से जवान लडकों को
 वूठे वाप की बात न ही सुनती। क्योंकि उन होने न जाना जाता देखा
 है इससे वे नये जमाने की रीति पर चलना चाहते हैं और वूठे च
 लती आयी हुई पुरानी रीति पर चलने को कहते हैं। इससे वूठे वा
 पे और जवान लडकों में बुरी माओर जवान लडकी में, बुरी साल
 ओर नवीन ढीति रबी व हमें, पुराने विचार के वूठे दो वान और अं
 गरेजी विचारों के अनुसार चले इस नये विचार के जगना धको में म
 नने दह आकरता है। बहुत से वूठे को अपने वक्त की पुरानी पुरा
 नी सब बातें अच्छी लगती हैं और आज के जमाने में जो कुछ न लादे
 र व दल होता है वह उन-हे उल्टा पुल्ला लगता है। जवान लोग नवीन
 रीति को के अनुसार नये नये विचार चल-द करने वाले होते हैं
 इससे उनको वूठे की बातें न ही आती; उन-हे इस बात का आग्रह हो
 ता है कि हम जो करते हैं वही उचित है। वूठे भी बड़े हठीले होते
 हैं। इससे उनमें वाहंकार म नने दह आकरता है। हे वावाओ। ज
 व ऐसा मत नदे हो तब जरूर जमाने की ओर देखने की भी इजाज
 रता और आपसे जहां तक तरह देते वने देने की इजाजत करा। नये
 विचार वाले जवानों को हमारी सलाह है कि सब दम अलग वे ठने
 की हुजमत मत करना वरें; जिसमें पिता राजी रहे-वैसा कोई
 रास्ता निकालने की कोशिश करना। और हे वावाओ। आप भी
 न जाना जाता लम देने की कोशिश करना। अगर नये जमाने की ओ

रन दे खें ओर सब पुराने रिवाज पट्ट हो चलाते जायें तो समझ लें
 ना कि इसमें भी आप न हुन वडी भूल कर रहे हैं। आप की पुराने ज
 माने की नवाबी न देखे जमाने में पूरी पूरी न ही चल सकती। इस
 लिये समझ बूझ कर नये विचार में पड़े हुए जवान लड़कों से व
 हुन हठ कर के थोड़ी न हुन स्वाधीनता देते हुए चलने की कोशिश
 करेना और कुटुम्ब में कलह मचने से बचना। यही हमारी स
 लाह है।

४ - बहुत बूढ़े से है कि बूढ़ापे की कम जोरी के कारण अ
 पना रोजगार धंधा या घर गृह स्त्री का काम उनसे जैसा चाहिये वै
 सा न ही होता और उनके भाई, लड़के या नौकर से यह काम अच्छी
 तरह हो सकता है परन्तु उन बूढ़े को काम करने का और जंगल
 उठाने का ऐसा मोह होता है कि अपने से न हो सकने पर भी वे अ
 पना काम काज अपने प्यारे सगे को न ही सौंपते। फल यह होता है
 ४४० किलड़के बिना अनुभव कर रह जाते हैं और अपनी पड़चब होने से
 काम काज में भूल कर रहे तथा गुरुसा न बघाते हैं। इस लिये अप
 ने से न हो सकने लायक काम में भी अनन्त कल गेर करने की भूल ब
 करनी चाहिए वरंच अपने से जो बात न हो सके या जो काम न ब
 न सके व इ दूसरे को सौंपने लायक हो तो सौंप देना चाहिए और
 आप से सी उपाधि से मुक्त होना चाहिए।

५ - बहुत बूढ़े एक बहुत बडी भूल कर रहे हैं व यह है कि
 अपने शरीर में विलकुल शक्ति न हो, रोग का जोर बढ गया
 हो और मरने की तय्यारी में हो तो भी अपने रूप से जैसे की त
 भाले न देखे की बात सब सच अपने बाल बच्चों को न ही बताते
 और न कही उसे नोट कर रखते। इससे जब वे अचानक आ

खे झूठलेते हैं तब जहा जोर रखा है व रुक ही रह जाता है और कि
 सी के विश्वासी व्यापारी के यहाँ रूप या जमा किमा होता व हम
 लेता है और स्त्री बाल क दुखी होते हैं। याद रहे कि अकल
 दिल से अपने प्यारे सगे से भी पेट की बात न बताते के कारण
 आप न

खे मुहल लेते हैं तब जहाँ जोर खा है व रुक हीर हुआ ता है और कि
ली वे विभासी व्यापारी के प्र हो रूप या जमा कि या हो तो वह या
लेता है और स्त्री वाल क दुखी होते हैं । या दर है कि अहल
दिल से अपने व्यास गो से भी पेट की वात न बताते के कार
ए ही है सी खराबी होती है और ले न देन का साफ़ कि साप न
रखने से ही है सी खराबी होती है । ऐसी भूल से बहुत सम्भल
ना चाहिये । जो धन पैदा करने के लिये हवून को पसीना बनाया है,
जो धन कमाने के लिये अनेक प्रकार का प्रपंच रचा है, जो धन कमा
ने के लिये भूख प्यास सहित है और जो धन कमाने के लिये दूसरों
की खुशामद की है तब अपमान सहित है वह धन अभी जरा सी
भूल के कारण व्यर्थ दूसरा को देखा जाय और जिन स्त्री पुत्रों के
लिये वह धन कमाया है उन के काम न आवे तो इस से बढकर ख
राबी और क्या है १ हे वृज गो । इस बात का ख्याल रखना कि हे
सी भूल न हो ।

४४९

इस प्रकार की बहुत बड़ी भूल होने का कारण यह है कि कित
ने बूढ़े बहुत अधीर भी होते हैं; कितने बूढ़े बडे वह भी होते हैं; कि
तने बूढ़े बडे के गुस होते हैं और कितने बूढ़े अपने स्त्री पुत्रों के बा
र में यह सोचते हैं कि उनके हाथ में पैसा जायगा तो वे उडा देंगे ।
कितने बूढ़े यह सोचते हैं कि हम लडकों को सब कुछ सोप देंगे
तो फिर लडकों को हमारी कुछ परवा नही रहेंगी । वे हमारा क
हुना नही मानेंगे । यह समझ कर वे अपना रूप या धन सा दि
याते हैं । कितने बूढ़े यह समझते हैं कि हम अपना लेन देन
लडकों से कह देंगे तो हमारा मे दरबूल जायगा । इस कारण

वे उनसे लेन देन की बात न ही कहते। पर-तु इसका परिणाम
 यह होता है कि किसी का धन जमीन में गड़ा रह जाता है; कि
 सी का धन व्यापारी के यहाँ गड़ा रह जाता है और किसी का धन
 न कर्मदारों के यहाँ या कम्पनियों के शहरों में रह जाता है और
 रक्षन रहते हुए भी बूढ़े के गुजर जाने पर उस के स्त्री पुत्र दुखी
 होते हैं। इस लिये हे वावा ओ। ऐसी भूल से बचना।

१२६ - बूढ़े को मलाह। (६)

बहुतसे बूढ़े का स्वभाव ऐसा बन जाता है कि उनसे कुछ
 भी न ही हो सकता, उनका शरीर बहुत असक्त हो जाता है
 इससे वे घर के कोने में या खान पर पड़े रहते हैं; पर-तु शौ
 कहें कि ऐसी दशा में भी वे अपनी जीभ को बहाये न ही रख
 ते। खाद्य पर पड़े पड़े भी अपनी जीभ चलाया करते हैं और ल
 डकोंको, बडुओं को तथा तौकर चाकड़ों को झूठ झूठ झंझकर
 ते हैं तथा जिस वाद में ध्यान देने की ठ-है जरूरत न ही उस में भी
 ४४२ सिद्ध रख पाया करते हैं। वे कारण दिन भर वदुवदु व हैं और दौ
 धी-दौंधी बातों के लिये भी आकृत मचाते हैं। अपना खून खोला
 डालते हैं और घर के लोगो को भी हैरान करते हैं। यह सब करने
 का कोइ खास कारण न ही होता, उनका स्वभाव ही ऐसा बिड
 बिडा हो जाता है और उनका मन ही ऐसा अस्थिर होता है कि
 वे सब के साथ दौधो दौधो बातों के लिये झगडा मचाया करते हैं
 और घर में अपना कुछ न बसाता होता भी अडंगा डालते हैं। ऐ
 सा करके वे आप दुखी होते हैं और घर के आदमी भी उनसे न कि
 या जाते हैं। परिणाम यह होता है कि जिन बूढ़े मावाप का आद
 र करना चाहिये उ-ही का अपमान करना पड़ता है; जिन बूढ़े
 मावाप को खुश रखना चाहिये उ-ही को दुखी करना पड़ता है

जिन बूढ़े मावाप का आशीर्वाद लेना चाहिये उ-ही को गाली
 खाती पड़ती है तथा उ-ही का शाप सुनना पड़ता है और जिन
 मावाप के लिये यह मानना चाहिये कि उन भी बहुत दिन जीये
 रहने के लिये यह कहने का समझ आता है कि अब वे चारें बहुत दुः
 ख के लिये यह कहने का समझ आता है कि अब वे चारें बहुत दुः

जिनके मावाप का आशीर्वाद लेना चाहिये ३-ही की गली
रखनी पड़ती है तथा ३-ही का शाप सुनना पड़ता है और जिन
मावाप के लिये यह मानना चाहिये कि अभी बहुत दिन जीये
उनके लिये यह कहने का समय आता है कि अब वे चारे बहुत दुः
ख पार रहे हैं, दुःख का राजा जाते तो अच्छा होता। इस प्रकार जीने
के बदले मरना मनाता पड़ता है। या दरहे कि कुछ बूढ़ों के बिगड़े
हुए म्हाभाव के कारण यह सब खराबी होती है। इस लिये बू
ढ़ों को अपना मत बहा में रखना चाहिये तथा अपने म्हाभाव को
सुधारने की कोशिश करना चाहिये। यत्नरसगुणों की शो निही
यह है कि अपनी मौत बनाने के लिये, जब मरने के किनारे आवे
तब सब से अधिक मलाह का वर्तावरखे। सबको उनका एक चु
काकर, सबको प्रसन्न कर, सबका आशीर्वाद लेकर, सबके
सामने बहुत शांति से प्रभु का नाम स्मरण करते करते मरना चा
हिये। इस के बदले, बूढ़ापे में मरने का समय निकट आने पर
सब से लड़ना पड़े, सबका मत दुखाना पड़े और अपने चारे सगे
सम्बन्धियों को बिना कारण के देना पड़े तो यह कितनी ब
ड़ी भूल है १ बूढ़ापे में रवाट पर पड़े पड़े घर गृहस्थों को मोहर
रख कर अपना मिजाज बिगाड़ने और। व्यर्थ जीन चलाने से ही
यह सब खराबी होती है। हे बूढ़े वाकाओ। ऐसी भयंकर भूल
से बचना।

४४३

बहुतेरे बूढ़े इस संकीर्ण विचार रखते हैं कि अ
गर हम अपने लंड के वालों के लिये धन नहीं बटोर जायेंगे तो वे
बे चारे का खाया मंगे १ बिना अन्न के भूखों मरेंगे। यह सोच कर,
जहां मरने के समय अपने हाथ से परोपकार करके ठास लेना चा

दिखा उस समय भी वे कुछ दान धर्म ही करते और अपने ल
इकों को माल दार बना के लिये आप खा ली हाथ चले जाते हैं। ऐ
सी भूल होने का कारण यह है कि ऐसे बूढ़े वडे मोइवा दी हो
ते हैं इस से वे अपने लइकों को निकसा समय झा करते हैं और मो
चने हैं कि हम उन के लिये धन न दो जायें वो वे भूलो मरेंगे ।
इसका कारण वे मरने समय भी जैसा चाहिये वैसा दान पुण्य न
ही करते । साधन रहने इस भी इस प्रकार खा ली हाथ चले जा
ने और लइकों को अमीर बनाने के लिये आप नरक में जाने से ब
ढ कर भारी भूल और क्या है १ ऐसी भूल से बचना ।

जो आदमी बहुत धन दौड कर मरे उसका, इस दु निद्रा में, व
खात होता है । लोग कहते हैं कि इस ने बड़ा रूप सा कमाया था
यह वस्त्र चतुर आदमी था । इस प्रकार धन दौड कर मरने वाले
का वरदान होता है । पर-तु याद रखना कि उसका प्रभु के घर व
खात न ही होता । जो आदमी खूब दान पुण्य राय करे और मोक्ष
धाम में काम आने योग्य सीधा कलेवा । ले जाये उसी परमाधी
मनुष्य का, प्रभु के घर, वरदान होता है । इस लिये किसी और
समय दान पुण्य न से परेतो न सही पर-तु जन मरने का समय तो
४४४ कठ आने नव तो बूढ़े आदमियों को अपने हाथ से हाकिम दान पु
ण्य अवश्य करना चाहिये, क्योंकि ऐसे वरदान पुण्य करने से बू
ढे मनुष्यों की अंतरात्मा को एक प्रकार की मानसिक शान्ति मिल
ती है, हृदय का बोझ हलका होता है गरीब लो गो का ग आस जैसा
मन्त्रियों का और नौकर चाकरों का आशीर्वाद मिलता है इससे प्र
भु भी प्रसन्न होता है । इस लिये बुढापे में दान पुण्य करने की आदत र
खनी चाहिये । दान ही न ही बरंच खास चाहु कर ऐसे समय अधिक
दान करना चाहिये । पर-तु अंजु सो है कि इस विषय में भी बहुत

आदमी बहुत भूल करते हैं और अपने लइकों को धनी बनाने के लिये
आप नरक में जाते हैं । हे प्यारे दादाओ । ऐसी भूल से बचना ।

पढने वाले भाई बहो । अब आप से यही विनती करता है कि
बड़े आदमियों की ये सब भूलें देख कर आप अपने बूढ़े माता पिता

खती चाहिये। दाना हात हाव रखना।
दान करना चाहिये। परन्तु अंशु सो है कि हल विषये में जीवहुन

३६२

आ दमी बहुत भूल करते हैं और अपने लड़कों को धकी बताने के लिये
आप नरक में जाते हैं। हे प्यारे दादा ओ। ऐसी भूल से बचना।

पढ़ने वाले चाहें व हों। अब आप से यही विनती करता है कि
बुढ़े आदमियों की ये सब भूलें देख कर आप अपने बूढ़े माता पिता
को, बुढ़े हित मित्रों को या बूढ़े पड़ोसियों को उनकी भूलें मत बता
या करना और ऐसी भूलों का ख्याल मन में रख कर पूज्य वृद्ध जनों
को खराब मत समझना वरंच वृद्ध जनों पर जैसे बने वै से इंजित ओ
र हरे हकी दुष्टि रखना, उन्हे उदारता की, दुष्टि से देखना, उन्हे द
या की दृष्टि से देखना, उन्हे क्षमा की दृष्टि से देखना और उनका
भूलों को सहेलने की कोशिश करना। क्यों कि आपके बूढ़े माता
पिता आपके लिये व हकाम किया है जो जगत में और और किसी में
नही बन सकता। और अब भी उन के मन में आपके लिये बड़ा स्नेह है
व आपके स्नेह के कारण ही नरक कूरक दुष्टी का र करते हैं परन्तु
अपनी शक्ति भर हाथ उठा कर किसी को दान नहीं देते। उनका आ
पके ऊपर ईतना बड़ा मोह है। इस लिये उनकी भूल मन में मत रख
ना वरंच उन्हे निवाह ले जाने की कोशिश करना। ऐसा न कर के थू
ठे दूर निधों कि भूल देखा कर तो समझ लीजिये कि आप बहुत
बड़ी भूल कर रहे हैं इस लिये हेनवान व धुओ। आप भी ऐसी
भूल से बचना।

भाईयो और बहो। आप में से जो जो झुल्ले रख दै वे अप
ने माता पिता को झुल्ले सवा विषय पढ कर सुनाने की रुपा करे
ही को न ही वरंच अपने चाचा, मामा, मोसी, फूआ आदि वू
ठे रिहते दाए न भा बूढ़े पड़ोसियों को भी पढ सुनाने की रुपा
करना। क्यों कि ये सब सच्ची बातें समझाने से उनकी आरंभ

का

४४५

खुलेंगी उन्हे असली राखा मिलेगा और वे प्रभु की तरफ प्रभु
सकेंगे। इसमें आपकी बहुत बड़ी सेवा समझी जायगी और
सी सेवा करनेसे आपको भी कुछ पुराय होगा। इसलिये अपने
से काम पढ़ने वाले बूढ़े सज्जनो को ये बातें सुनाने की रूपा करना।
यही हमारी विनती है।

१३० - संत अपने प्रभु को प्रसादना चाहते हैं
और प्रभु अपने सेवकों को प्रसादना चाह
ता है।

इस जगतमें बहुत काम परम रूपालु परमात्मा अपने भक्तों
की मार्फत करता है। जैसे - ओषधालये, धर्मशाला, पाठशा
ला, मन्दिर और अनाथालये का स्थापना आदि जगतमें परमार्थ
के जितने बड़े बड़े काम हैं वे सब बहुत करके आगे बढ़े हुए भक्तों के
हाथसे ही होते हैं। ईतना ही नहीं, भक्तों की रूपा से बहुत आद
मियों के भयंकर रोग मिट जाते हैं तथा भक्तों को अमृत दुष्टि
से काम, क्रोध, लोभ, आदि महादुर्गुण भी नष्ट हो जाते हैं। ये
सब प्रभु का सब बड़ा भक्तों की मार्फत ही होते हैं। इससे सब लोग
४४६ उन कामों को प्रसादना को देते हैं। परन्तु भक्त अपने चित्तमें खू
ब अच्छी तरह समझते हैं कि जो करता है वह सब सर्वशक्तिमान पर
म रूपालु परमात्मा की करता है; हम तो उससे निमिष मात्र हैं
और वह भी बड़ा रूपालु है इसीसे हमें निमिष वताता है। तभी
तो उस के कामों में निमिष मात्र बनने की योग्यता हममें नहीं है
। यह समझकर वे अपने चित्तमें गलत जाते हैं। इससे किसी तरह
का प्रसादना नहीं चाहते यान अपना नाम प्रसिद्ध करना चाह
ते निःसपर भी उनका नाम प्रसिद्ध हो जाय तो वे खराते हैं और

भागते फिरते हैं। क्यों कि उन्हे विश्वास रहता है कि हम तो कुछ
ही नहीं, हम कुछ कर ही नहीं सकते और हममें कुछ दम ही नहीं
है। जो बलिहारी है वह हमारे भाग्य की है। सिर्फ यह समझ
ही है।

मि

४४)

भागते फिरते हैं। क्यों कि उन्हे विश्वास रहता है कि हम तो कुछ
 है ही नहीं, हम कुछ कर ही नहीं सकते और हममें कुछ दम ही न
 ही है। जो बलि हारी है वह हमारे साथ की है। सिर्फ यह हम मझ
 कर नहीं, वरं न सैसा अनुभव करके वे चित्त से स्थिर होते हैं।
 इससे विश्वास पूर्वक यह ही मानते हैं कि किसी के तेल भरने से
 दीया जलता हो और दीया वह अभी मान करे कि यह तेज में
 राही है तो यह जैले ठ चित्त नहीं है वे से हमें जो बल मिला है, जो
 बुद्धि मिली है और दूसरे जो अच्छे साथ मिले हैं वे सब प्रभु की
 कृपा से। इसीसे कुछ कुछ काम हो जाता है। उसमें हमारा क्या है।
 जै से को ई आदमी खूब बढिया पतंग बना कर खूब लम्बी डोर दी
 ल दे और पतंग आकाश में खूब उंचे उडती हो और वह अभिमा
 न करे कि मैं कितनी उंचाई पर हूं तो यह व्यर्थ है। क्यों कि पतंग
 के नीचे रहने या उंचे जाने का आधार वह डोर उडाने वाले के हा
 थ में है। वैसे ही हमें आराध देने वाला हमारा अनन्त ब्रह्मा राउ
 का नाथ है; हम तो निमित्त मात्र हैं। इससे अपने कामों से फूल
 उठने का हमें कुछ भी हक नहीं है। यह हम मझ कर जो सञ्जोस
 न है, सञ्जोस न है, सञ्जोस न है और सञ्जोस न है वे कभी
 अपना नाम सामने नहीं लाना चाहते वरं अपने से हो बैसे प्रभु
 का नाम और उन की महिमा फैलाने का उपाय किया करते हैं।
 व-धुओ। भक्त ज हा है सा करते हैं वहां दुनिया दार लोग
 सक दम उली बाल चलते हैं और मारा सहा आप जलते हैं
 तथा अपना ही नाम फैलाने का हिसा किया करते हैं और सो
 भी सञ्जोस न है। अच्छे अच्छे काम करके नहीं, प्रभु को
 प्रसन्न करके नहीं और अपने हृदय को मनुष्य करके नहीं वरं

चजैसे को ई आलसी र सोई या दोष क चीजों में न मक डाल आवे
और मन में फूला करे कि सब र सोई में ने ही बनायी है वे ले ले सा
री आदमी जर सा कर के अपना नाम प्र सिद्ध करना चाहते हैं
और हर काम में यह दिखावा करते हैं कि हमने किया ।

बन्धुओ । सन्तो में और संतारी लोगो में ईतना अन्तर है कि स
न्तों को प्रभु का देना चाहता है तो श्री वेष्टा लेते शरमाते हैं औ
र संतारी कुछ करते नहीं तो श्री नर्रक का दंडा चाहते हैं । ऐसी
पोल में मत पड़े रहना और जैसे बने वैसे मन्त्रो ब्रह्म हो कर अप
ने सब कामों का दंडा प्रभु को देना और उसका नाम केला ना य
ही हमारी प्रार्थना है ।

१३९ - "दुख में सुमिरन सब करे सुख में
करे न कोय ।"

४४८
ह
वी
सकल जाननेवाला हां सकल जंगी अफस र था । वह बड़ा बड़ा दुख
और ल डवैया था । परन्तु उस के शरीर में कोई आरी रोग था । उ
स का शरीर देखने से ऐसा जान पड़ता कि इस की कजा पूरी हो
चली है यह दो चार महीने में जरूर मर जायगा । वह भी अपने
मन में सोचता कि मैं इस विमारी से नहीं बचूंगा ।

हा
मा
वह जंगी अफसर शरीर से सदा बीमार रहता था परन्तु ल
डने में बड़ा कुशल था । बीमार सरीर से भी वह हर लड़ाई में जाता
और बहुत बड़ी विजय कर ले आता । इस तरह इसने बहुत बड़ी
विजय प्राप्त कर राजा को बहुत देश जीत दिये । राजा उसके
उपर बड़ा खूश हुआ । उसे जंगी अफसर की बीमार तबीयत
पर बड़ी दया आयी । उसने बहुत प्रवीण वैद्यों को बुला कर
उस का इलाज कराया । राजा यह समझता था कि यह जब

ईतना बीमार और कमजोर रहने पर भी इतनी बड़ी बहादुरी दि
खाता है और दुश्मन को जीत लेता है तब भी रोग शरीर हो मेज
र न जाने क्या करेगा । इस लिये हे से आदमी को चंगा करना चा
हिये । यह सोच कर राजा ने वैद्यों से विहोष कर के कह दिया कि

घों

ईतना वीमर और एक मजोर रहने पर भी इतनी बड़ी बहादुरी दि
खाता है और दुश्मन को जीत लेता है तब भी रोग शरीर होने पर
रुन जाने क्या करेगा। इस लिये हे से आदमी को चंगा करता था
हिये। यह सोच कर राजा ने वैद्यों से विरोध करके कह दिया कि
चाहे जितना खर्च हो और चाहे जैसी दवा लगे कुछ फिकर न
ही इस अफसर को अच्छा करो। अगर यह अच्छा हो जायगा
तो मैं तुमको बहुत दत्त दूंगा, वैद्य बड़े ध्यान से इलाज करने ल
गे। दवा असर कर गयी और वह अफसर अच्छा होगया। उस
के चेहरे का रंग बदल गया। उसमें नयी तेजी आ गयी। उसका
शरीर हृष्ट पुष्ट होगया और वह बहुत सुन्दर दिखाई देने लगा।

इसके बाद उस अफसर ने ईस्तेफादा खिल किया और कहा
कि अब मुझ से नौ करीब ही होगी। इस लिये मुझे माफ़ की जि
य और रुजा करके जलटनी नौ करी से छुड़ी दी जिये।

४४६

यह सुन कर राजा को बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने पूछा-यह
क्या जब तुम वीमर थे तब बहादुरी से लड़ते थे और जब अच्छे
हुए तब ईस्तेफादा ईस्तेफादे का क्या कारण है? उस अफसर ने
जवाब दिया कि महाराज। मैं जब तक वीमर था तब तक यह सो
चता था कि इस रोग से न ही बचूंगा। दो दिन आगे पीछे मरना ही
है तब कुछ बहादुरी क्यों दिखालूं? जब थोड़े समय में मर जा
ना है तब कुछ कीर्ति क्यों करया लूं? और जब रोग से भी मरना ही
है तब आपकी सेवा करने करने लडाई में क्यों न मरूं? यह सोच कर
मैं लड़ता था। उस समय मुझे अपने लिये कुछ भय न था। इस
से मैं विजय पाता था। परन्तु अब भी रोग हो जाने पर मुझे मरना न
ही सो जाता, अब मुझे मौत से डर लगता है। अब मैं जी सुरक्षित
गता चाहता हूँ। इससे मैं ईस्तेफादा देता हूँ।

जि कु ड न न रहना चाहिये; जि ड की क्ष रे रे में भी धुल न र
हनी चाहिये; अपना का ल र ह सी ड ग से रहना चाहिये; धो
नियों की कि नारी चूडी दार और फुर पूरा ती होनी चाहिये; दा
ता दाते की जग हर रहना चाहिये; कल म दा वा त व ठि पा होना चा
हिय; वा घ में पौ धो को नि य म पूर्व क सोचना चाहिये; हुआ मत
व न्न पर ही व न वा ना चाहिये; व न्न पर ही धूमने जाना चाहिये; कु
ते को हर रो ज सा बू न लगाना क र न हलाना चाहिये; मो र र गा डी को
हमें शा सा फू र खना चाहिये; र ही को ग ज र वा स जग क पर ही रख
ना चाहिये; घ डी को ह स ड ग से हो लगाना चाहिये कि उस की चे न
दि ख ती रहे; ब हु मा वा रे वा र र माल से जो छ ते रहना चाहिये;
वा हर जाना हो तो वा र वा र सा गु न से मु ण् ड धोना चाहिये; सिर के वा
ल आगे द स आने और पी छे छः आने के हि सा ब ल रहना चाहि
ये; त वे ले में ग न्द गी न रहने देना चाहिये; सा ग न र का री में को ह
वा सी ची ज न आने देना चाहिये और पु स को को खू व शो भने योग्य
आं ल मा री में रहना चाहिये; ह स त र ह वा हर की और कित नी ही
वा तों में व ह से ठ व डी स फा हर ख ता था परन्तु अपने मन को सु धार
ने में स क द म को र था। क्यो कि ह म देखते कि चा य ज रा दे र से मिल
ती तो उस का मि जा न ग र मा जाता। को ह नो कर को हू छो दी सी भू
ल भी कर ता तो उस को चा बु क ठू ठ ना प ड ता। दू ध में थो डी म लाई
आ जा ती तो आ फू त म च जा ती। गा डी के आने में ज रा दे र हो ती
तो व ह जल ते तेल का वै ग न हो जा ता। ना ते द ह से से स दा वि गा ड
र ह ता। छ र मे अपनी स्त्री से भी प्रे म न हीं। परन्तु अभी रि ठा र
र ख ता था। ल ड को से स र ल ना न हीं परन्तु से ठा ह का टि मा क र ख
ता था। आ ल पि न र यो जा ती या क ल म का क त ज रा प्रो ष हो जा ता
तो उस के लि ये से ठ का मि जा न का वू में न रह ता।
किसी जग ह से न्यो ते की चि डी आने में दे र हो ती तो व ह अप

४५९

मान समझता। न होने लग्य जानी जरजरम या कुछ ठंडा हो
तो नोकर की हानमत आ जाती; किसी सभा में आगे की कुर्सी न
मिले तो भीतर से कुठा करता। मुला का तको आया हुआ आद
मी बबू बबू हुआ न करे तो वह आदमी उसे तीन कौड़ी का लगता
था। कोई कि सम्बन्धी बात होती तो वह थोड़ी देर भी बैठ
ने का मन न करता। कहीं अन्य पुरुष की बात भी होती होती
भी वह समझ लेता कि मेरी ही बात है कर रहे हैं। कभी जरूर
या सदी में जाना पड़े तो उसे बड़ी कठिनाई पड़ती। बिना गाड़ी या
डी दूर चलना पड़े तो वह मन ही मन शरमाया करता गरीबों से वा
त भीतर करने में अपनी हानमत समझता और धर्म या तत्व जान की
पुस्तकों में उसका जरूरी मन ही लगता था। क्योंकि उसने अब
ने मन को विकसित नहीं कि या भाषण वा हर की साफ़ पढ़ ही
ध्यान दिया था। इससे उसका मन बहुत तेज हो गया था। बात बात
में उसका मन झटक जाता और इस कारण वह व्यर्थ ही दुःख
हो वह भी दुखी हुआ करता।

यह से ठीक सेवा हर को सपाई में रह गया था वै से एक नरक था
जो अपने मन को सुधारने में ही रह गया परन्तु अपने शरीर को सु
धारने तथा घर गृह स्त्री बलाने की और जरूरी ध्यान नहीं देता था।
उसका मन बहुत उन्ने दरजे का और देवी वृत्ति वाला था इससे वह
दुःख में डार खड़ा था। सबके उपर दया रखता, सब सरंजाम भी
फन होने पर भी खुशी से बलाले जाता; खाने पीने में अवेर सवेर हो
ने की कुछ परवा न करता वे स्वाद का भोजन मिलने पर भी कुछ ख्याल
न करता; वे आराम की जगह सोने को मिलने पर भी दुखी न होता; पढ़
ने को अच्छा कपड़ा मिलने पर भी नहीं शरमाता। अपना आदर
न होने पर भी उसे कुछ फिकर न होती। कोई आदमी उसके विरुद्ध

बोलता तो भी अमन रख मानता। बहुत तत्व जान के गहरे अध्ययन
में लगे रहता परन्तु उसका शरीर देखने से दया आती थी। गाल प
चग्य थे, ओखे धस गयी थीं; शरीर की मुख्य मुख्य नसेवा हर से दि
नहीं देती। में से रस रस गंगा और शरीर सरब कर ल कड़ी बन गया

बोलता तो भी अमन खगमाना। वह तब जान के गहरे अंध मन
मेल गौर होता परन्तु उसका शरीर देखने से दया आती थी। गाल प
भगवन्, ओखे धस गयी थीं; शरीर की मुख्य मुख्य नसेवा हर से दि
खाई देती थीं; पेट सट गया था और शरीर सूख कर लकड़ी बन गया
था। घर में किसी चीज का ठिकाना न था। दरिद्रता चारों ओर घूम
रही थी। घर द्वार गिर पड़ा था। वर्तन में ले, पुराने ओह दूटे फूटे थे।
लडक़े रोया ओह धूल में लोटा करते थे। स्त्री का स्वभाव, प्रतिष्ठा न
मिलने से कड़ा हो गया था। पड़ोसी लोग उस नरक का अनादर करते।
इस तरह सब बातों में उसको असुखी लाया। सारे हाथ इकित्ता हर की
सफाई पर वह कुछ भी ध्यान नही देता था। सिर्फ अपने मन को
सुधारने में ही रूपा पी कर लग रहा था। इससे उसका मन सुधरा
था परन्तु शरीर निर्बल रह गया था और यह स्थिति भी बिगड़ ग
यी थी।

४५३

बन्धुओं। विचार की जितने फिकर हले से ठकी तब रुका हर की
सफाई तथा शरीर सुधारने में ही रह जाना और मन को सुधारने
की ओर जरा भी ध्यान न देना क्या उचित है? और इस नरक की
तब मन को अंकुश में रखने में लगे रहना और शरीर की ब
लि देना तथा अपनी घर यह स्थिति बिगड़ने देना क्या उचित है?
और क्या इसका नाम धर्म है? इसका नाम भक्ति है? और इस तरह
इसकी ही अंग में रह जाने से कल्याण हो सकता है? कहिये कि
नही।

इस लिये बन्धुओं। अगर सच्ची भक्ति करना हो और सर्व शक्ति
मानम हाव इन्धर को रिसा ना हो तो जे सेवा हर की सफाई रखते हैं
वैसे भित्त की सफाई रखना सीखिये और जे सेवा हर को चमकाने

रि का ध्यान रखते हैं वे से मन को चमकाने के लिये जो परम धर्म की
जिसे । हाशिर और मन दोनों के खिले बिना तभी ध्यान का हर दो
नो की सफाई रखे बिना सच्ची शक्ति नहीं हो सकती । इस लिये
सच्ची शक्ति करना हो और हृदय से पवित्र शक्ति होना हो तो इन
दोनों विषयों पर उचित ध्यान दीजिये । उचित ध्यान दो विषयों

१३३ - इस जगत में कोई काम होता नहीं है ।

४५४

भाईयो । एक ही किस्म के काम से इस जगत का व्यवहार न
हो चल सकता ; इसमें किस्म किस्म के काम होने हैं । आप अन्न
ने ही घर का दुष्टा नली जिये । एक घर में दस आदमी हो तो वे
भी हर एक जगति न भिन्न समय पर भिन्न भिन्न काम करते हैं । जे
से - कोई रसोई बनाता है, कोई सागतरकारी चीरता है, कोई का
गार से सौदा लाता है, कोई लंड का खेलाता है, कोई नौकरि करता
है, कोई लंड को पटाता है, कोई पानी भरता है, कोई वर्तन धोता
है, कोई सीता पिरोता है, कोई फुलक पटाता है, कोई वीमार के पा
सर्वे ठकर उस की सेवा सहायता करता है, कोई घर का हिसाब कि
तावर रखता है, कोई आगे हुए आदमियों से मुलाकात बात कर
ता है, और कोई वैठे वैठे पूजा पाठ करता है, इस प्रकार एक ही घर के
आदमी भी जुदे जुदे वक्त पर जुदा जुदा काम करते हैं । इसी से
कहें तो एक छोटे से घर का व्यवहार भी न चल सके । तब विचार
कीजिये कि किस्म किस्म का है जगत् रचना किये बिना जग
त का व्यवहार कैसे चल सकता है ? जगत का व्यवहार चला
ने के लिये अनेक प्रकार का है जगत् रतो चाहिये ही ।

घर की कोठ कहें हमारे एक हाशिर के अन्दर भी मुदी मुदी
इन्द्रियों को जुदे जुदा काम करना पड़ता है । जैसे - कान सुन
ने का काम करते हैं, आंखें देखने का काम करती हैं, मन विचार

ने का काम करता है, चमड़ा स्पृशने का काम करता है,
नाक सुंघने का काम करती है, दांत चबाने का काम करते हैं, पै
र चलने का काम करते हैं, जीभ स्वाद लेने का तथा कोलने का का
म करती है, हाथ वस्तुओं को उठाने का काम करते हैं, अंतरीखू

होना का काम करता है, आंखें देखने का काम करती हैं, मन विचार
ने का काम करता है, आंखें देखने का काम करती हैं, मन विचार

३६२

ने का काम करता है, चमड़ा रूपा ही समझने का काम करती है,
नाक सुंघने का काम करती है, दोत चवाने का काम करता है, पै
र चलने का काम करता है, जीभ स्वाद लेने का तथा बोलने का का
म करती है, हाथ वस्तु ओठठाने का काम करता है, अंतरीखू
रा को पचाने का काम करती है और के फूटा सांस लेने का का
म करता है। इस प्रकार एक हाथी के अन्दर भी मुदी मुदी ई
न्द्रियां, मुदी मुदी वृत्तियां तथा मुदे मुदे अवयव मुदे मुदे
काम कर रहे हैं। ऐसा किये बिना हाथी रटिकन हीं सकता।
तब विचार कीजिये कि मुदे मुदे रो जगार धंधे किये बिना
जगत का व्यवहार कैसे चल सकता है? इस लिये सब अर्थो
तरह समझ लीजिये कि जगत को सुन्दर बनाने के लिये और
जगत में ईश्वर की महिमा बढाने के लिये कि स्म कि स्म करे
जगार धंधे की बहुत जरूरत है। जैसे - किसी को डाकट हो
ना पसन्द है, किसी को वकील होना पसन्द है, किसी को व्यापा
र करना पसन्द है, किसी को पढन में भरती होना पसन्द है, कि
सी को कारीगर का काम पसन्द है, किसी को मत्त खेती का रीतें
लगना है, किसी को नाव चलाने का काम पसन्द है, किसी को गा
डी होंकने का काम पसन्द है, किसी को नये नये आविष्कार क
रना पसन्द है, किसी को इंजीनियरी का काम पसन्द है, किसी
को पशु पालने का काम पसन्द है, किसी को मुनी प्रगम हता
होना पसन्द है, किसी को इन्जियर बनाने का काम पसन्द है
और किसी को धर्म का उपदेश देना पसन्द है। इस तरह जि
अभिन्न मनुष्यों को अनेक अनेक काम करना पड़ता है। ऐसा
प्रकार होता है, कि तब आदमियों को आस पास का अड्डल

४५५

संयोग होता है। कितने आदमियों को लाचारी दर जे करना पड़ता है और कितने आदमियों के दिल में होसला होता है ! इस तरह कितने ही कारणों से भिन्न भिन्न मनुष्यों को भिन्न भिन्न रोग गार करना पड़ता है। परन्तु उन सब मनुष्यों का उद्देश्य एक ही होता है। यानी अपने काम से अपनी उन्नति करना और दूसरों को प्रसन्न रखना उद्देश्य है। इसी उद्देश्य से इस दुनिया में किसी किसी के काम होते हैं। इस लिये बन्धुओं। किसी काम को दूसरे समय करने की भूल म करना और अपने से विभिन्न काम करने वाले का और किसी काम को करने वाले आदमियों का तिरस्कार मत करना। वरंच सब आदमी अपने अपने संयोग के अनुसार भगवद् उद्देश्य से भिन्न भिन्न काम कर रहे हैं और अपना व्यवहार चलाने के लिये आगे बढ़ने के लिये तथा प्रभु को रिसाने के लिये ही कर रहे हैं - यह समझ कर सब से भिन्न और उदारता का वताव करना। जो काम करने को पड़ जाये, जो कर्तव्य पालना पड़े उसे उंचे से उंचा उद्देश्य रख कर करना और दूसरे किसी को दूसरा मत समझना। तब प्रभु आपका कल्याण करेगा।

१३४ - परमार्थ के काम में कठिनाई आये तो सफलता का उपाय।

इस भगवत् में जो पक्षे हरि जगत् है उन्हें परमार्थ का काम करना बहुत जाता है। परमार्थ के काम करने से अपनी आत्मा को एक प्रकार का आभास विकसित होता है, परमार्थ के काम करने से जिस जीव की मदद हो उस के अन्तःकरण का आशीर्वाद मिलता है और परमार्थ के काम करने से जिन्दगी सुधरती है

तथा प्रभु प्रसन्न रहता है। इस लिये परमार्थ का काम करना हर एक हरि जगत् का स्वासकर्तव्य है यह समझ कर बहुत भक्त परमार्थ के काम किया करते हैं। जैसे - कोई आदमी खराब आदमियों को अच्छी सलाह देता है। कोई आदमी पापियों का

तथा प्रभु प्रसन्न रहता है। इस लिये परमार्थ का काम करना
 हर एक हरिजन का स्वासकर्तव्य है। वह सप्रसन्न कर बहुत रम
 न परमार्थ के काम किया करते हैं। जैसे - कोई आदमी खराब
 आदमियों को अच्छी सलाह देता है; कोई आदमी पापियों का
 पाप छुड़ाने के लिये परिश्रम करता है, कोई आदमी दुखियों को
 को दिलासा देता है; कोई आदमी हाटे दुओ को हिममत देता है
 कोई आदमी रोगियों का रोग मिटाने की तदवीर करता है; कोई
 आदमी मग्न से जप पढ़ते हुए मनुष्यों को शान्ति देने का काम
 करता है; कोई आदमी मरने के बाद का शोक मिटाने का काम
 करता है; कोई आदमी गरीबों को रोजी दिलाने का काम करता
 है; कोई आदमी विद्या विद्यों की मदद करता है; कोई आदमी
 दूसरे के किसी दुःख अपराध की माफी दूसरे से दिलाता है; कोई
 आदमी कुमार्ग से पड़े हुए जवानों को सुमार्ग वताता है; कोई आ
 दमी अज्ञानी लोगों में ईश्वर का ज्ञान फैलाता है और कोई आद
 मी गाय भैंस भेड़ बकरी तथा पक्षियों की भलाई का काम
 करता है। इस तरह परमार्थ की अनेक दिशाएँ हैं; उन सब दि
 शाओं में कोई कोई आदमी कुछ कुछ काम किया करते हैं। तो भी
 अक्सर बहुत ही परमार्थ अपने काम में निराशा होते हैं। जैसे -

कोई विगडेल कोकरा वारं वार अच्छी सलाह देने पर भी न
 ही सुधरता। किसी ठीले ठाले शिष्य को गुरुवारं वार उपदे
 श दे और उस पर बहुत ध्यान रखे तो भी उस शिष्य में भक्ति नहीं
 आती। कोई खोदे सभिमानी मनुष्य अपने बन्धुओं को अच्छे
 रास्ते ले जाना चाहता हो तो भी लोग उसे नहीं मानते। किसी
 कनू सधनी को बहुत समझाया जाय कि कुछ परमार्थ करो तो

भी य हवा त उल्टे न हीं जं नती। किसी अ न्या चारी हा किमसे अ
 र्ग की जाय कि आप जराम दिल व नि प्र तो भी वह न हीं मान
 ना। किसी कुटुम्ब कल ह व ठाते वाले से कहें कि अपना सगज
 आपस में नि वरा लो अ दाल द मैं जा कर म ही र व रा व म त करो तो
 भी य हवा त उस की समझ में न ही आती। कोई कोई अ भे आ
 द मी भी कभी कभी म मता में आ जाते हैं तो उस म मता को दौड
 ने के लिये बहुत क हने पर भी वे न ही मानते। कोई सरदार अप
 नी विरां दरी में सामा जिक सुधार के लिये बहुत परिश्रम कर
 ना है परन्तु उसका परिश्रम उस समय कुटुम्बाय न हीं आता।
 कि तने ही ना मि को को प्र भु के रा स्ते में लाने के लिये कि तने हीं
 स ग्गन अनेक युक्ति कां ल गते हैं परन्तु उन पर कुटुम्बी असर
 न हीं पहुँचा। इस प्रकार बहुत जग ह पर मार्थ के काय करने में
 भी बहुत कठि नाईयां प डती हैं। य हात क कि ब डी ब डी कठि ना
 ईयां भोगने पर भी व हुधा सोचे हुए का म में सफल ना न हीं हो
 ती। उस समय क का करना चा हिये और ऐ से मो के पर के से स
 फल ता जाना चा हिये य ह आप जानते हैं १ अगर ठी क ठी क पर
 मार्थ करना हो तो इ र ह क पर मार्थ हरि ज न को ई स वि ष य की
 कुंजी जान रखना चा हिये। व ह कुंजी आप जानते हैं १ ई स के लि
 ये सें तक हते हैं कि

ज व तु म्हे अपने हु न का मो में सफल ता न मिले त व उस के
 लिये परम ह्मपा लु परमा त्मा की परम प्रे म से प्रार्थना करना।
 प्रार्थना केवल से और प्र भु की ह्मपा से तु म अपने परमार्थ के का
 मो में सफल ता पा जा ओगे। क्योंकि जो काम और किसी तर ह
 न हीं हो सक ता व ह प्र भु को सा भर खने से प्र भु को हृ दय में
 रखने से, प्र भु को हृ दय में रखने से हो सक ता है। व न्धु ओ। या

द र ख ना कि प्र भु सब से बडा सा श्री दार है। ई स सा श्री दार को
 अपने सा व रखना जिसे आ जा ता है उस की प हुं च व ड जा ती
 है और उस के व न को का जा दू सा असर हो ना है। प्र भु की प्रार्थ
 ना करने से प्रार्थी भ क्त में प्र भु के गु रा आ जाते हैं; प्र भु की प्रार्थ

द रखना कि प्रभु सबसे बड़ा सा श्री दार है। इस सा श्री दार को
 अपने सा भरखना जिसे आजाता है उसकी जड़ें बढ जाती
 हैं और उस के वजन का जो दूसरा असर होता है। प्रभु की प्रार्थना
 करने से प्रार्थना करने में प्रभु के गुण आजाते हैं; प्रभु की प्रार्थना
 करने से विश्वास बढता है; प्रभु की प्रार्थना करने से हृदय
 में नशा बल आता है; प्रभु की प्रार्थना करने से अन्तःकरण में
 पवित्रता आती है; प्रभु की प्रार्थना करने से उत्तम लक्षण नर
 प्रभु से एकता होती है; प्रभु की प्रार्थना करने से अहंभाव छूट
 ता है और नश्वरता आती है; प्रभु की प्रार्थना करने से दृष्टि विज्ञा
 ल होती है; प्रभु की प्रार्थना करने से सद्बुद्धि प्राप्ति होती है और
 प्रभु की प्रार्थना करने से प्रभु की सामर्थ्य मिलती है। परमार्थ
 के जो ओर किसी तरह नहीं हो सकते वे कठिन काम भी ईश्वर
 को सा भरखने से हो सकते हैं इसमें कुछ संदेह नहीं है। इसलिये
 ये प्रभु को अन्तःकरण में पधार कर उसकी प्रार्थना करने के वा
 द परमार्थ के शुभ काम की जितने व कठिन जान पड़ते हूँ का
 मैं में भी आप को बहुत सफलता मिल सकेगी सो प्रभु
 की सा भरख कर परमार्थ के काम की जितने। प्रभु को सा भरख
 कर परमार्थ के काम की जितने।

१३५ - सगे सम्बन्धियों के मरने का अफसोस
 करने में मत रहना।

इस जगत में देवी वृत्ति वाले बहुत आदमी हैं; उन्हें स्वभा
 वतः पूर्व के संस्कारों से हो भक्ति करना आता है। परन्तु उनमें
 कितने ही आदमी भक्तिके नियम नहीं जानते इससे उनकी भ
 क्ति अधूरी रह जाती है। अगर सच्चे भक्त होता हो तो पहले
 भक्तिके नियम जान लेना चाहिये।

अ भक्ति ठिकने के लिये मन को शान्ति में रखने की जरूरत है
और मन को शान्ति में रखने के लिये माया का मोह घटाने की ज
रूरत है। कहां कहां जीव मोह में पड़ जाता है वह जान लेना भा
दिये तथा उससे मन को हटाने का उपाय भी हरिजनों को जा
न लेना चाहिये।

बन्धुओ। इस जगत् में बहुत चीजे मोह उत्पन्न करने वाली
हैं परन्तु उन सबसे सगे सम्बन्धियों की मृत्यु का प्रसङ्ग बड़ा ही
दुःखदाई होता है और जब देव योग से ऐसा अनिच्छित दुःख
दायक प्रसङ्ग आपड़ता है तब मनुष्य अपने धीरे जल से काम नहीं
ले सकते। उस समय धीरे जल के पास से बिसक जाना है;
इससे वे बहुत दिलगीर होते हैं और हाय हाय करते हैं। यहाँ
तक कि बहुत दिनों तक इसी में रह जाते हैं। ऐसा होने देने
के लिये हरिजन कहते हैं -

कोई सात्री छोड़ पर चढ़ कर विदेश जाता हो और उसका
छोड़ा कहीं रास्ते में मर जाय तो क्या वह सात्री वही वेगारह
हता है? नहीं। वह आगे बढ़ता है। उसका छोड़ा चाहे जो
तथा अच्छा रहा हो चाहे जितना कीमती रहा हो चाहे जैसा
जगत रहा हो, चाहे जैसा लाभ दायकर रहा हो और चाहे जै
सा प्यारा रहा हो परन्तु उसके लिये सात्री वही वेगारह ही रहस
कता। अगर साही छोड़ा मरा है वही वह मुसाफिर वेगारह तो
इससे लाभ ही क्या है। वैसे ही याद रखना कि यह दुनिया सब
धर्मशाला है। धर्मशाला में जैसे मित्र मित्र सात्री मित्र मित्र
समस्त एक हो जाते हैं वैसे हम सब सात्री इस धर्मशाला में मि
ल गये हैं। धर्मशाला की ओर कब तक रह सकेंगे? वह तो जो
उस समय में बिछुड़न होगा ही। इसमें कुछ आश्चर्य नहीं है। वैसे

अपने सगे सम्बन्धियों, हित मित्रों तथा पड़ोसियों से, चार दिन
आगे या पीछे संग हो डूबा ही पड़ेगा। इसमें कुछ सन्देह नहीं है।
इसलिए ऐसे मोह पर से कलपने में ही न पड़े रह कर आगे बढ़

अपने सगे सम्बन्धियों, हित मित्रों तथा जड़े सियो से, चार दिन
आगे या पीछे संग दौड़ा ही पड़ेगा। इसमें कुछ सन्देह नहीं है।
इसलिए ऐसे लोगों पर ऐसे नेक लपने में ही न पड़े रह कर आगे व
दने की कोशिश करनी चाहिये।

कितने ही भक्त यह कहते हैं कि यह सारा जो है वह पंथि
को के जमा होने के ऐसा है। एक पेड़ पर तरु तरु की भिडियां
एक जगह हो जाती हैं और सब रेंड कर त्रिधर तिधर चली जा
ती हैं। वैसे ही इस जगत का व्यवहार है कर्म संग्रह से थोड़े सभ
के लिये हम सब मिल गये हैं और प्रारब्ध का भोग पूरा होने
पर लाचारि दरजे अलग हो जाता पड़ता है। इस लिये मन को दृ
ढ़ रख कर जो सेवने वाले उस सभ के ऐसा करना चाहिये कि शोक
न पड़े।

कितने भक्त यह कहते हैं कि यह जगत एक चलती रेलगा
डी के समान है। एक डबे में बहुत आदमी बहुरंग के हैं परन्तु
सब को ज्यों ज्यों अपना स्टेशन आवे त्यों त्यों उतर जाता है। और
स्टेशन आने में डेढ़ नही लगती। इस लिये रेल में बैठे हुए
मुसाफिर की दो स्त्री बहुत देर तक नहीं ठहर सकती। वैसे ले
न देन के सम्बन्ध से हम भी एक कुटुम्ब में, एक घर में, एक पड़ो
स में, एक गाव में या एक जाति में आगम्य हैं। परन्तु यह स
म्बन्ध अन्ततः नहीं टिक सकता, आगे या पीछे वाली कारी कु
ट्टी जायगा, इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है। हम जानी हैं
तब एक दूसरे के लिये शोक करने में कब तक पड़े रहेंगे। अगर
शोक करने और पिछड़े रह जाने में बहुत सभ्य रखो दे तो इससे
फायदा ही क्या है? इस सब विषयों को विचार कर मोह छलना
चाहिये और मन को बहा मे रखना सीखना चाहिये। जब से भी

वा गो भी बहुत चोट लगने लगी मरत था मरि सो हाती है ओ
र तभी प्रभु की महिमा सप्रशमे आती है तथा तभी प्रभु का प्रे
म ठिक सकता है। इसलिये इस बात की समझा लरखना किस
मे सम्बन्धियों के परने पर बहुत मोहन हो ओर शोक में बहुत
समय न निकल जाय तथा आप जहां के तहां न पड़े रहना है।

१३६- ईश्वर की अलौकिक रूपा के वि
षय में।

४६२
इससे सार में तथा परलोक में जो सबसे उचा ओर सबसे भे
द वस्तु है वह ईश्वर की रूपा है। ईश्वर की रूपा होता जिस
प्रकार का लाभ चाहे आपसे आप मिल जाता है। इस प्रकार
राउ में ऐसी को ईवस्तु नहीं है जो ईश्वर की रूपा होने पर भी
न मिल सके। मतलब यह कि सारे ब्रह्माण्ड की चीजें ईश्व
र रूपा से मिल सकती हैं। इसलिये ईश्वर रूपा बहुत बड़ी
बात है। परंतु याद रखना कि महात्मा ईश्वर की रूपा के दो भे
द हैं। एक प्रकार की रूपा को लौकिक रूपा कहते हैं। इस
लौकिक रूपा से धन मिलता है, प्रतिष्ठा मिलती है, राजगा
र धंधे में वरकत होती है, स्त्री पुत्रादिका सुख मिलता है ओ
र दृष्टि की तन्दुरुस्ती तथा लम्बी आयु का सुख मिलता है।
इस प्रकार जिस रूपा से दुनिया के वादसी सुख मिले वह लौ
किक रूपा कहलाती है। जिस रूपा से मनुष्यों में सद्गुण
आवे ओर उनका मन प्रभु की ओर झुके वह अलौकिक रू
पा कहलाती है। उसी अलौकिक रूपा के विषय में हम सब हां
कहना चाहते हैं। लौकिक रूपा बहुत छोटी सी बात है; अलौ
किक रूपा ही महत्व की बात है ओर इसी में सच्चा कल्याण।

है। इसलिये ईश्वर की अलौकिक रूपा सम्बन्धी बातें जहां
तक वने जान लेना चाहिये।

वन्द्यो। मदात्ता लोग अलौकिक रूपा किस कि कहते

है। इस लिये दृष्टर की अलौकिक रूप सम्बन्धी बातें जान
तक वने जान लेना चाहिये।

वन्धुओ। महात्मा लोग अलौकिक रूप किसे कहते हैं यह आप जानते हैं १ अलौकिक रूप माने अंतर चक्षु, अलौकिक रूप माने दिव्य दृष्टि और अलौकिक रूप माने ईश्वरी ज्ञान तथा ईश्वरी प्रेम। ऐसी अवशोल वस्तुएं ईश्वरी ओर से मिलने को सन्त अलौकिक रूप कहते हैं। यह रूप माद यालु प्रभु सब के उपर उतरता है परन्तु बहुत ही थोड़े आदमी इस रूप को पकड़ते हैं। बाकी बहुत आदमी तो इस रूप को व्यर्थ ही गंवा देते हैं। अब यह ज्ञान लेना चाहिये कि जिन मनुष्यों पर ईश्वरी अलौकिक रूप उतरती है और जो इतिजत इस रूप को पकड़ते हैं उनमें क्या क्या फेर बदल होता है। इसके लिये सन्त यह कहते हैं कि-

जिनके ऊपर ईश्वर की कृपा उतरती है वे प्रमुख निर्मल हैं
तो बलवान हो जाते हैं; वे बिना बुद्धि के हो तो भी बुद्धि सलीब
न जाते हैं; वे कंजूस हो तो उदार बन जाते हैं; वे पापी हो तो पुण्या
त्मा बन जाते हैं; वे क्रोधी हों तो शांत बन जाते हैं; वे और वे ना
स्तिक हो तो बहुत आस्तिक बन जाते हैं। इस तरह गति बदल
जाती है और नये विचार के आदमी बन जाते हैं। यो जो फेर ब
दल होता है उसको सन्त ईश्वर की अलौकिक कृपा कहते हैं। ई
स के सिवा जिन पर ईश्वर की अलौकिक कृपा उतरती है उनमें औ
र भी बहुत कुछ फेर बदल होता है। जैसे - पहले ईश्वर भक्त से उ
त्त काजी उबता हो तो अब आनन्द आता है। पहले वे प्रभु प्रेमी न
कों कों ठोंगी समय झूते रहे हों तो अब उन्हें अपना मन्त्रासगा स
म झूते हैं और दुनिया में उन्हीं को सब से बढकर प्रतिष्ठा यो

ग्यसमझते हैं। पहले धर्म के जो काम दुसरे को देखा देखी या किसी लोभ से करते रहे हो तो अब जो कुछ करते हैं वह विश्वास से करते हैं, निष्काम भाव से करते हैं और प्रभु के अर्थ करते हैं। इस प्रकार का फेर बदल हो जाने को हम ईश्वर रूपा कहते हैं।

जब ईश्वर रूपा उतरती है तब हरिजनों में इस प्रकार का फेर बदल हो जाता है। परन्तु इस रूपा को संव प्रकरना न आवे, इस रूपा को पड़े रखना न आवे और इस रूपा से लाभ उठाना न आवे तो वह रूपा लौट जाती है। ऐसा न होने देने के लिये सन्त कहते हैं कि प्रभु रूपा को जगाये रखने का मुख्य उपाय है - सदा सत्संग करना, भजन करना, कीर्तन करना, व्रत करना, धर्म के नियम पालना, परमार्थ के काम करना और यह सब करने में स्वार्थ को आगे न रखना वरन् स्वार्थ त्याग कर सब कुछ प्रभु के प्रीत्यर्थ करना। ऐसा करना आवे तो प्रभु रूपा जगी रहती है और दिन दिन बढ़ती जाती है। इस प्रकार भक्तों के ईश्वरी रूपा को बढ़ाना ही हरिजनों का मुख्य काम है। इससे बढ़ाने का उपाय करना चाहिये।

४६४

कितने आदमी यह पूछते हैं कि जिन हरिजनों पर ईश्वर की रूपा होती है उनके भीतर पाप होता है कि नहीं? इसके उत्तर में जानना चाहिये कि जिन मनुष्यों पर ऐसी रूपा नहीं है उनमें बहुत ज्यादा पाप होता है और जिन पर रूपा उतरती है उनका पाप दिन दिन घटता जाता है। यद्यपि जिनमें पापों में बहुत कुछ पाप सकल नहीं जाता - वह जातार होता भक्त का काम बहुत ही बढ़ जाय और बहुत ही उचे दरजे पर जाय परन्तु यह सब धीरे धीरे होता है। इससे पहले मोहि, व्यभीचार, विश्वासघात, जीवहत्या आदि पाप न हों और भज

न ध्यान तथा दान हुआ करेगा भी ईश्वर रूपा जाती नहीं रहती। मतलब यह कि चित्त में छोटे छोटे पाप होने पर भी ईश्वर की अलौकिक रूपा रह सकती है। ऐसे पापों को दमन हो जाते। उन्हें निकालने के लिये न कुछ बड़ी लड़ाई करनी पड़े

न ध्यान तथा दान दु आकरेता भी ईश्वर रूपान्ता नी न ही रह
ती। मतलब यह कि बिना में छोटे छोटे पाप होने पर भी ईश्वर
भर की अलौ कि क रूपार इस क नी है। ईसा पाप के दम न
ही जाते। उन्हे निकालने के लिये बहुत बड़ी लडाई करनी पड
ती है। इस लिये ईसा वात का खास ख्याल रखना चाहिये कि
किसी तरह का बडा पाप न हो जाये।

किसी पेड को अच्छा माली खूब सींचा करे तो भी उस में क
ल न लगे तो माली उस पेड को निकाला स म झ कर सींचता वंद
कर देता है। वैसे ही जिल म मुख्य पर दया रख कर प्रभु अपनी
रूपा उतार दे व इस से लाभ न उठावे तो प्रभु उस के पास से अपनी रू
पा खींच लेता है। प्रभु को अपनी रूपा वापस लेनी पडे तो यह रू
पा ही किन की बडी नालाय की है १ इस का विचार हमें करना चा
हिये। ईसा जुलन होने देने के लिये ईसा उपाय करना चाहिये
कि जिस से ईश्वर रूपावती रहै तथा बढती जाय। जगत की सब
वस्तुओं से ईश्वर रूपा की कीमत कही बढ कर है और उस से धर्म,
अर्थ, काम, और मोक्ष- चारों पदार्थ मिल सकते हैं। इस लिये
हे इतिजतो। ईसा की जिसे कि ईश्वर की अलौ कि रूपान्ता मे।

१३७ — जुदे जुदे लोगो को जुदे जुदे का म
करने पडते हैं; यह देख कर ई-
सान सोचना चाहिये कि इस उये
है और दूसरे तीये है।

ईस जगत में अनेक प्रकार के मनुष्य है। उन की बुद्धि तु
दी न दी होती है तथा उन के आस पास के स योग नी नि-
मित्त प्रकार के होते हैं। इस से मनुष्यों को आगे बढने के लिये
प्रबुद्धि प्राप्त में सैकड़ों किस्म के रोजगार पंधे करने की जरूरत

ती है। जैसे - को हुआ दमी बनना का काम करता है, को हु
 दमी बडी बनाने का काम करता है, को हु खेती करता है को
 हु पापा करता है। को हु पशुपालता है, को हु बढा होता है,
 को हु दुआ होता है को हु मोची होता है, को हु धोबी होता
 है, को हु झाडू देने का काम करता है, को हु गाडी हाकने का का
 म करता है को हु लिपि हगरी करता है, को हु नाव या जहाज च
 लाता है, को हु रवाना मोदता है, को हु बिजली की मदद लेता है,
 संज्ञा को हु चमकी क्रियायें करता है, को हु खेलन घासा दिखता
 है, को हु नौ करी करता है, को हु पढता है, को हु सो हु बना
 ता है और को हु नये नये आविष्कार करता है। इस तरह जि
 स आदमी को जिस किस का मुनीता होता है, जैसा नशा पर
 म्परा का संस्कार होता है तथा जिस प्रकार की मना विकृत
 धि होती है उसको अनुसार उसको उस किस का काम करना
 पडता है। परन्तु सब काम अपना व्यवहार अच्छी तरह चला
 ने के लिये अपना कर्तव्य जानने के लिये, अपनी आत्मा के क
 ल्याण के लिये तथा सर्वशक्तिमान परमात्मा को प्रसन्न कर
 ने के लिये किया जाते हैं। इस लिये व्यापक रास्ते, इमान दारी
 से, शुद्धता पूर्वक नौ काम किये जायें उनमें से किसी को दो रा
 मतः समझना तथा उस के करने वाले मनुष्य को दो रा मतः
 मझना। क्यों कि हु अर के राज्य में और हु अर की सृष्टि में
 जो को हु काम योग्य रीति से हो बुद्धि फल जान ही है। जैसे - अ
 पने शरीर को ही देखिये तो मालूम पडेगा कि आँखें देख
 ने का काम करती हैं। जीभ बोलने का और स्वाद समझने का
 काम करती हैं, नास मुनने का काम करते हैं, दात चवाने का
 काम करते हैं, फेफड़ा सांस लेने का काम करता है, मज्जा वि

चारने का काम करता है, जागने से देहा पडे जाने का काम
 करते हैं, चमडा स्पृश समझने का काम करता है नाक सुघने
 का काम करती हैं, पैर चलने का काम करते हैं, हाथ ची जोड

चारों का काम करता है, जातों तुम देना पड़े जाने का काम
 करते हैं, भ्रम शास्त्र ही समझने का काम करता है नाक सुचने
 का काम करती है, पैर चलने का काम करते हैं, हाथ भी जोड़
 जाने का काम करते हैं, गला बोलने का काम देता है और म
 न में कल्प विकल्प करने का काम करता है। य सब काम स
 क ही शरीर के भिन्न भिन्न अवयव करते हैं। क्योंकि इन सब
 कामों की हमें जरूरत है। अब अगर ओर न कहें कि मेरा ही का
 म सब से अच्छा है; फेफड़ा कहें कि मेरा ही काम अच्छा है, अंत
 ही कहें कि मेरी ही उंची हूँ और तुम सब नीचे हो तो क्या यह ठीक
 है न ही। वैसे ही इस संसार में किस्म किस्म के लोग रहें
 धे की जरूरत हम सब को है। इस लिये हमारे जो आहुत-व
 हमसे भिन्न प्रकार के लोग रहें कर रहे हो उनको छोड़ न
 समझना चाहिये। उनका तिरस्कार न करना चाहिये और अ
 पने को उंचा और उन्हे नीचे समझने को न ठे अ भिमान में न प
 डे रहना चाहिये। सारे रीज तो को तो यही समझना चाहि
 ये कि सब आदमी किस्म किस्म के कामों की माफत प्रभु की
 ही पूजा कर रहे हैं और उन्हे जैसा से योग मिला है वैसा काम
 कर रहे हैं। परन्तु वे सब एक ही पिता के पुत्र हैं और सब एक
 ही प्रभु को रिशाने के लिये अपना अपना कर्तव्य पूरा कर रहे
 हैं। इस लिये सब के साथ प्रेम भाव से और ईश्वरी स्नेह से बातें
 व करना चाहिये। यह समझ कर अच्छा ईसाई धर्म का अ
 भिमान मत करना वरंच सब से भला ई करना और सब का सब
 योग्यता तुमारे आदर करना सीखना। यही हमारा मार्ग

१३८ - लोगों को पाप और नरक के दुःख
 बताना कर भक्त बनाने की अपेक्षा

ईश्वर के गुण और मोक्ष का सुख
बनाकर भगवान की ओर ले जाना
अधिक अच्छा है।

वन्धुओं। मनुष्यों के अन्दर प्रभु का प्रेम जगाकर उन्हे भक्त
बनाने के लिये दो नर हूँ उपाय है। कितने ही भक्त सत हरि
तथा भक्तों का वाचन बाले, पशु भी तत्प्राप्त साधु भक्त बनाकर जीवों
को विगाड़ते हैं। जैसे - वे कहते हैं -

यह देह क्षणभंगुर है। अनी तुम किसी के मोह में पड़े हो।
इस देह को गिरा सिया रखवा देंगे। यह देह हम सान में जला दी
जायगी। जानते हो नरक क्या है? नरक की आग बड़ी भयंकर
रहै और यम को जरा भी दया नहीं आती। यम का स्वरूप तु
मने देखा है? उसका चेहरा के सा विकराल होता है उसकी आँखों
में के सा क्रोध होता है, उसके हृदय में के से निर्दयता होती है,
मनुष्यों को कष्ट देने के लिये वह कितनी तरह की सजा करता
है और वह के सा भयावह होता है यह तुम जानते हो? अनी।
अनी तुमने काल को कहां देखा। काल। अरे वापरे वाप। उ
सका नाम मत लो। काल सारे संसार को खा जाने वाला है का
ल हमारे प्यारे को खा जाने वाला है; काल हमारे बालों और
हमारे वाप को अपने पैर तले कुचल डालने वाला है; जगत में ह
सी को हँस नहीं है जो काल के गाल से बच सके। काल सब को
खाहा कर जाता है और सब को भस्म कर डालता है। ऐसे काल
से तुम क्यों नहीं डरते? क्या जानते किस छडी तुम्हें डगलें जाय
गा इसका कुछ ठिकाना है? हे गा फिल लोगो। तुम्हें सुख
स नींद के ले आती है? तुम्हारे सिर पर मौत नाचती है तुम्हें

है न ता करने पर भी हम देखते हैं कि कितने ही कुटुम्बों में बड़ी कल
 ह होती है। य हा तक कि घरवाले जिनको सुखी करने के लिये मिह
 नत करते हैं और सिर धुनते हैं वे ही उनके कितने कामों से दुखी हो
 ते हैं। क्योंकि उनका घर बिगड़ा रहता है, उनके घर में धर्म का बल
 नहीं होता और उनके घर में भगवान् पधार नहीं रहता; इससे अ
 पने सगे सम्बन्धियों को भलाई करने के लिये उनमें जो सहनशी
 लता होती चाहिये वह नहीं होती; अपने कुटुम्ब की भलाई करने के
 लिये व्यवहार तथा विचारों में जो उदारता आनी चाहिये वह उदार
 ता धर्म के बल बिना नहीं आती; अपने कुटुम्ब को सुखी करने के लि
 ये उस पर जो प्रेमभाव आना चाहिये वह प्रेमभाव धर्म के बल बिना
 नहीं आसकता; अपने कुटुम्ब को सुखी करने के लिये छोटा छोटा
 मत भेद छोड़ देने की जो समझ आनी चाहिये वह समझ धर्म के बल
 बिना नहीं आती; अपने कुटुम्ब को सुखी करने के लिये स्वार्थ त्या
 ग करना सीखना चाहिये परन्तु यह बात धर्म के बल बिना नहीं हो
 ती। अपने कुटुम्ब को सुखी रखने के लिये अपने हृदय में तथा अ
 पने सगे सम्बन्धियों के हृदय में भगवान् को पधारना चाहिये, यह
 धर्म के बल बिना नहीं होता। इससे घरवाले जिनको सुखी करना चा
 हते हैं वे भी धर्म की मदद बिना उनके कामों तथा विचारों से सुखी न
 ही हो सकते। जिनके लिये वे हतनी अधिक मिहनत करते हैं तथा
 जिनके लिये चारों ओर हाय हाय करते फिरते हैं वे भी जब उनसे सु
 खी न हो तो यह सब मिहनत गंजाल किसका मका १ इस लि
 ये भाईयो और बहनो। अगर अपने प्यारे सगों को प्रसन्न कर
 प हो और उनसे बहुत आनन्द लेना हो तो ऐसा कीजिये कि आ
 का घर सुधरे। घर सुधारने के लिये घर में अर्थात् घर के सब म
 यों में धर्म का बल बढाईये। ज्यों ज्यों धर्म का बल बढता जाय
 त्यों त्यों आप के कामों की भूल सुधरती जायगी और ज्यों ज्यों

मैं का बल बढ़ता जायगा त्यों त्यों आप के कुटुम्ब के मनुष्यों में भी
 क दूसरे को निवाह ले जाने का गुरा आता जायगा। इस समय
 मैं केवल बिना जेसा मत भेद होता है और जेसी खराबी होती
 है वैसी बात घर में धर्म बढ़ने के नादन ही होगी। अगर सुखी
 होता हो और कुटुम्ब को सुखी करना हो तो हे गृहस्थ बन्धू
 ओ। ऐसा कीजिए कि आपके घर में धर्म का बल बढ़े।

बिना धर्म के अमीर बाहर से अच्छे लगते हैं परन्तु भीतर से वे बहुत
 दुखी होते हैं। जो कुटुम्ब गरीब है परन्तु प्रभु का प्रेम वाला है वह हृदय
 से बड़ा सुखी होता है।

कितने ही अमीर खानदानों को बाहरी तरफ़ से देखकर बहुत
 आदमी भूल जाते हैं और यह मान लेते हैं कि वे लोग बहुत सुखी हैं।
 हे सा मान लेने का कारण यह होता है कि उनके घर दरी जालियाँ, देव
 ल, कुर्सी, बिजली की रोशनी, बिजली का पंखा, बड़े बड़े पलङ्ग, छोड़ेगा
 डी, मोटर, अनेक प्रकार के खाने पीने के पदार्थ और जेवरत भाग्य हनावे
 होते हैं। यह सब ठाठ बाट देखकर बहुत से भोल भाले आदमी यह स
 मझते हैं कि ये अमीर बड़े सुखी हैं। परन्तु भीतर से देखने पर अस
 ली बात कुछ और ही होती है। यात्री जिस खानदान में प्रभु का प्रेम न
 हो और जिस गृहस्थ के घर में धर्म न हो उस घर के आदमी मोह की
 चीजों के लिये एक दूसरे से लड़ते हैं। जो चीजें बाहर देखने वाले
 गरीबों को सुखादायी मालुम पड़ती हैं उन्हीं चीजों के कारण उनमें
 लोहा लग जाता है। धर्म के बल बिना वे अपने मन को बहाल नहीं
 रख सकते। इससे जिस गृहस्थ के घर में धर्म बढ़ जाय परन्तु धर्म
 न बढ़े उस गृहस्थ के घर में लड़ाई झगडा बढ़ जाता है। बिना प्रभु प्र
 म के मनुष्य धन के समझ अपने मिजाज को काबू में नहीं रख सकते।
 उनकी आशा नृणा की भी हद नहीं होती और जो धन बढ़ता

५०४

जाता है तो तो नये दुःख भी बढते जाते हैं। इस प्रकार का वैभव
 अपने साथ कुछ नया दुःख ले आता है और दुःख दूर करने की दवा
 विना धर्म के मनुष्यो के पास नहीं होती तो इससे वे अपने वैभव के कार
 ण उल्टे और दुखी होते हैं। इस के विरुद्ध जो गरीब आदमी है परन्तु
 जिस के घर में धर्म है वे धर्म वाले गरीब बानूदान अमीरों से भी कहीं
 अधिक सुखी होते हैं। यद्यपि बाहर से देखने पर वे दुखी जान पड़ते
 हैं क्योंकि उन के पास अमीरों के देसा वैभव नहीं होता तो प्रभुप्रे
 म के कारण वे हृदय से सचे सुखी होते हैं। यह बात भी कतोर परमम
 ज्ञान के लिये एक संत कहते थे कि।

जंगल में एक तरह की घास होती है। उस घास पर फूल फूलन
 ही दिखाने देते परन्तु जब उस घास की तरफ से होकर निकले तो ठ
 स में से बहुत सुन्दर और मीठी सुगंध आती है। यह देख कर अन्या
 न यात्री सोच में पड़ जाते हैं कि यहाँ कोई फूल या फूलन ही दिखाने
 देता, एक सुखी सी घास दीख पड़ती है परन्तु सुगंध कहाँ से आती है
 ५०५ १ खोज पूछ कर देखे पर मा लूम होता है कि उस घास की जड़ से सुगंध
 निकलती है और उस जड़ के पास फूल होता है परन्तु वह फूल जड़ में
 होते से सब को नहीं दिखाने देता। गरीब लोग बाहर से घास के से
 दिखाने देते हैं परन्तु जिस गरीब के घर में धर्म होता है उसका घर
 जड़ से रूखा बूढ़ा फूल रखने वाली घास समान होता है। बाहर
 से देखने में कुछ ठाट बाट नहीं जर आता परन्तु हृदय में आनन्द
 ही आनन्द होता है। क्योंकि इस ली आनन्द गरीबी या अमीरी के
 वंगलों से प्रभुप्रेम वाले गरीबों के जो पदों में अधिक आनन्द होता
 है और वैभव वाले अमीरों के कुटुम्ब से धर्म के बल वाले गरीबों का कु
 टुम्ब अधिक सुखी होता है। अंगरस चा सुख लेता होता जे से बने न
 से देसा की जिसे कि घर में धर्म बढे, आप के कुटुम्ब में ईश्वरी ज्ञान
 तथा ईश्वर की भक्ति बढे और प्रभु का प्रेम बढे। यही हमारी प्रार्थ
 ना है।

१४८ - कुटुम्ब सुख पाने का उपाय । (७)

महात्मा कहते हैं कि जिस घर में प्रभुप्रेम नहीं बह रहा है
नहीं; वह तो कलह का अड्डा है।

५०६ वन्द्यो। जिस घर में धर्म न हो, जिस घर में भक्ति न हो, जि
स घर में ज्ञान न हो और जिस घर में अपने कर्तव्य की सुचना हो
वह घर ही कहलाता, उस घर को सन्त लोग कलह का अड्डा
बताते हैं; उस घर को महात्मा लडाई का मैदान बताते हैं। क्यों
कि बिना प्रभु के ऐसे घर में एक दूसरे की निन्दा के सिवा और
कुछ सुनने में नहीं आता; ऐसे घर में कड़वे बचन झूठी रगड़,
कोरे हठ और अपने मत लव के सिवा दूसरा कुछ नहीं दिखवा दे
ता; ऐसे घर में एक दूसरे को रोते देखते हैं; ऐसे घर में एक दू
सरे को शाप देते सुन पड़ते हैं, ऐसे घर में लम्बी सांस-मोटी आँह
शान निकला करती है; ऐसे घर में हमसाबी मारी चली आती है और
अकाल मृत्यु तथा आत्म हत्या जैसे महापाप हुआ करते हैं। हम
ऐसे घर में रहने वाले किसी मनुष्य की जान को जग भी सुख
नहीं मिलता। अगर घर की ईज्जत बनाय रखना हो तो ऐसा की
जिये कि आपके घर में धर्म आवे आपके घर में प्रभुप्रेम आवे और
आपके घर में ज्ञान भक्ति बढे।

जिस घर में धर्म होता है और जिस घर में प्रभुप्रे
म होता है वही घर सब से बढकर सुखी हो
ता है।

जिस घर में प्रभु का प्रेम हो, जिस घर में भगवान को तथा भग
वान के सन्तों की सेवा होती हो, जिस घर में परम इपा लु परमात्मा
का गुण गाया जाता हो, जिस घर में प्रभु के नाम का स्मरण होता है
जिस घर में अनन्त ब्रह्माण्ड के नाथ के अर्चना दिया जाता हो,
जिस घर में सर्व शक्तिमान पवित्र पिता परमात्मा के अर्चना बतल

भातप होता है और जिस घर के मनुष्य भगवान की दृष्टि दुसा
 रवर्तते हैं वह घर दु निष्ठा घर में सबसे भेद हो तो आश्चर्य क्या
 है १ जिस घर में धर्म होता है उस घर के स्त्री पुरुष, बालक, आत्मी
 य परिजन नोकर भाकर और पड़ोसी आदि सब में थोड़ा बहुत
 म आ जाता है। इससे धर्म वाले कुटुम्ब के आसपास के मनुष्य
 भी धर्म वाले बनते जाते हैं। जैसे न हो जाता जाता है व हाँ ५
 म की सेना भी जाती है। वे से जिस घर में भगवान प्रधारता है ५
 स घर में उसके सद्गुरु भी आ जाते हैं। जिस घर में भगवान प्र
 धारता है व हाँ उसका है स्वर्ग भी जाता है। जिस घर में भगवान
 न प्रधारता है व हाँ उसकी जान भक्ति भी हाँ गिरती है। जहाँ
 भगवान की जान-भक्ति होती है व हाँ मेल, समा, दया, शान्ति,
 धीरजन्यता और सद्गुण होते ही हैं
 इससे सन्देह नहीं। जिस घर के मनुष्यों में है से सद्गुरु हो
 उस कुटुम्ब के सुखी होने में कुछ भी आश्चर्य नहीं है। इसलि
 ये अगर सचमुच सुख जाना हो तो अपने घर में अपने कुटु
 म्ब में धर्म तथा प्रभु का प्रेम बढा देंगे। यही हमारा निवृत्ती
 है।

जिस घर में धर्म होता है वह कुटुम्ब सुखी होता है
 यही नहीं से धर्म का कुटुम्ब से दुसरे कि
 तने ही कुटुम्ब भी सुखरते हैं।

धर्म से केवल अपनी आत्मा को शान्ति और अपने कुटुम्ब
 को सुख नहीं मिलता वरन् धर्म इससे भी बहुत बढकर
 काम करता है। बहुत आदमियों का स्वभाव देखी देखा करने
 का होता है; बहुत आदमियों का स्वभाव अच्छे आदमियों की
 शान्ति प्राप्ति पर चलने का होता है; बहुत आदमियों का स्वभाव
 व जिसको विजय मिले और जिसका बरवात हो उसकी ओर
 जाने का होता है; बहुत आदमियों का स्वभाव वाही गार

वाट, गानतान ओर खडे आदमियों के दल पर मोह जाने वा
 ला होता है और बहुत आदमी जान भक्तिका ठिकाना ठठ
 ते फिरते हैं। ये सब आदमी जब किसी बड़े भक्त को देख
 ते हैं या किसी परिवार में पूर्ण श्रद्धा से धर्म होते देखते
 हैं तो उन पर अलग अलग असर पड़ता है। इससे ये सब
 आदमी इस धर्म करने वाले चरकी ओर खिंच आते हैं और
 ५०८ रफूल रह होता है कि वे भी धीरे धीरे धर्म आवत जा
 ते हैं। ऐसे आदमी में हल सिर्फ नशा हा देखने आते हैं पीछे
 जन कीर्तन होते देख कर उठे सुनने की ईच्छा होती है। इससे ना
 द धीरे धीरे भक्तिकी तरफ का खिंचाव बढ़ता जाता है और जि
 सम मनुष्यों में जो मुख्य प्राकृतिक गुण होता है वह इसमें खि
 ल जाता है। जैसे - धर्मात्मा कुटुम्ब में जो प्रत उत्पन्न होता है उ
 से देख कर कितने आदमियों को वैसे ही प्रत उत्पन्न करने की
 ईच्छा होती है। धर्मात्मा परिवार की ओर से दान दक्षिणा दी
 जाती हो तो देव कर उदार मनुष्य धर्म के इसी अंग को पकड़
 लेते हैं। धर्मात्मा कुटुम्ब में जो जपतप होता है उसे देख कर वे
 से स्वभाव के मनुष्य जपतप सीख जाते हैं। जिन मनुष्यों को
 ज्ञान की ईच्छा हो उठे ज्ञान की कुंजी मिल जाती है। श्री धर्मा
 त्मा कुटुम्ब को देख कर पड़ोसियों में धर्म फैलता है, गांव में
 धर्म फैलता है जाति विरादरी में धर्म फैलता है और आगे व
 दते वढते देश में धर्म फैलता है। इस प्रकार धर्मात्मा कुटुम्ब
 से जाने बेजाने न आउले सीधे बहुत आदमियों को बहुत फाय
 दा होता है। इसलिये सब गृहस्थों को विशेय करके ऐसा उ
 पाय करना चाहिये कि उन के घर में धर्म बढे और प्रभु का प्रेम
 बढे। इस जगत में धर्म से बढ कर उंची बल्लु दूसरी नहीं है और

अपने दृष्टान्तसे आस पास के मनुष्यों को सुधारने से व ८ कर पू
सरा को ई पु राय न ही है। सो हे भाई सो ओ र व रु गो। जे से न न वे
से अपने घर में धर्म ब ला ई य।

५०६

१४६ - जे से - आका ^श के वा हर न ही जा सक
ते वे से सर्व शक्ति मान म हा न ई थ र
से दूर न ही जा सक ते।

एक योगि राज थे। वह एक मन्दिर में रहने थे। योग साध
ने के लिये मन्दिर के अन्दर एक बंद कोठरी में बैठते और दृष्ट
योग की कितनी ही कि या है करते थे। वे वर्यो से अपनी कोठ
री से वा हर न ही निकले थे। मन्दिर के पुजारी आदि ना हर जा
ते तो उन्हें वह योगी कहते कि तुम लोग घुम कूड हो। भला
भगवान को छोड़ कर कहीं वा हर जा ना चा हिये १ एक दिन ५
स मन्दिर में एक भक्त आया। वह जब वर्यार्थ का काम करने
के लिये वा हर जाने लगा तो योगी राज ने पूछा - क्यों भगत -
कहा चले १ भक्ते कहा कि भगवान की सेवा करने जाता हूँ।
यह सुन कर उस योगी ने कहा कि भगवान तो य ही हैं। मन्दिर
छोड़ कर, पूजा का ल्प्या न छोड़ कर आनन्द का ल्प्या न छोड़ कर वा
हर क्यों जाते हो १ भक्ते कहा कि महाराज। हमारा भगवा
न कुदृष्टास एक ही जग ह न ही हैं। आप यह समझते हैं कि मैं
ने अपनी कोठरी में भगवान को पकड़ रखा है परन्तु इस प्रहस
मझते हैं कि हम ज हा जाते हैं व हां सर्व व्यापक प्रभु हमें पकड़
रखता है। हम चाहे ज हां जायें परन्तु आकास हमारे मिर पर
ही रहता है। आकास के वा हर को ह न ही जा सकता। वैसे ही हम
प्रभु से वा हर न ही जा सकते। जा हां जायें व हां आकाश रहता है
वैसे हमारा प्रभु तो हमारे ही साथ रहता है; हमारा प्रभु किसी रक्ता

श

त्रिन्दगीपर कुदृग हरा असर पड़ जाता है। कभी दो आदमी व
हुत लड़ते होते तो देख कर अपने को कुछ शिक्षा मिल जाती है
कभी किसी बीमार आदमी को देखते गये हों तो व हो कुछ न
गये योग्य लाभ हो जाता है। कभी रास्ते में खल जाते हों तो
कुछ अभाग क लाभ हो जाता है। कभी जा हासे कुछ आशानर
खी हो व हां से नी छ डी मदद मिल जाती है। कभी तंगी या
कठिनाई में पड़े हो और टंग पैर व हुआ हो तो। कोई पुस्त
क पढ़ते पढ़ते मन का समाधान हो जाता है। अब के प्रचार से
अनसोची मदद मोके मोके पर सब आदमियों को मिलनी
रहती है। एक देर कर व हुत आदमी फूल डरते हैं। वे स
मझते हैं कि य ह सब हमारे चतुराई से होता है। यह सब
व हमारी लिये कत से होता है और य इस वसे लोगों के
आधार से होता है। परन्तु असली बात यह है कि ये सब कामों
में परमात्मा का हाथ है और व ह रूपा कर के हमारी मदद
गुप्त रीति से करता है। इस बात को हम सब झूठे नहीं। जैसे-

कोई आदमी व हुत अन्धे टंग से वाजा बजाता हो तो वह
मन ही मन फूला करता है कि मुझे अच्छा बजाता आता है ओ
र मेरे बजाने का बड़ अच्छा होते से ही स ह वाजा से सा बधिया
बजता है। परन्तु उस समय उस स ह रूपा कर ही होता कि य ह वा
जा बजाने वाले की खास खुशी है। अगर उसने ऐसा अच्छा वा
जा न बजाया हो तो तो उसे ऐसी उन्नमता से बन जा सकते। उस
वाजे में तर ह तर ह की आवाज की कल लगाने वाले ने जो खुशी
की है उस खुशी के कारण ही ऐसा बधि बजा बज रहा है। इस
लिये मुझे वाजा बजाने वाले का भी उपकार मानना चाहि
य। परन्तु अब सो स है कि वाजा बजा कर अपने अस्मि मान
में फूलते समय उस आदमी के मन में स ह रूपा लन ही आता
वैये ही हम भी अपने कामों में सफलता होते देख कर अपनी

५१२

परंतु इस पर मन ही मन फूल करते हैं परंतु उस समय हमें यह न
ही दिखा देता कि इस सफलता में परम फलालु परमा
त्मा का हाथ है। अभी हम कह रहे हैं और सर्व शक्ति मानव
हाथ प्रभु की साहिबा हमने नहीं मय्य ही है। इसी से ऐसे अ
भिमान में पड़ जाते हैं।

इसी तरह जब किसी का एक में कोई पाप अपराध ल
अच्छी तरह दिखाता है और "बन्स मोर" बन्स मोर" हो
ता है न आता लियों की गड़गड़ाहट से लोग उस को कहवा
ही देने हैं तो वह पाप न मय्य समझता है कि यह सारी खूबी
मेरी ही है। यह सोच कर वह हमन ही मन फूलता है। परंतु
उस समय उसे यह ख्याल नहीं आता कि इसमें नाटक वना
ने वाले की त थापा है सोचने वाले और सिखा देने वाले मनेजर
की खास खूबी है। इस बात का ख्याल उसे नहीं रहता। वैसे
ही जब हमारे कामों में सफलता मिलती है तो हम समझते हैं
कि यह हमन हमारी ही योग्यता से होती है। परंतु यह नहीं दि
खा देता कि इसमें ईश्वर का हाथ है और सब ईश्वर की ल
पा का ही फूल है।

एक अमीर अपनी गाड़ी हांकता था। उसने अपने छोटे
लडके को गोद में बिठाया और उसके हाथ में छोटे कीलगा म
दे दी। यह देख कर वह लडका समझने लगा कि यह गाड़ी में
ही चलाता हूं, यह सोच कर वह खुश हुआ और पास बैठे हुए
अपने भाई से कहने लगा कि देखो मैं कैसे खूबी से गाड़ी हांक
ता हूं। इसके बाद जब ठेठारा ला आया तब लडके से गाड़ी नहीं
चल सकी। उस समय उसका पाप ने उस के हाथ से लगा म लेगी
और गाड़ी को घुमाया। फिर जब सीधारा ला आया तब लगा म
लडके के हाथ में दे दी।

बन्धुओ। इसी तरह, बाप की गोद में बैठे हुए लडके को

५१३ नरह हमसे परम रूपालु परमात्मा व्यवहार को गोडी चला
 वाता है। परमात्मा हमारा हर एक काम स्वयं पूरा करता है। ह
 म तो इसमें निमित्त मात्र हैं। परन्तु अपने छोटे छोटे कामों
 भारी अभिमान करते हैं। भाईयो! अगर हम भी भक्त होना हो
 तो यह सब वृद्धांत हृदय में बिठाकर भली भाँति समझ ली
 जिये कि ये सब कष्ट प्रभु स्वयं हमें से माल लेता है और ह
 मारा काम आगे बढ़ता है। याद रहे कि हमारे सब अच्छे
 काम परम रूपालु परमात्मा ही करता है। हम तो निमित्त मात्र
 हैं। ऐसी समझ होने पर अभिमान के दुर्गुण से बचेंगे दी
 वता आवेगी और प्रभु की महिमा समझ में आवेगी। इससे
 प्रभु प्रसन्न होगा। इस लिये भाईयो! इस बात को भली भाँति
 समझ ली जिये कि सब कुछ प्रभु करता है। हम निमित्त मात्र
 हैं।

१५१ - भगवान का नाम स्मरण करने से लाभ।

एक बहुत बड़ा जहाज उत्तर ध्रुव की यात्रा करता था। रास्ते
 में एक जगह लोहचुम्बक वाली चट्टान आप डीजल जहाज उसकी
 तरफ खिंचने लगा। कप्तान ने जहाज को ठीक रास्ते पर ले जाने
 के लिये बहुत कोशिश की परन्तु उसकी सारी मिहनत व्यर्थ
 गयी और जहाज धीरे धीरे लोहचुम्बक की चट्टान की तरफ
 ही सरकने लगा। तब कप्तान ने स्टीयर में बैठे हुए हस्तियों से क
 हा कि मैं आज तीस दिनों से अगिन्वोट को घुसरी तरफ लाने के
 लिये परिश्रम करता हूँ परन्तु कुछ फल नहीं होता, अगिन्वोट
 इसी के दम में ही मालूम होता है कि यहाँ से थोड़ी दूर पर कोई चु
 म्बक का पाहाड़ है। जहाज कुछ समय में वहाँ खिंच जायगा अग
 र जहाज उधर ही बढेगा तो उस के कील कांटे तुरन्त निडर
 गायेंगे और जहाज डूब जायगा। इस लिये जिस की इच्छा हो वह

५१४

ईस त्रि-देवी बचाने वाले (लाईफ) कोट में
 आजाय। यह सुनकर कि तने आदमी उस में जा
 वे ठे और कि तने विचार करने लगे कि ईत वे वडे गहा
 ज में न ही बच सके तो रे सी छोटी नाव में क्यों करवें
 गे। ईत नाव डा ज हाज छोड कर छोटी सी डेगी में कौन वे ठ
 ने जाय। कप्तान ने कहा कि भाईयो। ईस छोटे से कोट में लो
 हे की कील न ही है ईस ले य ह नौटलो ह्युम्बक की च हात के सा
 मने टिक सकता है और वडा ज हाज लो हे की कील जंजीर त बा पत
 र आदि से भरा हुआ है इस से बहलो ह्युम्बक के सामने न ही टिक स
 कता। परन्तु यह बात न हुत लोगो के मन में न ही जंची। ईस के कु
 दस प्रय का द ज हाज लो ह्युम्बक के प हाड की तरफ खिच गया औ
 र उस का लो हा युम्बक से जा नि प का। ज हाज के पट्टे अलग अलग
 ग हो गये और उस में वे ठे हुए से कडो यात्री दूब गये।

बन्धुओ। यह दृष्टान्त देकर एक भक्त राज म हार जय हस प्रसा
 नेचे कि प्रभु के नाम का स्मरण उस छोटी सी नाव के समान है। क्यों
 कि भगवान का पुरा गाने में किसी तरह की कठिनाई न ही है। ध
 र्म के दूसरे अंगों से य ह का म अधिक आसानी से हो सकना है।
 मूदी मूदी ख म्प्रदा यो न था मतों के जो धर्म है वे सब ज हाज के स
 मान है और उन में मो हके आकर्षण से खिच माने योग्य लो हे
 के कि तने ही कील कांटे हैं। नाम स्मरण की डंगी में आकर्षण
 से खिचने ला म्बक कील कांटे न ही है इस से य ह डेंगी निरापद है
 य ह संसार स मुद्र उत्तर ध्रुव की यात्रा के रे सा कठिन मार्ग है और
 उस में लो ह्युम्बक की च हा ने ब हुत है अर्थात् मत खींचने वाले
 मो हके पीले उस में ल डत है। इस से सम्यदाय के जाल में कैसे हुए
 दुब्यो का ज हाज है ईसाई के पीलों की तरफ खिच जाता है। पर
 न्तु नाम स्मरण के द्वारा जो को रे से खिंचा व का डर न ही है इस से

वे च-च जाती हैं। अगर बन-बना हो तो प्रभु के महा मंगल का ही नाम का स्मरण करने रहिये। स्मरण करने रहिये।

५५५

१५२ - बहुत आदमी पैसा कमाने के आगे धर्म की परवाह हीं करते; परन्तु ऐसा करना कितनी बड़ी भूल है इसको जरूर विचारना।

आजकल के जमाने में पैसा कमाने की ओर लोग इतना अधिक ध्यान रखते हैं कि उसकी धुन में धर्म को एक दम भूल जाते हैं। कितने आदमी तो खुल्लम-खुल्ला कह भी देते हैं कि धर्म धर्म करने से क्या मिलता है। पैसे से तो तुरन्त ही लाभ होता है। दे रानो पैसा होने से खाने को मिलता है, पैसा होने से अच्छा कपड़ा पहना मिलता है, पैसा होने से रहने के लिए सुन्दर मकान मिलता है, पैसा होने से बिद्या आस करते हैं, पैसा होने से यात्रा कर सकते हैं, पैसा होने से स्त्री पुत्र माता पिता आदि कुटुम्ब को सुखी रख सकते हैं, पैसा होने से मोजर हो कर की सामग्री मिल सकती है और पैसा होने से दुनिया में ईज्जत बढ़ती है न आप धर्म भी किया जा सकता है। इस लिये हम तो पैसे को मुख्य मन्त्रते हैं। धर्म करने से हमें तुरन्त लाभ हीं दिखाई देता। तब नगदमाल हो डकर उधार धर्म की आशा में कौन पड़ा रहे १

रख्य

बहुत समझने, व्यवहार चतुर प्रभु यह सी ही वांते करते हैं उनसे हरिजन कहते हैं कि -

भाई। धर्म में जितना लाभ है उतना लाभ पैसे में नहीं है। परन्तु मूर्ख पैसे की बातों में ध्यान रखते हो और धर्म की बातों से बहुत लापरवाही दिखाते हो इससे धर्म का लाभ तुम्हारी समझ में नहीं आता। जरूर विचार तो करो कि धर्म करने से मत ऐसा

५१५- वडा हो जाता है वैसे सावडा क्या पैसे से हो सकता है १ धर्म करने से
 हृदय जो सा को मल होता है वैसे सी को मल ना क्या धन से मिल स
 कती है १ धर्म करने से व्यवहार चलाने में जो सी सफाई आ जा
 ती है वैसे सी सफाई क्या पैसे का गुलाब बने रहने से आसकती है
 १ धर्म करने से जगत में सब जीवों की मलाई करने की जो वृत्ति
 जागृत होती है व ह क्या केवल पैसा कमाने से जागती है १
 धर्म करने से दया, क्षमा, धीरज, हानि, इन्द्रियनिग्रह आ
 दिस दुर्गम को में आजाते हैं; वे सब गुण क्या केवल पैसे के
 जोर से खरीदे जा सकते हैं १ धर्म करने से हृदय में जो एक प्रकार
 का मानसिक आनन्द होता है व ह आनन्द क्या केवल पैसे से
 मिल सकता है १ इतना ही नहीं, धर्म करने से भावनाएं खिल जा
 ती हैं; धर्म करने से मोक्ष देने वाली पवित्रता आजाती है: धर्म
 करने से एक प्रकार की नृपि मिलती है और धर्म करने से अग
 म्य महान् धर्म से मित्रता होजाती है। यह सब क्या केवल पैसे से
 हो सकता है १ कह दो कि नहीं। इसी से यह पुरा दूरी है जगत् है
 कि मनुष्य को धन की जितनी जरूरत है इस से अधिक जरूरत
 जिन्दगी सुधारने वाले धर्म की है। इसलिये मनुष्य को हमारी
 यही सलाह है कि जैसे बैसे कमाने का ध्यान रखते हो वैसे ध
 र्म करने का भी ध्यान रखना। नहीं तो खाली पैसे से सच्चा सुख
 कभी नहीं पास कोगे। इसमें तनिक सन्देह नहीं है। सोपे सा क
 माने के साथ धर्म कमाने का भी ध्यान रखना। पैसा व्यवहार सु
 धारने का साधन है परन्तु धर्म जिन्दगी सुधारने का साधन
 यह बात याद रखना।

दोहा - नाम बिना वे काम है, दृष्ट न भोग विना
 क्या इंद्रासन बैठना, क्या वे कु राठ निवास में

कामधेनु पारस मरी, कल्पवृक्ष की
तुलसी हरिके भजन विन, सर्वे नरक के
अखर खर वलौ धन मिले, उदय अस्त
तुलसी हरिके भजन विन, सर्वे नरक के
तुलसी सोई चतुरता, राम चरण लबली
पर धन परम न हरन को, वेइ पावडी प्रवीन ॥

५९७

१५३- धन के लोभी मनुष्यो का नमूना था
एक लोभी सेठ की बात ।

एक जहाज लन्दन से अमेरिका जाता था । उसमें बहुत से यात्री सवार थे । रास्ते में बड़े जोर से तूफान आया । अगिन को दब कर रखा कर डूबने लगा । तब कप्तान ने सब यात्रियों से कहा कि ईन छोटी छोटी डें गियो में आ जाओ । जल्दी करो, जल्दी करो, नहीं तो र ह जाओगे । जहाज बोडी ही डेर में डूब जायगा । ये इसुन कर बहुत आदमी डें गियो में जावें ठे पट नुव डून आदमी अपना सर सा मान उठाने में लगे रहे । उस समय कप्तान ने बार बार कहा कि जल्दी करो, जल्दी करो । अगिन बोट डूबर रहा है । निकलो, निकलो । परन्तु ईतना कहने पर भी एक लोभी आदमी उसमें से नहीं निकला । कप्तान ने उससे कहा - कि तुम रे कर रहे हो, याद रखो कि डूब जाओगे । उस आदमी ने कहा कि मैं मले ही डूब जाऊँ परन्तु ईतना धन छोड़कर यहाँ से नहीं डूलूंगा । कप्तान ने कहा - तुम क्या कहते हो १ मर जाते पर यह धन तुम्हारे किस काम आने गा १ उस लोभी ने कहा कि यह तो कहा जायगा कि मरते समय मेरे पास ईतना रुपया था, रुपया लिय मुझे मरना पसन्द है परन्तु रुपया छोड़कर जीना पसन्द नहीं है । इसके कुछ ही देर बाद अगिन बोट डूब गयी और

५५८

उसमें वह लोभी मनुष्य भी डूब सर पर लुवा हर नही निकला ।

भाईयो । इसी तरह लोभी अमीर अन्तिम घड़ी तक धन का लोभ नही छोड़ते और यह कह लाते हैं अपनी सार्थकता समझते हैं कि हम मरने के बाद ईश्वर का धन छोड़ गये । परन्तु आदर खाना कि यहाँ बहुत धन छोड़ जाते वाले का हरिके हनु र आदर नही होता । वरंच प्रभु के अर्थ धन र खर्च कर के जाने वाले का ही आदर होता है ।

५५४ - बहुत आदमी दुःख की वटावटा कर अपने मनमें नाइक दुखी हुआ करते हैं ।

सचमुच दुःख होओर उससे दुखी होना पडे तो ब्रह्मानन्द मरी है परन्तु बहुत जगह ऐसा होता है कि असलमें दुःख नही होता सिर्फ अपने मन की कमजोरी के कारण बहुत आदमी नाइक दुखी हुआ करते हैं । जैसे -

कोई आदमी कहता है कि मेरे पास सोने के प्रेम वाला चूमा नही है । इस के लिये उसका मन कचोदता है और वह दुखी होता है । चूमा न होने से दुखी होता है परन्तु ओखे मिली है इस के लिये उसका मन नही होता । कोई आदमी कहता है कि मेरे उपकार मानने का मन नही होता । कोई आदमी कहता है कि मेरे पैरों में गूता नही है ; मैं बहुत दिनों से बिना गूते के चल रहा हूँ । यह कह कर वह गूते के लिये शोक करता है परन्तु बहुत आदमी उस की नजर के सामने लंगडे दिखाई देते हैं । उन्हे देख कर क्या किसी दिन भी उसे यह विचार हुआ है कि प्रभु ने मुझे दे दिया है और पैरों को सला मत रखा है यह उसका जोड़ा उपकार है ? जैसे गूता नही है वे से अगर पैर ही न हो तो या तो दोष होता तो वह क्या कर सकता ? बहुतों ने आदमी को अफसोस करते हैं और कहते हैं कि हमें पहचानने के लिये मन्त्र

५५९

५
 ५२०
 शरीर ही मिलता। इस तरह कपड़े का अलसोस करने पर
 तु अपना शरीर बना हुआ है और भला चंगा है इसके लिये
 रक्षा का रमाने काम मत ही करता। हमारी आरखो के
 गने आदमी मर जाने है पर तु वे अतीत कभी त जागते है
 प्रभु का उपकार नहीं है विचार की जिये कि जीने का मुख
 अच्छा कपड़ा न होने का दुःख बड़ा है सच पूछिये तो दुःख
 पडा होता ही नहीं। पर तु बहुत आदमियों में बड़ा बड़ा दुःख
 वानियाँ की आदत पड़ी रहती है; इससे वे दुःख का रोना रोया
 ते हैं। या दरहे कि ऐसा करना हरिजनों का काम नहीं है, ऐसा कर
 ना भक्तों का काम ही है और ऐसा करना ईश्वर की ईच्छा के अधी
 न रहने वाले भानियों का काम ही है। यह तो मोहवादी अज्ञा
 नियों का काम है। इस लिये सच्चा भक्त होता हो तो बड़ा बड़ा दुःख
 दुःख की बातें मत कहना और झूठ झूठ मत ही मत दुखी मत दुः
 आ करना वरंच दुःख के समझ भी ईश्वर का उपकार मानना सीख
 ना और यह सोचना कि ईतने ही दुःख से दुःख का रमिला है यह भी
 उसकी रूपा ही है। अगर इससे भी अधिक दुःख आता तो हमका
 कर सकते च हमान मिलने से चला जायगा पर तु अन्धे होये होते
 तो क्या करते १ नाक में पहनने की नभन ही है मगर नाक ही कर
 गयी हो तो तो क्या करते १ पठने को पुलकन ही है पर तु पठने ही
 न आता तो क्या करते १ अच्छा अच्छा खाने को कभी कभी न हो
 मिलता पर तु खाने को मिलने पर भी ऐसा रोग हुआ होता कि
 खाया ही न जाता तो क्या करते १ बहुत घन नहीं मिला यह वा
 त सच है पर तु इसके बदले में कुछ म्ब में जो शांति है इसका
 ख्याल कि सीदिन किसे या है १ पलंग नहीं है पर तु हररोज म
 जे की नीन्द आ जाती है इसके लिये कि सीदिन उपकार माना
 है १ जिन्हे बड़े बड़े पलंग होते पर भी पंखा डूलवा डूलवा कर
 और उवाजि या डव जि या कर रात कंठ नीपडती है और कि

सीतरहनदिनहीआतीउनकाहालआपने।किसीदिनगांवाहै।
खितापपाडियोनमिलनेपरआपअक्सोसकरतेहैपर-तुदि
वालाहीनिकालनापडाईसकोगतीमत।किसीदिनममश्राहै।

बन्धुओ।आपईनसबविषयोंकाविचारकरेंगेतोअहर
आपकीसमझमेंआजायगाकिहमजितनादुखीहुआकरते
हैउतनादुखीहोनेकाकोईखासकारणनहींहै।हमनाइक
अपनेदुःखकोबढायाकरतेहै।दुःखबढानाबहुतबडापाप
है।इसंपापमेंपड़ेरहनाहरिजनोकाकामनहीहै।इस।ने
येआइयोऔरबहतो।जैसेवनेबैसेहरहालतमेंस-तोबमा
ननाओरआनन्दभोगनासीखियेऔरप्रभुकाउपकारमान
करदोदेदोदेदुःखोंकाख्यालछोडदीजिये।इसकेबदलेआ
पकोजोउंचेदरजेकासुखमिलाहैउसके।लियेउपकारमान
करवडेहीआनन्दकेसाबहरिगुणगातेहुएजीवनवितानासी
खिये।हरिगुणगातेहुएजीवन।वितानासीखिये।

१५५-दुःखसेदिलगीरमतहोतावरुनयइस
मसनेनाकिदुःखसेजीवहुनकाय
दाहोजाताहै।

५२९ बहुतआदमियोंकाछेसास्वभावहैकिवेकारिहारजगह
दुःखकीहीवातकहाकरतेहै; दुःखकीहीशिकामतकिया
करतेहैऔरदुःखाकाहीरोतारोयाकरतेहै।पर-तुजोहरिजन
हैवेकहतेहैकिदुःखकेविचारकरनाऔरदुःखकीवातेबनिसा
नाबहुनहीबुझहै।दुखसेजीवहुनतरइकातामहोतकेपर
-तुईसनातकोहमअच्छीतरहनहीसमझनेइसकार
खसेहोजातेहै, दुःखसेनिराशहोजातेहैऔरदुःखसेदरजु
है।आदरहैकिहरतरहुकादुःखबहुतकरकेहमेंआगेबढाने
नभासदकरनेकेलियेहीआताहै।इलके।सिवाकभीकोइतु

राकोमकियाहोतोउसकेदर
हराउभोहमेंस
इकाहो

रा काम किया हो तो उस के दरद स्य रूप भी दुःख आता है परन्तु व
ह दरद भी हमें सुधारने के लिये ही होता है। जैसे-कोई उपद्रव
उका छोटा मोटा अमर धर कर ता हो तो उसे पकड़ कर उधोग शाला
(रिफा में टरी ईस्कूल) में भेजते हैं। उस समय उस लड़के को

शा ग शाला में जाता और उस में रह कर काम का ग सीखता दुःख
लगता है इससे वह कुठता है और पकड़वाने का नेत आ प
गालियां देता है और उधोग शाला में से भाग जाने की को
ता है परन्तु पीछे जब कोई अच्छा काम सीख लेता है और सीखा द
पुरी होने पर वा हर निकल कर से जगह धंधा करता है, पांच रूप में
कमाता है तथा ईजतदार बनता है तब वह लो। जिस उधोग शाला

ओ को दुःख दा की मानता था उसी का बदला करता है और उस का उप
कार मानता है। इसी तरह दुःख भी एक शा ला है परन्तु यह शा
ला बड़ी ही करारी है इससे उस में सीखना हमें नहीं रुबता। इस
कारण हम कुछ ठते हैं, परन्तु आगे जा कर जानु म होता है कि दुःख
से भी जिन्दगी सुभरती है, दुःख से बड़ा मत सुबाने धता है, दुःख
से नया जोर आता है, दुःख से बड़ा काम करने का रास्ता मिल जा
ता है, दुःख से जिन्दगी का सुख बदल जाता है, दुःख से दीनता,

५२२ उपकार कृति गमना ना आदि गुण आ जाते हैं और दुःख से ईश्वरी
रास्ते में चलने का मत होता है। इस लिये इस बात को खूब अच्छी त
रह समझ लेना कि हमें हैरत करने के लिये ही दुःख नहीं आता व
रंच आगे बढ़ाने के लिये और सुखी करने के लिये दुःख आता है। जै
से-

जहा का समुद्र तुफानी होता है ग हां बाहर नार भों कर ल हरे ड
वती है तबाला परना म ला हो की ना ने डल र कर वे ठ जाती है व हां के
म ला हव डे वा स दुर हो ते हैं। क्योंकि तुफानी समुद्र के कारण डके
गो कठिनाई स ह नी प डती है तुफानी समुद्र के कारण ड-हे जो क
द तर दु द ड ठानी प डती है और तुफानी समुद्र के कारण ड-हे जो
जो रवों सह ता प डता है उससे ने म ला ह दु स रे म ला हो से अधिक
खबरदार और बहा दुर बन जाते हैं। इस प्रकार समुद्र के तुफान के

कारण मला हों की व हा दुरी व छती है और काम करने की मुक्ति
 आती है न था तू फा न सैं रि क ने ला म क ना ब व ना ना ड-ई आता है
 पर-तु जिस दे हा में म मु द शा-त होता है और न हों अरी तू फा
 न न ही आता व हा के म ना हो में है सी च तुरा द न ही होती । इस से
 समझ सकते है कि दुःख से भी आ द सी सु धर ते है और आ से
 व छते है, इस लिये दुःख से द न मत जाना व रं न जें से न के से
 दुःख से भी कु छ ला न उ ठा ना सी खता चाहिये ।

जो रा ज्य सर ह द पर होता है और जिस को दूसरे रा ज्यो से न
 र वार ल डा हुं कर ती प डती है उस रा ज्य के सि पा ही व डे न छ डर हो
 ते है और व हा की प्र जा में कु छ बि हो म जा गृ ति न भा ते ज सि ता
 और उ ग्र ता होती है । इस के बि रु द्र जो रा ज्य व हुता नि ए व द है और
 राजि खेल डा हुं का डर न ही है उस रा ज्य के सि पा ही कम जो र होते
 है, इस रा ज्य के अ नु सर हो की न होते है और इस रा ज्य की प्र जा
 में रु क प्र कार की खा स ति र्बल ता होती है न था उस रा ज्य का
 का नू त ठी ला सी ला और वे द म होता है । इस से समझ सकते
 है कि दुःख से म तु अ की च तुरा द व छती है, दुःख से न की न की मु
 कि या मू झ ती है, दुःख से व हा दू री व छती है और दुःख से म तु
 व्य ष र गृ ह स्त्री में त था इस ज ग त में आ गे व छ सकते है । इस लि
 ये सा द र ख ता कि दुःख को ह म इस स म य जित ना ख र न ल म
 झ ते है उ न ता य ह ख र व न ही है व रं न व ह ह में आ गे व छाने में
 न द द गार है । सो दुःख से भी कु छ सु ख ले ना सी खता चाहिये ।

जिन व्या पारियों को न छ ड परी कर ती प डती है, जिन व्या
 पारियों को व्या पा र च ला ना प डता है जिन व्या पारियों को न छ ड
 ना है जो के बी च में काम करना प डता है और जिन व्या पा
 की च तुरा द जा न ते योग्य होती है उन व्या पारियों की
 म झने योग्य होती है और उन का ठं ग न क ल करने योग्य है
 इस के बि रु द्र जिन व्या पारियों को किसी तरह का सा द
 दि खा ना प डता जिन व्या पारियों को जो खो अरि उ थ ल पु
 रने वाली ओ से जा न न ही दे ना प डता, जिन व्या पारियों

उपासना विषय में किया जायगा ।

११ - (प्रश्न) मित्रादिनामों से सरवा और इन्द्रादि देवों के प्रसिद्ध व्यक्तियों को देखने से इन्हीं का ग्रहण करना चाहिये ।

(उत्तर) यह हाइना का ग्रहण करना योग्य नहीं क्योंकि जो मनुष्य किसी का मित्र है वही अन्य का शत्रु और किसी से उदासीन भी देखने में आता है । इससे मनुष्यों में सरवा आदि का ग्रहण नहीं हो सकता । किन्तु जैसा परमेश्वर सब जगत् का निश्चित मित्र, न किसी का शत्रु और न किसी से उदासीन है, इससे भिन्न कोई भी जीव इस प्रकार का कभी नहीं हो सकता । इस लिये परमात्मा ही का ग्रहण यहाँ होता है । हां, गौरा अर्थ में मित्रादि शब्दों से सुहृदादि मनुष्यों का ग्रहण होता है ।

१२ - 'मित्रिदास्नेहने, इस धातु से औराणदिक, 'कू' प्रत्यय के होने से 'मित्र' शब्द सिद्ध होता है । 'मेघतिस्त्रिह्य' तिस्त्रिह्यते वासमित्रः । जो सब से स्नेह करके और सब को प्रीतिकरने योग्य है इससे उस परमेश्वर का नाम 'मित्र' है । वृषभ्वररो, 'वर' इ प्रथम, इस धातुओं से उनादि 'उनर' प्रत्यय होने से 'वरुन' शब्द सिद्ध होता है । यः सर्वार्थ शिक्षा नृमुमुक्षुन्धर्मात्मनो वृणोत्यथवायः शिष्ये मुमुक्षुभिर्विद्यते वर्धते वा सवरुणः परमेश्वरः । जो आत्मयोगी, विद्वान्, मुक्तिकी इच्छा करने वाले मुक्त और धर्मात्माओं का स्वीकार करता, अथवा जो शिष्य, मुमुक्षु, मुक्त और धर्मात्माओं से ग्रहण किया जाता है वह हृदय 'वरुण' संज्ञक है । अथवा 'वरुणो नाम वरः श्रेष्ठः । जिस लिये परमेश्वर सब से श्रेष्ठ है इस लिये उसका नाम 'वरुण' है । ऋगति प्रापयः । इस धातु से 'वृत्' प्रत्यय करने से 'अर्थ' शब्द सिद्ध होता है और 'अर्थ' पूर्वक 'मा' इ प्राप्ते से, इस धातु से 'कानि' प्रत्यय होने से 'अर्थमा' सर्व सिद्ध होता है । 'को' इ प्राप्ते स्वामिनो न्याय । धीमान् मिमीते मान्यारकरोति सोऽर्थमा । जो सत्यपाप के करने वाले मनुष्यों का मान्य और पाप नष्टापुष्ट कर देने वालों को पाप और पुराण के फलों का सञ्चालन २ नियम करता है इसी से उसी परमेश्वर

राप

१०

धातुसे 'वृत्' प्रत्यय करने से 'अर्थ' शब्द सिद्ध होता है और 'अर्थ' पूर्वक 'मा' इ-मा' होने से 'इस धातु से 'का' निर-
प्रत्यय होने से 'अर्थ' मा 'सर्व' सिद्ध होता है। 'जो' 'ऽ' चार
स्वामिने न्याय। मीमांसा मिमीते मान्यार करेति सो ऽ
र्थमा ॥ जो सत्यवाय के करने हारे मनुष्यों का मान्य ओ
र पाप न था पुत्र करने वालों को पाप और पुराण के क
लो का सभावात्मन्य २ नियम करता है इसी से उसी परमेश्वर
का नाम 'अर्थ' मा 'है। इति परमेश्वर्ये' इस धातु से 'र' प्रत्य
य करने से 'इ-द्र' शब्द सिद्ध होता है। ये इन्द्रति परमेश्वर्य वा
र भवति स इन्द्रः परमेश्वरः। जो अखिल है श्वर्य युक्त है इस
से उस परमात्मा का नाम 'इ-द्र' है। 'वृहत्' शब्द पूर्वक 'वा
रक्षणे' इस धातु से 'ऽति' प्रत्यय, वृहत् के तकार का ह्रोप
और सुरा में होने से 'वृहस्पति' शब्द सिद्ध होता है। यो वृहता
मा का शांतिनां पतिः स्वामिपाल इता स वृहः स्पतिः।
जो वृहत् से भी बड़ा और बड़े आशा दिव्य ब्रह्मा शब्द का स्वामी
है इससे उस परमेश्वर का नाम 'वृहस्पति' है। 'विष्णु' वा
प्री' इस धातु से 'वृ' प्रत्यय होकर 'विष्णु' शब्द सिद्ध हो
आ है। 'वैवेक्षि' वा प्रीति चरा ऽ चरं जगत् स विष्णुः। 'च
र' और 'अचर' रूप जगत् में व्यापक होने से परमात्मा का ना
म 'विष्णु' है। 'ऽर्म' धातु क्रमः परा क्रमो यस्य स ऽरु क्रमः। 'अ
नन्त' पर क्रम युक्त होने से परमात्मा का नाम 'ऽरु क्रम' है।

१३ - जो परमात्मा (ऽरु क्रमः) महापरा क्रम युक्त (मि
त्रः) सब का सुहृत् अविरोधी है वह (शम) सुख कारक व
ह (वसुधा) सर्वोत्तिम, वह (शम) सुख स्वरूप, वह (अर्थमा)
न्यायाधिपति, वह (शम) सकल है श्वर्य दायक, वह (वृहस्प
तिः) सब का अधिष्ठाता (शम) विद्या प्रद और (विष्णुः)
जो सब में व्यापक परमेश्वर है वह (नः) हमारा कल्याण
कारक (भवतु) हो।

(वायोत्यप्रहृणो नमो ऽस्तु) 'वृहवृहि वृद्धौ' इस धातु
ओं से 'वृह' शब्द सिद्ध होता है। जो सब के ऊपर विराजमा
न, सब से बड़ा, अनन्त बल युक्त परमात्मा है उस ब्रह्म को
हम नमस्कार करते हैं। हे परमेश्वर। (त्वमेव प्रत्यक्षं ब्र

(आसि) आप ही अन्तर्यामि रूप से प्रत्यक्ष प्रह्लाद हो। (त्वा
 मेव प्रत्यक्षं ब्रह्म वदिष्यामि) मैं आप ही को प्रत्यक्ष प्रह्लाद
 कहूंगा क्यों कि आप सब जगद् में व्याप्त हो के सब को नित्य
 ही प्राप्ति देते। (ऋतं वदिष्यामि) जो आप कि वेद लक्ष्य वचा
 र्थ आजा है उसी का मैं सब को ही वे उपदेश और आचर
 ण भी करूंगा। (सत्यं वदिष्यामि) सत्य बोलूँ, सत्य प्रा
 तुँ और सत्य ही करूंगा (तन्मा भवतु) सो आप मेरी रक्षा
 कीजिए। (तद्वक्तारमवतु) सो आप मुझ आत्मा पर सत्य व
 क्त की रक्षा कीजिए कि जिससे आप की आज्ञा में मेरी
 पुष्टि स्थिर होकर विलुप्त कभी न हो। क्यों कि जो आप
 की आज्ञा है वही धर्म और जो उससे विलुप्त वही अधर्म
 है। (अवतु मा भवतु वक्तारम्) वह दूसरी वार पाठ अ
 धि कार्थ के लिये है। जैसे - कश्चित् कश्चित् प्रतिवद
 तित्वां ग्रामं गच्छ गच्छ। 'इसमें दो बार क्रिया के उच्चार
 ण से तू ही ग्राम को जा सके सिद्ध होता है। ऐसे
 ही यहां कि आप मेरी अनवर रक्षा करो अर्थात् धर्म से
 सुनिश्चित अधर्म से छूटा सदा करूँ दे सी कृपा मुझ पर
 कीजिए, मैं आपका बड़ा उपकार मानूंगा।

११

१४ - (ओ ३म् मु शान्तिः शान्तिः शान्तिः) इसमें तीन वा
 र शान्ति पाठ का वह प्रयोजन है कि त्रिविध ताप, अर्थात्
 तृप्त संसार में तीन प्रकार के दुःख हैं, एक आध्यात्मिक
 जो आत्मा शरीर में अविद्या, राग, द्वेष, मूर्खता, और ज्वर
 पीडा दिहते हैं। दूसरा 'आधिभौतिक' जो शत्रु, व्या
 धि और संपादि से प्राप्त होता है। तीसरा 'आधिदैविक'
 अर्थात् जो अति वृद्धि, अति शीत, अति उष्णता म
 न और इन्द्रियों की अशान्ति से होता है। इस तीन प्रकार
 के दुःखों से आप हम लोगों को दूर कर के कल्याण कारक
 कर्मों में सदा प्रवृत्त रखिये। क्यों कि आप ही कल्याण
 स्वरूप सब संसार के कल्याण करता और धार्मिक मुमुक्षु
 ओं को कल्याण के दाता है। इस लिये आप स्वयं अपरि कल
 ण से सब जीवों के हृदयों में प्रकाशित हूँ जिसे कि जिससे स
 ब जीव नित्य -

न और इन्द्रियो की अशांति से होता है। हम तीन प्रकार
के ब्रह्म से आप हम लोगो को दूर कर के कल्याणकारक
कर्मों से सदा प्रवृत्त रखिये। क्योंकि आप ही कल्याण
स्वरूप सब सार के कल्याणकर्ता और धार्मिक मुमुक्षु
ओं को कल्याण के दाता है। इसलिये आप स्वयं अपरिचर
णा से सब जीवों के हृदयों में प्रकाशित हूँ जिये कि जिससे स
ब जीव धर्म का आचरण और धर्म को दौड़ के परमानन्द को
प्राप्त हो और दुःखों से मुक्त रहें।

१५ - 'सूर्य आत्मा जगत् सत्स्युषश्च' इस यजुर्वेद [२
१४२] के वचन से जो जगत् नाम प्राणी चेतन और जंगम जन्म
रगो चलते फिरते हैं (तस्युषः) अप्राणी अर्थात् स्थावर, न
इ अर्थात् पृथिवी आदि हैं उन सब के आत्मा होने और स्वप्न
काश करने से परमेश्वर का नाम 'सूर्य' है। अतः सतस्य ज
मते' इसा धातु से 'आत्मा' शब्द सिद्ध होता है। जो सतिव्या
प्नोति स आत्मा। जो सब जीवादि जगत् में निरन्तर व्याप
क हो रहा है। परमात्मा वात्मा च य आत्मन् जो जीवेभ्यः सू
क्ष्मेभ्यः परेऽतिसूक्ष्मः स परमात्मा। जो सब जीव आदि
से इन्द्रिय और जीव प्रकृति तथा आकाश से भी अतिसूक्ष्म
और सब जीवों का अन्तर्गामी आत्मा है इससे ईश्वर का नाम
'परमात्मा' है। सामर्थ्य वाले वाले का नाम ईश्वर है। य ईश्वरे
षु समर्थे उपरमः श्रेष्ठः स परमेश्वरः। जो ईश्वरों अर्थात् स
मर्थों में समर्थ, जिसके तुल्य कोई भी न हो इसका नाम 'परमेश्व
र' है। पुन्रभिषवे पुङ् प्राणि गर्भविमोचने इन्द्रा धातु ओ से
'सविता' शब्द सिद्ध होता है। अभिषवः प्राणि गर्भविमोचनम्
चोत्पादनम् यश्चरचरं जगत् सुनोति सूते चोत्पादयति स स
विता परमेश्वरः। जो सब जगत् की उत्पत्ति करता है इसलिये
परमेश्वर का नाम 'सविता' है। दिवुकुशविजिगीषा व्यवहार
धुतिलुतिमोदमदस्य प्रकाशति गतिषु' इस धातु से 'देव' श
ब्द सिद्ध होता है। (कीडा) जो सुद्ध जगत् को कीडा करने, (वि
जिगीषा) धार्मिकों को जिता देने की इच्छा युक्त, (व्यवहार)
सब चेष्टा के साधनोपसाधनों का दाता, (धुति) स्वयं प्रका
श स्वरूप, ईश्वर का प्रकाशक, (सुति) प्रशंसा के योग्य, (मोद)

५३

मन्त्रज्ञानं मुक्तये तो धृतिश्च यज्ज्योतिरन्तरं मृतं प्रजासु ।
 यस्मान्न नरते किंचन कर्म क्रियते तन्ममनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥५॥
 येनेदं भुज्भुवनं भविष्यत्यरिं गृही तममृतेन सर्वम् ।
 येनं यज्ज्ञास्यते सुप्रहोता तन्ममनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥६॥
 यस्मिन्मृत्युः सामयन्तुं ध्येयस्मिन्प्रातिदिशितारथता भाविवारः ।
 यस्मिन्मृतिर्न ध्युं सर्वमोतं प्रजातां तन्ममनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥७॥
 सुभारथिरन्ध्रानिव सन्मनुष्यान्नेनीयते ऽभीष्टुमिर्विजितऽहम् ।
 हृत्प्रतिष्ठां यदेति रंजयिषुं तन्ममनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥८॥
 यजु० ॥ अ० ३४ । मं० १, २, ३, ४, ५, ६ ॥

हेअग्ने । अर्थात् प्रकाशस्वरूप परमेश्वर । आप कृपा से जि
 स बुद्धि की उपासना विद्वान्, ज्ञानी और योगी लोग करते हैं उसी
 बुद्धि से युक्त हमको इसी वलमान समझ में बुद्धि मार आप की जि
 य ॥१॥ आप प्रकाशस्वरूप हैं, कृपा कर मुझमें भी प्रकाश स्थापन
 कीजिये । आप अन्त पर कम युक्त हैं इस लिये मुझमें भी कृपा
 करण से पूर्ण पर कम धरिये । आप अन्त वल युक्त हैं [इस
 लिये] मुझमें भी वलधारण कीजिये । आप अन्त सामर्थ्य युक्त
 हैं इस लिये मुझको भी पूर्ण सामर्थ्य दीजिये । आप दुष्ट कामों
 र दुष्टो पर क्रोध का री हैं । मुझको भी वैसा ही कीजिये । आपने
 दा, लुति और स्व अपराधियों का संहन करने वाले हैं, कृपा से मु
 झको भी वैसा ही कीजिये ॥२॥ हे दयानिधे । आप की कृपा से मेरा
 मन जागते में दूर र जाता, दिव्य गुण युक्त रहता है और वही सोते
 इस मेरा मन सुषुप्ति को प्राप्त होता वा स्वप्न में दूर र जाने के समान
 व्यवहार करता, सब प्रकार का प्रकाश कर, सकवद मेरा मन शि
 व सङ्कल्प अर्थात् अपने और मेरे प्राणियों के अर्थ कल्याण का स
 ङ्कल्प करने हारा होवे । किसी की हानि करने का इच्छा युक्त कभी
 न होवे ॥३॥ हे सर्वान्तर्यामी । जिस से कर्म करने हारे धर्म युक्त वि
 द्वात लोग मज्ञा और युद्धादि से कर्म करते हैं जो अपूर्व सामर्थ्य यु
 क्त, पूजनीय और प्रजा के भीतर रहने वाला है वह मेरा मन धर्म
 करने की इच्छा युक्त होकर धर्म को सर्वथा छोड़ देवे ॥४॥ जो इन्द्र
 व जात और दसरे को चिताने हारा निध्यात्म कवृत्ति है और जो
 प्रजाओं में भीतर प्रकाश युक्त और नाश राहण है, जिस का पनास
 देव समस्त सृष्टि गुणों की इच्छा करके

कल्प करेगा। हा व ॥ कला का हा न करने का इच्छा युक्त कला
 न होवे ॥ ३ ॥ हे सर्वान्तर्यामी। जिस से कर्म करने हारे धर्म युक्त वि
 दान लोग मग्न और युद्धादि में कर्म करते हैं जो अपूर्व सामर्थ्य यु
 क्त, पूजनीय और प्रजा के भीतर रहने वाला है वह हमें राम धर्म
 करने की इच्छा युक्त हो कर धर्म को सर्वथा छोड़ देवे ॥ ४ ॥ जो इन्द्र
 के ज्ञान और दूसरे को चिताने हारे विध्यमात्मक वृत्ति हैं और जो
 प्रजाओं में भीतर प्रकाश युक्त और नाश रहित हैं, जिसके बिना कोई
 इन्द्र भी कर्म नहीं कर सका वह हमें राम धर्म युक्त गुरुओं की इच्छा करके
 दुष्ट गुरुओं से पृथक् करे ॥ ५ ॥ हे जगदिश्वर जिससे सब योगी लोग
 इन सब भुत, भविष्यत्, वर्तमान व्यवहारों को जानते, जो नाश रहित
 जीवात्मा को परमात्मा के साथ मिल के सब प्रकार विकल ज्ञा करता
 है, जिसमें ज्ञान और क्रिया हैं, पांच ज्ञानेन्द्रिय बुद्धि और आत्मा
 युक्त रहता है, इस योग रूप यज्ञ को जिससे बढाते हैं वह हमें राम
 योग विज्ञान युक्त हो कर अविद्यादि के शो से पृथक् करे ॥ ६ ॥ हे
 परम विद्वान् परमेश्वर। आपकी कृपा से मेरे मन में जैसे रथ के मध्य
 धुरा में आग लगे रहते हैं वे जैसे ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और जिस
 में अथर्ववेद भी प्रतिष्ठित होता है और जिसमें सर्वज्ञ, सर्वव्याप
 क प्रजा का साक्षी चित्त चेतन विदित होता है वह हमें राम धर्म अविद्या
 का अभाव कर विद्या प्रिय सदा रहे ॥ ७ ॥ हे सर्वनिष्पन्ता ईश्वर।
 जो मेरे मन रस्सी से छोड़ो के समान अथवा छोड़ो के निष्पन्ता सार
 थी के मुख्य मनुष्यों को अल्पन्त इधर उधर डलाता है, जो हृदय में
 प्रतिष्ठित, गति मार और अल्पन्त वेग पाला है वह हमें राम धर्म सब इ
 न्द्रियों को अधर्मावरण से रोक के धर्म पथ में सदा चलाया करे
 सी कृपा मुझ पर की जिस ॥ ८ ॥

१५८

अग्ने नमो सुप्रभो राये अस्मार् विश्वानि देव वयुनो निविद्वान्।
 युजो ध्युस्मग्नुं हरुता मे नो श्रियं वां ते नमोऽकिं विधेम ॥

प्रनु० ॥ अ० ४०। मं० १६ ॥

हे सूर्य के दाता, स्वप्रकाश स्वरूप, सब को जानने हारे परमात्म
 र आप हमको श्रेष्ठ मार्ग से सम्पूर्ण प्रजानों को प्राप्ति कर ईश्वर और
 हममें कुटिल पापाचरण रूप मार्ग है इससे पृथक् की जिस
 इसी लिये हम लोग नम्रता पूर्वक आपकी बहुत सी स्तुति करते हैं
 कि आप हमको पवित्र करें।

मानो मृदन्ते मुतमानोऽभिकं मानुऽक्षन्त मुतमानोऽक्षितम्।
 मानो वधीः पितरं मोत मानरं मानं प्रियास्मन्मोहदरीरेषम्

प्रनु० ॥ अ० १६। मं० १५ ॥

112
इहं । (दुखो को पाप के दुःख स्वरूप फूल को दे के सुलाने वा
ले परमेश्वर) आप हमारे दो टे बडे जन, गर्भ, माता, पिता औ
र प्रिय बन्धु वर्जन भाहारी रो को हनन करने सरे के लिये प्रेरि
त मत कीजिये मे मार्ग से हम को चलाइये जिससे हम आप
के दर्राडनी मन हों ।

असतो मा सद्गमय तमसो मा ज्योतिर्गमय मृत्योर्मा ऽमृतं ग
मयेति ॥ शतपथब्रा० [१४।३।१।३०]

हि
परा
१५६
इ परमगुरे परमात्मा । आप हम को असत् मार्ग से पृथक क
र सत् मार्ग में प्राप्ति कीजिये । अविद्या धकार को धूँ के विघ्न रूप
सुर्य को प्राप्ति कीजिये । और मृत्यु रोग से पृथक कर के मोक्ष के
आनन्द रूप अमृत को प्राप्ति कीजिये । अर्थात् जिस २ दोष वा दु
र्गुण से परमेश्वर और अपने को भी पृथक् मान के परमेश्वर की
प्रार्थना की जाती है वह विधी निषेध मुख होने से सगुण, निर्गु
ण प्रार्थना । जो मनुष्य जिस बात की प्रार्थना करता है उस को वै
सा ही वर्तमान करना चाहिये अर्थात् जैसे सर्वोत्तम उज्ज्वि की
प्राप्ति के लिये परमेश्वर की प्रार्थना करे, उस के लिये जितना
अपने से प्रयत्न हो सके उतना किया करे । अर्थात् अपने
पुरुषार्थ के उपाय प्रार्थना करनी योग्य है । ऐसी प्रार्थना क
भी न करनी चाहिये और न परमेश्वर को स्वीकार करना है
कि जैसे हे परमेश्वर । आप मेरे शत्रुओं का नाश, मुझ को स
ब से बड़ा, मेरे ही प्रतिष्ठा और मेरे आधीन सब हो जायँ इत्या
दि, क्योंकि जब दो नो शत्रु एक दुसरे के नाश के लिये प्रार्थना
करें तो क्या परमेश्वर दोनों का नाश कर दे १ जो कोई कहें कि
जिस का प्रेम अधिक उस की प्रार्थना सफल हो जावे तम हम कह सकते
हैं कि जिस का प्रेम न्यून हो उसके शत्रु का भी न्यून नाश होना चाहि
ये । ऐसी प्रार्थना की प्रार्थना करते २ कोई ऐसी भी प्रार्थना करेगा
हे परमेश्वर । आप हम को रोख बना कर खिलाइये, मेरे मन में
झाड़ लगाइये, बन्धनो दीजिये और खेती वाड़ी भी कीजिये । इस
प्रकार जो परमेश्वर के भरोसे आलसी होकर बैठे रहते वे सदा मूर्ख
हैं, क्योंकि जो परमेश्वर की पुरुषार्थ करने की आज्ञा है उस की जो कोई
तोड़ेगा वह सुख कभी न ही पावेगा । जैसे —

है परमेश्वर। आप इसको रोख बना कर खिला देंगे, जैसे मकान में
झाड़ लगा दें, वस्त्र धो दीजिये और खेती बाड़ी भी कीजिये। इस
प्रकार जो परमेश्वर के भरोसे आलसी होकर बैठे रहते वे महासूख
हैं, क्योंकि जो परमेश्वर की पुरुषार्थ करने की आज्ञा है उस की जो कोई
तोड़ेगा वह सुख कभी नहीं पावेगा। जैसे —

कुर्वन्ने वेह कर्माणि जिजीविषे च्छतं संसृजः।

यजु०॥ अ० ४०। मं० २॥

परमेश्वर आज्ञा देता है कि मनुष्य सौ वर्ष पर्यन्त अर्थात् जब तक
जीवे तब तक कर्म करता हुआ जाने की इच्छा करे, आलसी कभी न हो
देखो सृष्टि के बीच में जितने प्राणी अथवा अप्राणी हैं वे सब अपने २
कर्म और यत्न करते ही रहते हैं। जैसे पिपीलिका आदि सदा प्रयत्न
करते, पृथिवी आदि सदा घूमते और वृक्ष आदि सदा बढ़ते बढ़ते
रहते हैं वे सब यह दृष्टान्त मनुष्यों को भी ग्रहण करना योग्य है। जैसे
पुरुषार्थ करते हुए पुरुष का सहाय दूसरा भी करता है वे धर्म से पुरुष
पार्थ पुरुष का सहाय ईश्वर भी करता है। जैसे काम करने वाले पुरुष
को श्रुत्य करते हैं और अन्य आलसी को नहीं, देखने की इच्छा क
रने और नेत्र वाले को दिखलाते हैं अन्धे को नहीं, इसी प्रकार प
रमेश्वर भी सब के उपकार करने की प्रार्थना में सहायक होता है हा
निका एक कर्म में नहीं। जो कोई 'गुड मीठा है' ऐसा कहता है उस
को गुड प्राप्त वा उसको स्वाद प्राप्त कभी नहीं होता और जो यत्न
करता है उसको ही घंवा विलम्ब से गुड मिल ही जाता है।

११ — अवतीसरी उपासना —

समाधिनिर्धूतमलस्य चेतसो निवेशितस्यात्मनियत्सुखं भवेत्।
न संभवते वर्णयितुं गिरातदाह्वयंतदन्तः करणेन गृह्यते ॥

यह उपनिषद् का वचन है। जिस पुरुष के समाधियोग से आवे
घादि मल नष्ट होगये हैं, आत्मस्थ होकर परमात्मा में चित्त जिस
ने लगाया है, उसको जो परमात्मा के योग का सुख होता है वह वाणी
से कहानही जा सकता क्योंकि उस आनन्द को जीवात्मा अपने अ
न्तःकरण से ग्रहण करता है। उपासना शब्द का अर्थ समीपस्थ
होना है। अस्वांग योग से परमात्मा के समीपस्थ होने और उस
को सर्व व्यापी, सर्व नरूपामी रूप से प्रत्यक्ष करने के लिये जो २

काम करना होता है व इस सब करना चाहिये, अर्थात् —
तत्राऽहिंसा सत्या ~~अ~~स्तेय ब्रह्मचर्या परिग्रहा यमाः

[साधन पादे। सू० ३०।

इत्यादि शत्रुपात अल योग शास्त्र के हैं। जो उपासना का आरंभ
करना चाहे उसके लिये यही आरंभ है कि वह किसी से बैर न रखे,
सर्वदा सब से प्रीति करे, सत्य बोले, मिथ्या कभी न बोले, चोरी न क
रे, सत्य व्यवहार करे, जितेन्द्रिय हो, लज्जित हो और निरभिप्रायी
हो, अभिप्राय कभी न करे ये पांच प्रकार के यम मिल के उपासना
योग का प्रथम अङ्ग है।

शौच सन्तोष तपः स्वाध्यायेश्वरप्राणिधाना नि नियमाः ॥

योग सू० [साधन पादे। सू० ३१॥

राग द्वेष दोऽभीतर और जलादि सेवा हरपविचरहे, धर्म से पुरुषार्
थ करने से लग्न में न प्रसन्नता और हा नि में न अप्रसन्नता को, प्रसन्न हो
कर आलस्य छोड़ सदा पुरुषार्थ किया करे, सदा दुःख सुखों का सहन
और धर्म ही का अनुष्ठान करे अधर्म का नहीं। सर्वदा सत्य शास्त्रों को
पढ़े पढ़ावे, सत्पुरुषों का संग करे, और 'ओ ३म्' इस एक परमात्मा
के नाम का अर्थ विचार कर निरन्तर प्रतिजप किया करे। अपने आत्मा
को परमेश्वर की आज्ञा तुकूल समर्पित कर देवे। इन पांच प्रकार के
नियमों को मिला के उपासना योग का दूसरा अङ्ग कहता है। इसके आ
गे द्वाः अङ्ग योग शास्त्र ब्रह्म वेदादि भाष्य भूमिका * में देख लेवें। ज
ब उपासना करना चाहे तब एकान्त शुद्ध देश में जाकर, आसन ल
गा, प्राणायाम करवा ह्रविषयो से इन्द्रियो को रोके, मन को नाभि
प्रदेश में बाँध दम, कण्ठ, नेत्र, शिरा अथवा पीठ के मध्य होइ में
किसी स्थान पर स्थिर कर अपने आत्मा और परमात्मा का विवेचन
करके परमात्मा में मग्न हो जाने से संयमी होवें। जब इन साधनों
को करता है तब उसका आत्मा और अन्तःकरण पवित्र होकर सत्य
से पूर्ण हो जाता है। नित्य प्रतिज्ञान विज्ञान पढाकर मुक्ति तक

२०९

* ब्रह्म वेदादि भाष्य भूमिका के उपासना विषय में इन कार्य शास्त्रों में
। स० दा०

पहुँच जाता है। जो ओठ प्रहरम एक घड़ी भरनी इस प्रकार ध्यान
करता है वह सदा उन्नति को प्राप्त हो जाता है। वहाँ सर्वज्ञादि गुरुओं के
साथ परमेश्वर की उपासना करनी संपूर्ण और द्वेष, रुच, रस, ग
न्ध, स्पर्श आदि गुरुओं से पृथक् मान अति सूक्ष्म आत्मा के नीतर बाह

से पूर्ण हो जाता है। निज प्रीतिमाना विनाश
 * कृष्णदादि भाष्य भूमिका के उपासना विषय में इन कार्वण न के
 । स० दा०

पहुँच जाता है। जो अठि प्रहर में एक घड़ी भर भी इस प्रकार ध्यान
 करता है वह इस दांति को प्राप्त हो जाता है। वहाँ सर्व आदि गुरुओं के
 साथ परमेश्वर की उपासना करनी सपुण्य और देव, रुद्र, रस, ग
 न्ध, स्थितिदि गुरुओं से पृथक् मान अति सूक्ष्म आत्मा के नीतर बाह
 र व्यापक परमेश्वर में डूब स्थित हो जाना त्रिगुणोपासना कहती है।

१२ - इस का फल - जैसे शीत से आतुर पुरुष का अग्नि के पास
 जाने से शीत निवृत्त हो जाता है वैसे परमेश्वर के समीप प्राप्त होने से
 सब दोष दुःख छुटकर परमेश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव के सदृश जीवा
 त्मा के गुण, कर्म, स्वभाव पवित्र हो जाते हैं। इस लिये परमेश्वर की स्तु
 ति, प्रार्थना और उपासना अवश्य करनी चाहिये। इससे इस का फल
 पृथक् होगा। परन्तु आत्मा का बल इतना बढ़ेगा वह पर्वत के समान दुः
 ख प्राप्त होने पर भी न झुकवेगा और सब को सहन कर सकेगा। का
 य दृष्ट हो जावे १ और जो परमेश्वर की स्तुति प्रार्थना और उपासना
 नहीं करता वह कुत घ्न और महा मूर्ख भी होता है क्योंकि जिस परमा
 त्मा ने इस नगत्त के सब पदार्थ जीवों को सुख के लिये दे रखे हैं उस
 का गुण भुल जाना, इच्छा ही को न मानना कुत ता और मूर्खता है १
 १३ - (प्रश्न) जब परमेश्वर के श्रोत्र ने आदि इन्द्रियां नहीं हैं फिर
 वह इन्द्रियों का काम कैसे कर सकता है १

(उत्तर) -

अपाणिपादो जवतो ग्रहीता पश्यत्य चक्षुः सहृणोत्यकर्णः।
 सवेत्ति विश्वं न च तस्यास्ति वेत्ता तमाहुरज्यं पुरुषं पुराणम्॥
 [चेताश्चतरेऽपनिषद्। अ० ३। मं १६]।

यह उपनिषद् का वचन है। परमेश्वर के हाथ नहीं, परन्तु अपनी श
 क्ति रूप हाथ से सब का रचन, ग्रहण करता, पग नहीं परन्तु व्यापक हो
 न से सब से अधिक वेगवाह, चक्षु का गोल कनहीं परन्तु सब को ज्ञात
 र देखता, श्रोत्र नहीं तथापि सब की बातें सुनता, अन्तः करण नहीं पर
 न्तु सब जगत् को जानता है और उसको अवधि सहित जानने वाला कोई
 भी नहीं। उसी के समान तन, सब से श्रेष्ठ, सब में पूर्ण होने से 'पुरुष' कह
 ते हैं। वह इन्द्रियों और अन्तःकरण से [होने वाले] काम अपने साम
 र्थ्य से करता है।

१४ - (प्रश्न) इसको बहुत से मतुव्य निष्क्रिय और निर्गुण कहते हैं

(उत्तर) -

न तस्य कार्यं करणं च विद्यते न तस्य च ह्यधिक इव दृश्यते ।
परस्य शक्तिर्विविधैव श्रूयते स्वाभाविकी न च बलक्रिया च ॥
[चेताश्चरत्तत्पनिषद् । अ० ६ । मं० ८]

यह उपनिषद् का वचन है । परमात्मा से कोई तद्रूप कार्य और उसको करण अर्थात् साधक न समझ सके अपेक्षित नहीं । न कोई उस के तुल्य और न अधिक है । सर्वोत्तम शक्ति अर्थात् जिसमें अनन्त ज्ञान, अनन्त बल और अनन्त क्रिया है वह स्वाभाविक अर्थात् सहज उसमें सुनी जाती है । जो परमेश्वर निष्क्रिय होता हो जगत् की उत्पत्ति, स्थिति, प्रलय न कर सकता । इस लिये वह विभूत वा निचेत न होने से उसमें क्रिया भी है ।

(प्रश्न) जब वह क्रिया करता होगा तब अन्त वाली क्रिया होती होगी वा अनन्त ?

(उत्तर) जिसने देशकाल में क्रिया करनी उचित समझता है उसने ही देशकाल में क्रिया करता है । न अधिक, न न्यून, क्योंकि वह विद्वान् है ।

१५ - (प्रश्न) परमेश्वर अपना अन्त जानता है वा नहीं ?

(उत्तर) परमात्मा पूर्ण ज्ञानी है क्योंकि ज्ञान उसको कहते हैं कि जिस से ज्यों का त्यों जाना जाय अर्थात् जो पदार्थ जिस प्रकार का हो उसको उसी प्रकार जानने का नाम जान है । जब परमेश्वर अनन्त है तो अपने को अनन्त ही जानता जान, उससे विरुद्ध अज्ञान अर्थात् अनन्त को सान्त और सान्त को अनन्त जानना भ्रम कहता है । यथार्थ दर्शन मूल्य मिति, जिसका जैसा गुण कर्म स्वभाव हो उस पदार्थ को वैसा ही जान कर मानना ही जान और विज्ञान कहता है, [इसमें] उलट अज्ञान । इस लिये —

कस्ते शो कर्म विपाकाशये र परा लब्धः पुरुष विशेष ईश्वरः ।
योगसू० [समाधिपादे । सू० २४]

जो अविद्यादि क्लेश, कुशल, अकुशल, दुःख, अनिष्ट, और मिश्र फलदायक कर्मा की वासना से रहित है वह सब जीवों से विशेष ईश्वर कहलाता है ।

१६ - (प्रश्न) ईश्वर सिद्धेः ॥ १ ॥ [सां० अ० १ । सू० १२]

प्रमाराणां भावान्ततः सिद्धिः ॥ २ ॥ [सां० अ० ५ । सू० १०]
सम्बन्धभावाद्भावाद्भावात् ॥ ३ ॥ सांख्यसू० [अ० ५ । सू० ११]

प्रत्यक्ष से ग्रहण करके ईश्वर की सिद्धि नहीं होती ॥ १ ॥ क्योंकि जब उसकी सिद्धि में प्रत्यक्ष ही नहीं तो अनुमानादि प्रमाण नहीं हो पायेंगे ॥ २ ॥ और भावादि सम्बन्धों से भी अनुमान नहीं हो

२०३

१६- (प्रश्न) ईश्वर लिखे : ॥ १ ॥ [सां० अ० १। सू० १२]

सम्बन्ध भावा नानुमानम् ॥ ३ ॥ सांख्य सू० [अ० ५। सू० ११]

प्रत्यक्ष से घट सकने ईश्वर की सिद्धि नहीं होती ॥ १ ॥ क्योंकि जब उसकी सिद्धि में प्रत्यक्ष ही नहीं तो अनुमानादि प्रमाण ही हो सकता ॥ २ ॥ और व्याप्तिसम्बन्ध होने से अनुमान भी नहीं हो सकता। पुनः प्रत्यक्ष अनुमान केन होने से शब्द प्रमाण आदि भी नहीं घट सकते। इस कारण ईश्वर की सिद्धि नहीं हो सकती ॥ ३ ॥

(उत्तर) यहाँ ईश्वर की सिद्धि में प्रत्यक्ष प्रमाण नहीं है। और ईश्वर जगत् का उपादान करता है। और पुरुष से मिल कर अर्थात् सर्वत्र पूर्ण होने से परमात्मा का नाम पुरुष, और शरीर में साधन करने से जीव का भी नाम पुरुष है, क्योंकि इसी प्रकार में कहा है—

प्रधानशक्तिर्योगाच्चेत्सङ्गापत्तिः ॥ १ ॥

सत्तामात्राच्चेत्सर्वैश्वर्यम् ॥ २ ॥

श्रुतिरपि प्रधानकार्यत्वस्य ॥ ३ ॥

सांख्य सू०—

[अ० ५। सू० ८, ९, १२]

यदि पुरुष को प्रधानशक्ति का योग हो तो पुरुष में सङ्गापत्ति हो जाय अर्थात् जैसे प्रकृति सुक्ष्म से मिल कर कार्यरूप में सङ्गत हुई है वैसे परमेश्वर भी स्थूल हो जाय। इस लिये परमेश्वर जगत् का उपादान कारण नहीं किन्तु निमित्त कारण है ॥ १ ॥ जो चेतन से जगत् की उत्पत्ति हो तो जैसा परमेश्वर समग्रैश्वर्य युक्त है वैसे सांसार में भी सर्वैश्वर्य का योग होना चाहिये, सो नहीं है। इस लिये परमेश्वर जगत् का उपादान कारण नहीं किन्तु निमित्त कारण है ॥ २ ॥ क्योंकि उपनिषद् भी प्रधान ही को जगत् का उपादान कारण कहती है ॥ ३ ॥ जैसे—

अजामें कां लोहितशुक्लकुष्माण्वह्वी प्रजाः सृजमानां स्वरूपाः *।

यह ईवेता श्वतर उपनिषद् [अ० ४। म० ५] का वचन है जो जगत् अरहित सत्त्व, रज, तमोगुण रूप प्रकृति है वही स्वरूपा कारण से बहुत प्रजा रूप हो जाती है अर्थात् प्रकृति परिणामिनी होने से अवस्थान्तर हो जा

* 'स्वरूपाः' इति प्राप्तः पाठः।

ती है और पुरुष अपरिणामी होने से वह अवस्थान्तर होकर दूसरे रूप में कभी नहीं प्राप्त होता, सदा कुरुष्व निर्विकार रहता है। इस लिये जो कोई कपिलाचार्य को अनीश्वरवादी कहता है जानो वह अनीश्वरवादी है, कपिलाचार्य नहीं। तथा मीमांसाकाध